फलित ज्योतिष विज्ञान



फलित ज्योतिष विज्ञान

(ज्योतिष के फलित अंग पर प्रकाश डालने और फलित रूप में भविष्य सम्बन्धी निष्कर्ष व्यक्त करने वाली श्रेष्ठ पुस्तक)

●

लेखक :

श्री भारतीय योगी

रचयिता—भाग्य और आकृति विज्ञान; ज्योतिष और जन्म लग्न, वर्ष फल कैसे बनायें ? प्रश्न ज्योतिष विज्ञान, स्वप्न ज्योतिष विज्ञान, शकुन ज्योतिष विज्ञान, राशि ज्योतिष विज्ञान; सरल अङ्क ज्योतिष, जन्म कुण्डली (निर्माण और अध्ययन) आदि।

●

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, (वेदनगर) बरेली—२४३००३ (उ० प्र०)

फोन नं० ७४२४२

प्रकाशक :
डॉ० चमनलाल गौतम
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब वेदनगर
बरेली २४३००३ (उ० प्र०)
फोन : ७४२४२

□

लेखक : श्री भारतीय योगी

□

□

संशोधित संस्करण
१९८६

□

मुद्रक :
कान्ता प्रिंटिंग प्रेस
जनरल गंज, मथुरा

□

मूल्य :
छः रुपये मात्र

दो शब्द

ज्योतिष में फलित का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण, है क्योंकि फलित ने मानव जाति का बहुत उपकार किया है। संसार में आशा को प्राण माना जाता है, सभी प्राणी आशा के भरोसे जीवित रहते हैं। कभी-कभी देखते हैं कि निराशा हुआ तनुष्य प्राण देने तक पर उतारू हो जाते हैं। इस प्रकार निराश हुए व्यक्तियों द्वारा आत्मघात कर लेने की घटनाए समय-समय पर होती रही हैं।

यदि निराशा में आशा का संचार हो जाय तो आत्मघात की स्थिति से बचना बहुत सम्भव होता है। अनेक विचारकों का मत है कि एक किरण भी समय पर दिखाई दे गई होती तो शायद वे आत्मघात का विचार त्याग देता और यह निश्चय है कि एक बार वैसा विचार त्यागने पर पुनः शायद ही उत्पन्न होता. क्योंकि वैसी भावुकता क्षणिक होती है, जो दूर होने पर पुनः उतनी उग्र नहीं हो पाती।

फलित ज्योतिष सभी प्रकार की निराशाओं को क्षीण करके आशा का सचार करती है। कोई भी जातक, कैसी भी गम्भीर स्थिति में ज्योतिषी के पास जाकर फलित ज्योतिष सम्बन्धी निष्कर्ष देने का निवेदन करे अथवा स्वयं ही फलित ज्योतिष की पुस्तकों का अवलोकन करके निष्कर्ष निकालना चाहे तो उसे आशा का बहुत कुछ अस्तित्व दिखाई दे जायगा।

मनुष्य का भाग्य पत्ते से ढका हुआ है व्यक्त करने सम्बन्धी अनेक लोकोक्तियाँ आचार्यों ने भी 'पुरुषस्य भाग्यं, देवो न जानति' कह कर इसी की पुष्टि की है कि न जाने वह कब जाग उठे और मनुष्य को रंक से राजा (धनवान) बना दे। आज जो व्यक्ति पैसे-पैसे के लिए मारा-मारा दर-दर भटकता है, वह अच्छा समय आने पर कल ही लखपति

हो सकता है। विभिन्न सरकारों द्वारा चलायी जाने वाली लाटरियाँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। प्रत्येक लाटरी का ड्रा, प्रत्येक बार न जाने कितनों को लखपति तथा धनवान बना देता है।

यदि जीवन में निराश हुए व्यक्तियों को किसी प्रकार यह ज्ञान हो जाय कि उसकी लाटरी खुलने, उच्चपद पाने, अच्छी पत्नि मिलने या इच्छित सम्मान अथवा सन्तान आदि प्राप्त करने का योग उनकी कुण्डली में विद्यमान है तो उनकी निराशा बिल्कुल नहीं तो अस्थायी रूप से तो दूर हो ही सकती है। फिर उनके मन मस्तिष्क में आत्मघात का विचार उठने की संभावना प्रायः नहीं रहती।

और इस प्रकार का ज्ञान फलित ज्योतिष के द्वारा सरलता से होना सम्भव है। यदि जातक की जन्म कुण्डली ठीक बनी है अर्थात् जिस समय जातक उत्पन्न हुआ है, यह समय यदि घड़ी, पल, विपल (घण्टा, मिनट, सैकिण्ड) आदि की दृष्टि से बिल्कुल सही है तो फलित ज्योतिष उसके आधार पर सभी तथ्यों का पूरा ज्ञान करा देने में समर्थ होगी।

किन्तु प्रायः ऐसी पुस्तकों का अभाव ही है जो कि फलित के इन पहलुओं को स्पष्ट कर सकें। इसलिए इसकी विशेष आवश्यकता और माँग को देखते हुए हमने 'फलित ज्योतिष विज्ञान' के नाम से प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित करने का निश्चय किया। इसके लेखन कार्य में श्री नारायणहरि गुप्त बी. ए. से हमें पर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए आशा करते हैं कि ज्योतिष-प्रेमी पाठक इससे लाभ उठायेंगे।

—प्रकाशक

विषय-सूची

फलित ज्योतिष विज्ञान

राशि एवं भाव-विचार

ज्योतिष में फलित का महत्व

ज्योतिष शास्त्र के दो प्रमुख अंग हैं—गणित और फलित गणित को फलित का साधन माना जाता है, क्योंकि फलादेश निश्चित करने के लिए गणित से कार्य लेना होता है।

परन्तु ज्योतिष शास्त्र का मुख्य उद्देश्य फलित से ही पूर्ण होता है। फलित का ज्ञान हुए बिना ज्योतिष का कोई उपयुक्त लाभ नहीं हो सकता। इसीलिये विद्वानों ने फलित सम्बन्धी ज्ञान को अधिक सरल बनाने की दृष्टि से गणित को सूत्र रूप में अपनाया और अधिक चक्कर दार क्रिया को सभी के लिए सुलभ कर दिया।

इस प्रकार गणित वह क्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य के भाग्य का समूचा चित्र फलित के रूप में सामने आ जाता है। गणित साधन है तो फलित साध्य है, इसलिए मानव-जीवन में फलित का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

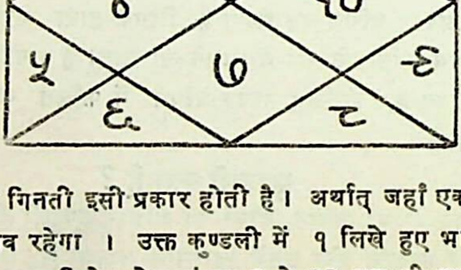
कुण्डली क्या है ?

गणित हो या फलित, दोनों का आधार कुण्डली ही है। आचार्यों ने मनुष्य को आकाश और उसमें विद्यमान नक्षत्रों से पूर्णतया प्रभावित स्वीकार किया है। इसलिए आकाश के प्रभावों से प्रभावित भाग्य का

अध्ययन करना आवश्यक समझ कर उन्होंने समूचे आकाश मण्डल को ३६० भागों में विभक्त करके अध्ययन की सरलतार्थ उसे पुन: १२ भागों में विभाजित कर दिया और एक राशि के ३० बिन्दु निश्चय किये। जिन १२ भागों में विभाजित किया गया, वे पृथक्-पृथक् नाम से १२ राशियाँ निश्चित की गईं।

उन राशियों के नाम--(१) मेष, (2)वृषभ, (३) मिथुन, (४) कर्क (५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुला (८) वृश्चिक (९) धनु (१०) मकर (११) कुम्भ और (१२) मीन हैं।

इस प्रकार जन्म पत्र में लिखी जाने वाली कुण्डली आकाश मण्डल का ही रूप है। उसमें १२ भाव रखे जाते हैं, जिन्हें घर कोष्ठक स्थान या खाना आदि भी कहते हैं। बारह भाव राशियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भावों की गणना का आरम्भ कुण्डली के शिरोभाग से बांयी ओर को होता है। यथा—



भावों की गिनती इसी प्रकार होती है। अर्थात् जहाँ एक लिखा है, वही प्रथम भाव रहेगा। उक्त कुण्डली में १ लिखे हुए भाव को मेष राशि का सूचक समझिये। शेष संख्या २ से १२ तक भी क्रमश: वृषभ से मीन राशि तक का सूचन करती है।

जहाँ १ लिखा है, वह भाव लग्न भाव है। अर्थात् जातक का जन्म जिस लग्न में हुआ है, उस राशि की क्रम संख्या ही वहाँ लिखी जायेगी। यदि मेष राशि में जन्म हुआ है तो उक्त कुण्डली के समान ही लिखा जायगा। यदि वृषभ राशि में जन्म हुआ है तो १ के स्थान पर २ और यदि मिथुन राशि में हुआ है तो १ के स्थान पर ३ लिखा जायगा। इसी प्रकार जिस राशि में जन्म हुआ हो उसी राशि की क्रम संख्या लग्न भाव में लिखनी चाहिए तथा शेष राशियों की क्रम संख्या भी इसी क्रम से लिखी जानी चाहिए।

इस प्रकार जन्म लग्न का प्रत्येक भाव जन्म लग्नानुसार प्रत्येक राशि का प्रतिनिधित्व करता है और कुण्डली के बारहों भाव सम्मिलित रूप से समूचे आकाश मण्डल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भावों में लिखे जाने वाले १, २ आदि १२ पर्यन्त अंक राशियों का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा सू., चं, म. आदि अक्षर सूर्य आदि ग्रहों के प्रतीक होते हैं। राशियों और ग्रहों का विभिन्न भावों में अंकन जन्म-समय में विद्यमान नक्षत्र तथा ग्रह आदि के आधार पर होता है, जोकि तात्कालीन पंचांग के अनुसार किया जाता है।

राशि निर्माण

राशियों का निर्माण नक्षत्रों के द्वारा होता है। नक्षत्र २७ हैं, जिनका विभाजन १२ राशियों में किया गया है। प्रत्येक राशि सवा दो नक्षत्रों से बनती है। प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण या चार पाद माने जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक राशि नौ चरणों के भोग काल को पूर्ण करती है।

नक्षत्रों का राशियों से सम्बन्ध

नक्षत्रों के क्रमानुसार नाम यह हैं—अश्विनी, भद्रा, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा, फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल

पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा और रेवती। एक अभिजित् नक्षत्र और है, जिसका भोग काल उत्तराषाढ़ा का चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र की प्रथम चार घटिकाएँ माना जाता है। राशियों पर नक्षत्रों की स्थिति निम्न प्रकार रहती है–

नक्षत्र एवं उनके चरण

राशि

१. मेष – अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १
२. वृष—कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशिखा २
३. मिथुन—मृगशिखा २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३
४. कर्क – पुनवसु १, पुष्य ४, अश्लेषा ४
५. सिंह—मघा ४, उ. फा. ४, उ. फा. १
६. कन्या—उ. फा. ३, हस्त ४, चित्रा २
७ तुला—चित्रा २, स्वाती ४, विशाखा ३
८. वृश्चिक—विशाखा १, अनु ४, ज्येष्ठा ४
९. धनु—मूल ४, पू, षा. ४, उ. षा. १
१०. मकर—उ. षा. ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २
११. कुम्भ—धनिष्ठा २, शतभिषा ४, पू. भा. ३
१२. मीन—पू. भा. १, उ. भा. ४, रेवती ४

द्वादश भाव विचार

कुण्डली में विद्यमान बारहों भाव अपना-अपना पृथक अस्तित्व रखते हैं। इनके विषय में शास्त्रों का मत निम्न प्रकार है—

प्रथम भाव या लग्न भाव—

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्ण चैव बलाबलम् ।
सुख दुःख स्वभावंच लग्नभावान्निरीक्षयेत् ॥

अर्थात्—लग्न भाव के द्वारा देह, रूप, ज्ञान, रंग बल, अबल, सुख, दुःख और स्वभाव के विषय में विचार करना चाहिए।

यह भाव तनु भाव या केन्द्र भाव भी कहलाता है। इस भाव का कारक ग्रह सूर्य है। इसके द्वारा मुख्य रूप से शरीर, स्वास्थ्य तथा वर्ण आदि के विषय में जानकारी की जाती है।

द्वितीय भाव या धन भाव –

> धनधान्यं कुटुवांश्च मृत्युजालममित्रकम्।
> धातु रत्नादिकं सर्वं धनस्थानान्निरीक्षयेत्॥

अर्थात्—धन भाव के द्वारा धन-धान्य, कुटुम्ब, मृत्यु, शत्रु, स्वर्णादि धातु तथा रत्नादि के विषय में विचार किया जाता है।

इस भाव को पणफर या मारक भी कहते हैं। इसका कारक ग्रह वृहस्पति है। प्रमुख रूप से जातक की आर्थिक स्थिति, विद्या, वाणी तथा पारिवारिक सुख सम्बन्धी विचार भी इसी भाव से करते हैं।

तृतीया भाव या पराक्रम भाव—

> विक्रम भृत्यभ्रातादि चोपदेश प्रयाणकम्।
> पित्रोर्वा मरणं विज्ञो दुश्चिक्याच्च निरीक्षयेत्॥

अर्थात्—इस भाव के द्वारा पराक्रम, भृत्यु भाई (बहिन) आदि, उपदेश यात्रा, पिता (तथा माता) की मृत्यु तथा साहसिक स्थिति के विषय में विचार करते हैं।

यह भाव उपचय या ओपोक्लिम भी कहलाता है। इसका कारक ग्रह मंगल है। जातक के दाँये कान-हाथ का विचार भी इसी भाव से करते हैं।

चतुर्थ भाव या सुख भाव—

> वाहनान्यथ बन्धूश्च मातृसौख्यादिकान्यी।
> निधि क्षेत्रं गृहं चापि चतुर्थात् परिचिन्तयेत्॥

अर्थात्—चौथे भाव से वाहन, वन्धु-बान्धव, माता, सुख, भंडार (या कोष), खेत गृह आदि का विचार करें।

यह भाव मातृ भाव या केन्द्र भाव भी है। इसके कारक ग्रह चन्द्रमा और बुध माने जाते हैं। मित्र, भागीदार, स्थानान्तर तथा मानसिक शान्ति आदि के विषय में भी इसी से विचार करते हैं।

पंचम भाव या पुत्र भाव—

यन्त्र मन्त्रौ तथा विद्यां बुद्धेश्चैव प्रबन्धकम् ॥
पुत्रराज्यापभ्रंशादीन् पश्येत् पुत्रालयाद् बुधः ॥

अर्थात्—यन्त्र, मन्त्र विद्या, बुद्धि, प्रबन्ध, पुत्र (पुत्र-पुत्री) तथा राज्यपद से हटने आदि के विषय के पाँचवे भाव से विचार किया जाता है।

यह त्रिकोण भाव भी कहा जाता है। इसका कारण ग्रह बृहस्पति है। सन्तान-सुख, लॉटरी आदि से धन प्राप्ति का विचार भी इसी भाव के द्वारा करना चाहिए।

षष्ठ भाव रोग-शत्रु भाव—

मातुलांतक शंकानां शत्रुश्चैव व्रणादिकान् ।
सपत्नीमातरं चापि षष्ठभावान्निरीक्षयेत् ॥

अर्थात्—मामा, रोग शत्रु, प्रण, सौतेली माता के विषय में छठे भाव से विचार करना चाहिए।

यह भाव आपोक्लिम, उपचय, त्रिक अथवा दुःस्थान भी कहा जाता है। इसके कारक ग्रह मंगल और शनि हैं। नौकरी, मुकदमा, दाँया पाँव आदि भी इसी भाव में विचारणीय हैं।

सप्तम भाव या मारक भाव–

जायामध्वप्रयाणं च वाणिज्यं नष्टवीक्षणम् ।
मरणं च स्वदेहस्य जायाभावान्निरीक्षयेत् ॥

अर्थात्---पत्नी (अथवा पति), यात्रा, व्यापार, खोई हुई वस्तु तथा मरण सम्बन्धी निरीक्षण इस भाव से करते हैं। जातक के अपने शरीर

या उसकी पत्नी के शरीर से सम्बन्धित अध्ययन भी इसी से करना चाहिए।

यह भाव केन्द्र या मारक स्थानी भी है। इसका कारक ग्रह शुक्र है। वैवाहिक जीवन, उदर रोग, तथा गुप्त रोग आदि के विषय में भी इसी से विचार करते हैं।

अष्टम भाव या त्रिक भाव --

आयु ऋणं रिपूं चापि दुर्गं मृतधनं तथा।
गत्यनुकादिकं सर्वं पश्येद्रध्राद्विचक्षणः॥

अर्थात्—इस भाव के द्वारा आयु, ऋण, दुर्ग, मृतक के धन गति तथा छिद्र आदि का विचार करते हैं।

इसे त्रिक भाव या मृत्यु भाव भी कहते हैं। इसका कारक ग्रह शनि है। इसके द्वारा दीर्घायु, मध्य आयु तथा अल्पायु तथा कारागार या बाँये पाँव का अध्ययन किया जाता है।

नवम भाव या धर्म भाव—

भाग्यं श्यालं च धर्मं च भ्रातृपत्न्यादिकास्तथा।
तीर्थयात्रादिकं सर्वं धर्मस्थानान्निरीक्षयेत्॥

अर्थात्—भाग्य, साला, धर्म, भाई की पत्नी, तीर्थयात्रा आदि के विषय में धर्म भाव से विचार करते हैं।

इसे भाग्य स्थान, पुण्य स्थान या त्रिकोण भी कहते हैं। इसके कारक ग्रह सूर्य और वृहस्पति हैं। इसके द्वारा भाग्य, धर्म, आकस्मिक धन-लाभ आदि का अध्ययन मुख्य रूप से किया जाता है। दक्षिण भारत में पिता सम्बन्धी निरीक्षण भी इसी भाव से करते हैं।

दशम भाव या व्योम भाव—

राज्यं चाकाशवृत्तिं च मानं चैव पितुस्तथा।
प्रवासस्य ऋणास्यापि व्योमस्थानान्निरीक्षम्॥

अर्थात्—राज्य, आकाशीवृत्ति (दैवशात् प्राप्त जीविका), मान, पिता, प्रवास तथा ऋण आदि के विषय में व्योम भाव से निरीक्षण करना चाहिए।

इसे पितृ भाव, कर्म भाव, केन्द्र या उपचय स्थान भी कहते हैं। इसके कारण ग्रह सूर्य, बुध, वृहस्पति तथा शनि हैं। इसके द्वारा आदेश, पद-प्राप्ति पदोन्नति, प्रसिद्ध तथा हृदय आदि के विषय में भी अध्ययन करते हैं।

एकादश भाव या आय भाव—

नाना वस्तु भवस्यापि पुत्रजायादिकस्य च।
आयं वृद्धि पशूनां च भवस्थान्नि न्नरीक्षणम्॥

अर्थात्—अनेक वस्तु, लाभ पुत्रवधु, आय, वृद्धि तथा पशु आदि के विषय में ग्यारहवें भाव को देखना चाहिए।

यह भाव पणफर या उपचय भी कहलाता है। इसका कारक ग्रह वृहस्पति है। बाँये कान और बाँये हाथ का अध्ययन भी इसी भाव से करते हैं।

द्वादश भाव या व्यय भाव—

व्ययं च वैरिवृत्तान्तऽरिः फमन्त्यादिकं तथा।
व्ययाच्चैव हि ज्ञातव्यमिति सर्वत्र धीमता॥

अर्थात्—व्यय, वैरियों का वृतान्त, गुप्त शत्रु, अति व्यय आदि का विचार इसी भाव से करना उचित है।

इसे त्रिक भाव या अपोक्लिम भी कहते हैं। इसका कारक ग्रह शनि है। बाँये नेत्र, पाँव ऋण, हानि, दरिद्रता पाप, शयन-सुख तथा लघु यात्रा आदि के विषय में भी इसी भाव से विचार करते हैं।

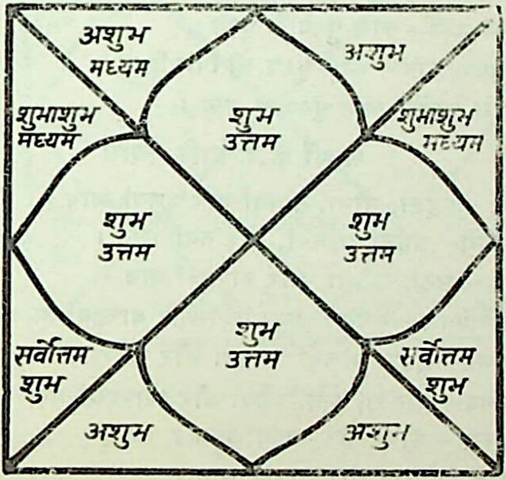
ग्रहानुसार कारक वर्णन

सामान्यतः भावों के कारण ग्रहों को इस प्रकार ध्यान में रख सकते हैं।

सूर्य—पितृ कारक (दशम भाव)
चन्द्रमा—मातृ-कारक (चतुर्थ भाव)
मंगल—बन्धु-कारक (तृतीय भाव)
बुध—ज्ञातुल पक्ष कारक (षष्ठ भाव)
गुरु—सन्तति-कारक (पंचम भाव)
शुक्र—स्त्री कारक (सप्तम भाव)
शनि—मृत्यु एवं व्यय कारक (अष्टम और द्वादश भाव)

भावों का शुभाशुभ ज्ञान

भाव—मुख्य रूप से तीन प्रकार के माने जाते हैं–(१) शुभ; (२) शुभाशुभ और (३) अशुभ । इनके अति उत्तम, उत्तम, मध्यम आदि भेद भी हैं । नीचे की कुण्डली भावों के शुभ अशुभ होने के विषय में सरलता से जानकारी देती है—



कुण्डली और काल पुरुष

विद्वानों ने कुण्डली को काल पुरुष का प्रतीक माना है। उसके भावों को काल पुरुष के अंश विशेष से निम्न प्रकार सम्बंधित समझना चाहिये।

प्रथम भाव—काल पुरुष का मस्तक।
द्वितीय भाव—काल पुरुष का मुख।
तृतीय भाव—काल पुरुष का वक्षस्थल।
चतुर्थ भाव—काल पुरुष का हृदय।
पचम भाव—काल पुरुष का उदर।
षष्ठ भाव—काल पुरुष की कटि।
सप्तम भाव—काल पुरुष का वस्ति भाग।
अष्टम भाव—काल पुरुष का उपस्थ।
नवम भाव–काल पुरुष की जंघाएँ।
दशम भाव—काल पुरुष के घुटने।
एकादश भाव—काल पुरुष की पिण्डलियां।
द्वादश भाव—काल पुरुष के पांव।

भावों के केन्द्रादि पर्याय

केन्द्र—पहला, चौथा, सातवां और दशवां भाव।
त्रिकोण—पहला, पाँचवां, और नवाँ भाव।
त्रिक—छठा, आठवां, और बारहवाँ भाव।
आपोक्लिम—तीसरा, छठा नवाँ और बारहवां भाव।
पणफर—दूसरा पाँचवाँ, आठवां और ग्यारहवां भाव।
उपचय—तीसरा, छठा, दशवां और ग्यारहवाँ भाव।
चतुरस्र—चौथा और आठवाँ भाव।
मारक—दूसरा और सातवां भाव।

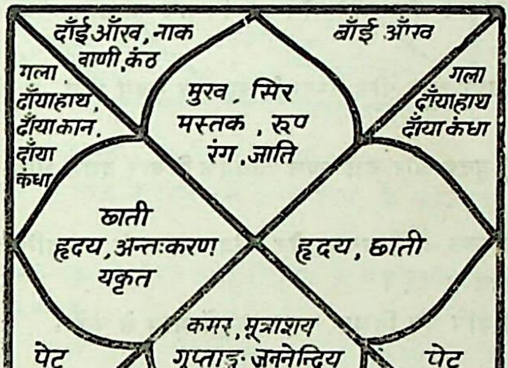
त्रिषडाय—तीसरा, छठा और बारहवां भाव ।

लीन—तीसरा, छठा, और बारहवाँ भाव ।

त्रिकोण—पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा, सातवां आठवां और नवां भाव ।

भाव और शारीरिक अंग विषयक विचार

कुण्डली में स्थित भावों का शरीर के अंगों से सम्बन्ध माना जाता है । जातक के किस अंग का सम्बन्ध किस भाव से है, यह तथ्य निम्न कुण्डली-चित्र के द्वारा इसे सरलता से समझा जा सकता है ।



उक्त भावों का स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है—

(१) जातक के शरीर का मुख, सिर, मस्तक, रूप, रंग, जाति आदि का अध्ययन प्रथम भाव से करे ।

(२) दाईं आँख, नाक, वाणी तथा कण्ठ आदि का विचार दूसरे भाव से करना चाहिए।

(३) गला, दाँया कान, दाँया कन्धा और दांया हाथ तीसरे भाव से विचारणीय होता है।

(४) छाती, हृदय, यकृत, फुफ्फुस अन्तःकरण आदि का अध्ययन चौथे भाव से करें।

(५) उदर और पीठ का विचार पांचवें भाव से करें।

(६) आतें, नाभि तथा दाँया पाँव षष्ठ भाव से देखें।

(७) मूत्राशय जननेन्द्रिय, योनि, गर्भाशय, उपस्थ, गुदा तथा कटि से सम्बन्धित विचार सातवें भाव से करें।

(८) इन्द्रिय और बाँये पाँव का विचार आठवें भाव से करना चाहिए।

(९) उदर और पीठ सम्बन्धी अध्ययन नवम भाव से किया जाता है।

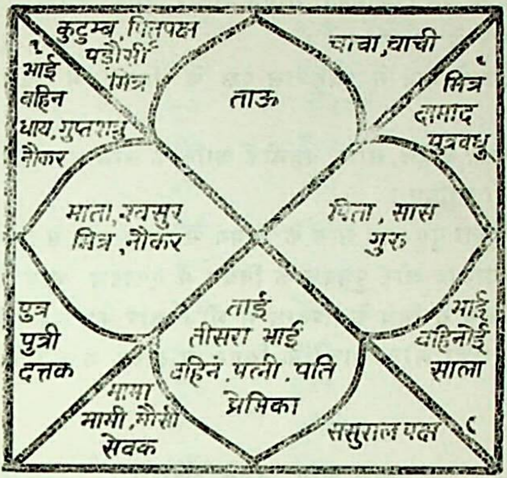
(१०) हृदय और वक्ष स्थल विषयक विचार दशम भाव से करना चाहिए।

(११) कण्ठ, दाँये कन्धा और दांये हाथ से सम्बन्धित विचार ग्यारहवें भाव से करें।

(१२) बाँये नेत्र विचार का बारहवें भाव से करें।

भाव और स्वजन-सम्बन्धी विषयक विचार

जातक की कुण्डली के विभिन्न भावों से उसके स्वजन सम्बन्धियों के विषय में भी विचार किया जाता है। उसका कुण्डली-चित्र इस प्रकार है—



उक्त भावों का स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है—

(१) जातक के ताऊ के विषय में प्रथम भाव से अध्ययन करना चाहिए।

(२) कुटुम्बी, पड़ोसी, मित्र तथा पितृपक्ष के व्यक्तियों का विचार दूसरे भाव से करते हैं।

(३) भाई, बहिन, धाय, नौकर-चाकर तथा गुप्त शत्रु के विषय में तीसरे भाव से अवलोकन करें।

(४) माता और श्वसुर के सम्बन्ध में चौथे भाव से विचार किया जाय। मित्र तथा नौकर के विषय में इस भाव से भी विचार कर सकते हैं।

(५) पाँचवें भाव से पुत्र, पुत्री तथा दत्तक पुत्र-पुत्री के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(६) मामा, मामी, मौसा मौसी के विषय में षष्ठ भाव से विचार करें। सेवक के विषय में इस भाव से विचार कर सकते हैं।

(७) पति, पत्नी, प्रेमिका, बहिन, तीसरे, भाई तथा ताई के सम्बन्ध में सातवें भाव से विचार करें।

(८) आठवें भाव से श्वसुराल पक्ष के विषय में विचार किया जाता है।

(९) भाई, बहिन, साले, बहनोई आदि के सम्बन्ध में नवें भाव से विचार करना चाहिए।

(१०) पिता,गुरु तथा सास के विषय में दशम भाव से विचार करें।

(११) दामाद और पुत्रवधू के विषय में एकादश भाव से विचार करें। इस भाव से मित्र के सम्बन्ध में भी विचार कर सकते हैं।

(१२) चाचा और चाची के विषय मे द्वादश भाव से विचार किया जाता है।

भाव और उनके स्वामी

१- प्रथम भाव—प्रथमेश।
२- द्वितीय भाव—द्वितीयेश।
३- तृतीय भाव—तृतीयेश।
४- चतुर्थ भाव—चतुर्थेश।
५- पंचम भाव—पंचमेश।
६- षष्ट भाव—षष्ठेश।
७- सप्तम भाव—सप्तमेश।
८- अष्टम भाव—अष्टमेश।
९- नवम भाव—नवमेश।
१०- दशम भाव—दशमेश।
११- एकादश भाव—एकादशेश।
१२- द्वादश भाव—द्वादशेश।

राशि और उनके अधिपति आदि

राशि	अधिपति	बाधक राशि	बाधक ग्रह
मेष	मंगल	कुम्भ	शनि
वृषभ	शुक्र	वृश्चिक	मंगल
मिथुन	बुध	सिंह	सूर्य
कर्क	चन्द्र	वृष	शुक्र
सिंह	सूर्य	कुम्भ	शनि
कन्या	बुध	वृश्चिक	मंगल
तुला	शुक्र	सिंह	सूर्य
वृश्चिक	मंगल	वृष	शुक्र
धनु	गुरु	कुम्भ	शनि
मकर	शनि	वृश्चिक	मंगल
कुम्भ	शनि	सिंह	सूर्य
मीन	गुरु	वृष	शुक्र

ग्र की स्होंवराशि आदि

ग्रह	स्वराशि	उच्च राशि	नीच राशि
सूर्य	सिंह	मेष	तुला
चन्द्र	कर्क	वृष	वृश्चिक
मंगल	मेष, वृश्चिक	मकर	कर्क
बुध	मिथुन, कन्या	कन्या	मीन
गुरु	धनु, मीन	कर्क	मकर
शुक्र	वृष, तुला	मकर	कन्या
शनि	मकर, कुम्भ	तुला	मेष
राहु	कन्या	वृष	धनु
केतु	मीन	वृश्चिक	मिथुन

कुछ विद्वान् राहु और केतु की उच्च राशि के विषय में अन्य मत रखते हैं। उनके विचार में राहु की उच्च राशि मिथुन तथा केतु की उच्च राशि धनु है। परन्तु अधिकांश मत उपर्युक्त ही हैं।

प्रत्येक ग्रह स्वराशि में बलवान तथा शुभ रहता है। उच्च राशि में अधिक बलवन और अधिक शुभ समझना चाहिए। किन्तु नीच राशि में निर्बल या क्षीणबल माना है।

ग्रहों की पारस्परिक मित्रता-शत्रुता आदि

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चन्द्र, मंगल गुरु	शुक्र, शनि	बुध
चन्द्र	सूर्य, बुध	बुध	मं० गु० श०
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	शनि	शु० श० बु०
बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्रमा	मं० गु० श०
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र	बुध, शनि	सूर्य, चन्द्र	मं० गुरु
शनि	बुध, शुक्र	सू० च० मंगल गुरु	

क्रूर, सौम्य, पुरुष, स्त्री राशियाँ

क्रूर—राशि—मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ यही राशियाँ पुरुष राशि भी कहलाती हैं।

सौम्य राशि—वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, और मीन यही राशियाँ स्त्री राशि भी हैं।

राशियों की दिशाएं

पूर्व—मेष, सिंह, धनु।

दक्षिण—वृष, कन्या, मकर।

पश्चिम—मिथुन, तुला, कुम्भ।

उत्तर—कर्क, वृश्चिक, मीन।

दिवाबली और रात्रिबली राशियां

रात्रि बली—मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, धनु और मकर राशि में बलवान होती हैं।

दिवाबली—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ और मीन राशियाँ दिन में बलवान होती हैं।

पृष्ठोदय, शीर्षोदय आदि

पृष्ठोदय राशियाँ—मेष, वृषभ, कर्क धनु और मकर।

शीर्षोदय राशियाँ—मिथुन, सिंह, कन्या,तुला, वृश्चिक और कुम्भ राशि।

उभयोदय—मीन राशि।

जन्म कुण्डली के लग्न भाव में पृष्ठोदय राशि हो तो कार्य देर से होता है। किन्तु, शीर्षोदय राशि हो तो कार्य शीघ्र होगा। यदि लग्न में मीन राशि है तो उभयोदय होने के कारण मध्य गुण या दोनों प्रकार के गुणों का अनुभव हो सकता है।

राशियों में तत्वों की प्रधानता

राशियों में तत्वों का समावेश रहता है और प्रत्येक राशि में किसी न किसी तत्व की प्रधानता रहती है। जानकारी के लिए निम्न परिचय उपयुक्त होगा—

अग्नि तत्व प्रधान राशियाँ—मेष, सिंह, धनु।

पृथिवी तत्व प्रधान राशियाँ—वृषभ, कन्या, मकर।

वायु तत्व प्रधान राशियाँ—मिथुन, तुला, कुम्भ,।

जल तत्व प्रधान राशियाँ—कर्क, वृश्चिक, मीन।

यह ध्यान रखने की बात है कि अग्नि तत्व प्रधान राशियों की वायु तत्व प्रधान राशियों से तथा पृथिवी तत्व राशियों की जल तत्व प्रधान राशियों से मित्रता होती है।

इसके विपरीत–अग्नि तत्व प्रधान राशियों का पृथिवी तत्व प्रधान और जल तत्व प्रधान राशियों से द्वेष रहता है। इसी प्रकार वायु तत्व प्रधान राशियों का पृथिवी तत्व और जल तत्व प्रधान राशियों से द्वेष रहना समझिये।

लग्न भाव में तत्वानुसार राशि विश्लेषण

उक्त राशियों का जातक की लग्न कुण्डली के लग्न भाव (प्रथम-भाव) में विद्यमान होना निम्न फलित का आभास व्यक्त करता है—

अग्नि तत्व प्रधान राशियाँ—

लग्न भाव में अग्नि तत्व प्रधान राशियों की उपस्थिति जातक को उग्र स्वभाव का बनाती है। ऐसे व्यक्ति शूर-वीर, साहसी और परिश्रमी तो होते ही हैं, इसलिए जिस कार्य का आरम्भ करते हैं, उसे पूरा किये विना नहीं छोड़ना चाहते। यह उनकी सफलता का एक बहुत बड़ा रहस्य समझा जा सकता है।

ऐसे लोग अपने समय को व्यर्थ नष्ट करना पसन्द नहीं करते। वे अपने सहकारियों आदि से भी ऐसी ही आशा रखने हैं तथा जो लोग परिश्रम से बचते तथा अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं करते, उनसे इस तत्व वाले जातक की पटरी नहीं बैठती।

इस प्रकार अग्नि तत्व प्रधान राशियों में उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों को कार्य में विश्वास होता है। वे न स्वयं आराम करते हैं और न अपने आधीस्थ व्यक्तियों को आराम करने देते हैं।

ऐसे लोग किसी मित्र या सम्वन्धी आदि के प्रति भी ऐसी कोई रियायत नहीं वर्तना चाहते, जिसके कारण कार्य में किसी प्रकार की बाधा पड़ सकती हो।

किन्तु ऐसे जातक सरल हृदय और सत्य निष्ठ होते हैं यह झूठ और बुरे आचरण को भी पसन्द नहीं करते। आदर्श वादिता के आगे यह किसी को कुछ भी नहीं समझते।

इस प्रकार के जातकों को क्रोध ही शीघ्र ही आता है। इन्हें किसी भी प्रकार का अन्याय सहन नहीं होता और अन्याय करने वाले के प्रति इन्हें किंचित भी सहानुभूति नहीं होती।

नीति निर्धारण में कुशल ऐसे मनुष्य किसी अन्य के मुख की ओर नहीं देखते। वे स्वयं जो निर्णय लेते हैं, उससे किसी भी प्रकार पीछे नहीं हटना चाहते। ऐसे जातक सेना या पुलिस में अच्छे अधिकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे जातक अपने लाभ-हानि की ओर सतर्क दृष्टि रखते हैं। जिस कार्य में उन्हें लाभ दिखाई नहीं देता, उसे करना पसन्द नहीं करते। उन्हें उसकी परवाह नहीं होती कि उस कार्य से दूसरे लोगों को तो लाभ पहुँचेगा ही। इस प्रकार यह अपने स्वार्थ को ही सर्वोपरि मानते हैं।

अपनी बात रखने की इन्हें इतनी चिन्ता रहती है कि उसमें किसी प्रकार की खामी न आने पावे। चाहे दूसरे की प्रतिष्ठा गिरती हो, परन्तु अपनी प्रतिष्ठा बनी रहे।

बात कहने में बहुत खरेपन से काम लेते हैं। कड़वी से कड़वी बात कहने में नहीं चूकते। उस समय यह भी नहीं देखते कि किस से बात कर रहे हैं। कोई सम्मानित व्यक्ति ही क्यों न हो, अपनी बात बड़ी करने के लिए उसे भी सुनाने में नहीं रुकते।

ऐसे जातक स्वभाव में शक्की भी होते हैं उन्हें अपने मित्रों, सहयोगियों, यहाँ तक कि पत्नी और पुत्रों तक पर पूरा विश्वास नहीं होता। पुत्री या पुत्रवधू तक की गति विधियों पर सतर्क दृष्टि रखते हैं। अपने से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति के चालचलन आदि के विषय में गुप्त जानकारी का प्रयास भी करते रहते हैं।

पृथिवी तत्व प्रधान राशियां—

यदि जन्म कुण्डली के लग्न भाव में पृथिवी तत्व प्रधान राशियाँ हों तो यह जातक को धैर्यवान बनाती हैं। ऐसे जातक कभी किसी कार्य में जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहते।

इनकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है, इसलिए किसी भी मुख्य बात को कभी नहीं भूलते । अपने प्रति किये गए किसी के उपकार को सदा याद रखते और उसका बदला देने के लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं । किन्तु अपने द्वारा किये गए उपकार का प्रदर्शन भी नहीं करते ।

ऐसे जातक अपनी बुराइयों को भी गम्भीर दृष्टि से देखते हैं । यह इसके लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं कि जो कुछ बुराई हो, वह शीघ्र ही दूर हो जाय ।

दूसरों की बात भी धैर्य पूर्वक सुनते हैं । यदि उस बात से अपनी निन्दा होती हो तो भी उससे उत्तेजित नहीं होते । यह सदा अपने को संयम में रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं तथा क्रोध नहीं आने देते । यहाँ तक कि अपने विरोधियों को भी मीठी वाणी से समझाते और उनका समाधान करते हैं ।

ऐसे जातक प्रेम के मामले में भी चतुर होते हैं । जिससे प्रेम करते हैं, उससे बिगाड़ नहीं करना चाहते । इनका दाम्पत्य जीवन भी इसी गुण के कारण सुखी रहता है ।

धनोपार्जन के विषय में भी यह पीछे नहीं रहते । जिस कार्य में हाथ डालते हैं उसी में लाभ उठाते हैं । व्यापार हो या नौकरी, सभी कार्यों में सफलता इनके हाथ रहती है ।

यह कल्पना जगत् में सदैव विचरण करते रहते हैं । नई-नई बातों में उनकी दिलचस्पी रहती है । दार्शनिक स्थानों की सैर इनकी प्रमुख इच्छा होती है ।

धर्म के प्रति आस्थावान रहते । ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि रहती है । गुरुजनों के प्रति श्रद्धा और परमात्मा में विश्वास रहने के कारण आचरण भी बहुत श्रेष्ठ रहता है ।

साहित्य से प्रेम रहता है । इसलिए कल्पना की प्रधानता इन्हें वर्णनात्मक शक्ति से सम्पन्न कर देती है । इनका आन्तरिक कवित्व जाग्रत हो उठता है और अच्छी काव्य रचना करने लगते हैं ।

ऐसे जातक कुशल प्रबन्धक भी होते हैं। यह अपने मीठे व्यवहार से अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को अनुकूल बनाये रखते हैं। इनकी उचित माँगों को स्वीकार करने के कारण सभी वर्गों में इनकी प्रशंसा रहती है।

यदि नौकरी में होते हैं तो अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह पूर्ण रूप से करते हैं कार्य के प्रति उनकी लगन के कारण उच्च अधिकारी या मालिक भी प्रसन्न रहते हैं।

यदि जातक महिला है तो अधिक विनयशील होने के कारण पति तथा परिवारीजनों को अनुकूल रखने में सफल रहेगी।

वायु तत्व प्रधान राशियाँ

यदि लग्न भाव में वायु तत्व प्रधान राशियाँ हों तो ऐसा जातक सहन शील होगा उसमें उग्रता की मात्रा अधिक रहते हुए भी अपने को संयम में रखने की शक्ति होगी।

ऐसे व्यक्ति अपने वचन के पक्के होते हैं। यह जो कुछ कह देते हैं, उससे पीछे नहीं हटते। इन्हें सदा इस बात का ध्यान रहता है कि कोई मिथ्यावादी न समझ बैठे।

प्राचीनता में इनकी बड़ी आस्था होती है। यह किसी भी रूढ़ि को तोड़ना अच्छा नहीं समझते। धर्म में इनका पूरा विश्वास होता है और उसके आगे किसी भी तर्क से प्रभावित नहीं होते।

इनका निश्चय अडिग होता है। जो कुछ निर्णय ले लिया वह ठीक उसे बदलना ठीक नहीं समझते। किसी प्रलोभन से भी इन्हें अपने विचारों की ओर मोड़ना कठिन होता है।

धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में इनकी रुचि रहती हैं। वेद पुराण, इतिहास, स्मृति, दर्शन आदि के प्रति श्रद्धा रहने के कारण आधुनिक विचारधारा इन्हें प्रभावित नहीं कर पाती।

तड़क-भड़क के प्रति इनको आकर्षण नहीं होता। सादा जीवन,

उच्च विचार को मान्यता देने वाले ऐसे जातक अपने आचरण को दृढ़ता पूर्वक उत्कृष्ट बनाये रखते हैं।

वह अपने जीवन को दिनोंदिन उत्कृष्ट बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। अपने विगत दिनों के कार्यों का गम्भीरता से पुनरावलोकन करते रहना इनका स्वभाव बन जाता है। पिछले दिनों की गई भूलों को पुनः न होने देने के लिए वह कटिबद्ध रहते हैं। इनकी रुचि सदाचरण में बढ़ती जाती है।

परोपकार से सदा तत्पर रहने वाले यह जातक दूसरों का बुरा होता नहीं देख सकते। किसी को संकट में देख कर उसकी सहायता करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

देव-गुरु के पुजन, दान-पुण्य, तीर्थ-यात्रा, कथा-कीर्तन आदि में इनकी अधिक रुचि रहती है। अपने द्वारा उपार्जित धन का कुछ अंश इन कार्यों में व्यय करते रहते हैं।

यदि जातक महिला है तो समझना चाहिए कि पति और ईश्वर में उसकी आस्था होगी, किन्तु उसकी इस आस्था का लाभ दूसरे लोग गलत ढ़ग से भी उठा सकते हैं। इसलिए उसे अपने क्रिया कलापों में सतर्कता से कार्य लेना हितकर होगा।

जल तत्व प्रधान राशियां

जिन जातकों की जन्म लग्न में जल तत्व प्रधान राशियाँ हों, वे प्रखर बुद्धि वाले होते हैं। शिक्षा में चित्त रहने के कारण उच्च उपाधि प्राप्त करने में उन्हें सफलता मिलती है।

उनकी स्मरण शक्ति अधिक तीव्र रहती है, इसलिए बहुत पुरानी बातें तक याद रखते हैं। परन्तु स्वभाव में प्रायः सरलता रहती है, इसलिए अपने प्रति किये अपकार या तिरस्कार, के प्रति उपेक्षा रखते और बदला लेने का भी विकार नहीं करते।

ऐसे जातक कुछ स्वार्थी विचार के भी हो सकते हैं। जैसे भी हो अपना कार्य बना लेना चाहते हैं। परन्तु ऐसा प्रयत्न भी करते हैं कि किसी दूसरे को हानि न हो।

इनके हृदय में कुछ कठोरता भी होती है। कोई चाहे कि थोड़ा रो-धोकर या हाथ जोड़कर इन्हें द्रवित कर लिया जाय तो इसमें सफलता कठिनाई से ही मिलेगी।

धनोपार्जन के लिए कटिबद्ध रहना भी इनके स्वभाव में है परन्तु, समय-समय पर अनेक बाधायें उपस्थित होती रहती हैं, जिसके कारण बहुत तगड़ी आमदनी नहीं हो पाती। जो कुछ आय होती है, उतना ही व्यय भी हो जाता है, इसलिए बचत होना बहुत कठिन कार्य होता है।

विशेष अवसर पर आर्थिक कष्ट भी रह सकता है। सम्भव है कि ऋण भी लेना पड़े। परन्तु, यह परिस्थितियाँ सदैव रहना सम्भव नहीं। शीघ्र ही इन परेशानियों से छुटकारा मिल जाना चाहिए। परन्तु, परिश्रम की अपेक्षा रहेगी।

ऐसे जातक परिश्रमशील होते हैं। उन्हें अपने ऊपर यह विश्वास रहता है कि परिश्रम के बल पर सभी संकटों को दूर भगा सकेंगे और यही विश्वास उन्हें अधिक दुःखी नहीं होने देता।

परन्तु, ऐसे व्यक्तियों में आचरण सम्बन्धी कमजोरी भी हो सकता है। फिर भी धार्मिक वातावरण के कारण यह बहुत कुछ सावधान रहते हैं और स्वयं को गिरने से बचा लेते हैं।

ऐसे व्यक्ति प्रायः बुद्धिजीवी भी होते हैं। अध्यापक, विधिवेत्ता, पण्डित, ज्योतिषी, चिकित्सक आदि हो सकते हैं। यदि व्यापारी हों तो उसमें दक्ष होंगे। नौकरी में हों तो पदोन्नति के अवसर मिलते रहेंगे। परन्तु, जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत रह सकते हैं।

यदि जातक महिला हो तो समझना चाहिए कि उसका गृहस्थ जीवन सुखी होगा।

भावों के कारक ग्रह

भाव	कारक ग्रह
प्रथम भाव	सूर्य
द्वितीय ,,	वृहस्पति
तृतीय ,,	मंगल
चतुर्थ ,,	चन्द्रमा, वुध
पंचम ,,	वृहस्पति
षष्ठ ,,	शनि, मंगल
सप्तम ,,	शुक्र
अष्टम ,,	शनि
नवम ,,	सूर्य, वृहस्पति
दशम ,,	सूर्य, वुध, गुरु, शनि
एकादश ,,	वृहस्पति
द्वादश ,,	शनि

ग्रहों के तत्व

जैसे राशियाँ तत्वों से युक्त होती हैं और उनमें एक तत्व की प्रधानता होती है। इसका परिचय इस प्रकार समझना चाहिए—

तत्व	ग्रह
अग्नि तत्व	सूर्य, मंगल, वृहस्पति
जल यत्व	चन्द्रमा, शुक्र
पृथिवी तत्व	वुध
आकाश तत्व	वृहस्पति

पुरुष, स्त्री या नपुंसक ग्रह

पुरुष ग्रह	सूर्य, मंगल
स्त्री ग्रह	चन्द्रमा और शुक्र

पुरुष नपुंसक ग्रह	बुध
स्त्री नपुंसक ग्रह	शनि

उदय और अस्त ग्रह

रात्रि के समय जो ग्रह आकाश में किसी भी समय दिखाई दे, वह ग्रह उदय कहा जाता है। किन्तु जो ग्रह रात्रि के समय जो दिखाई न दे, उसे अस्त कहते हैं। वह अस्त तभी माना जाता है, जब कि सूर्य के पास आता और दिखाई नहीं देता।

वक्री और मार्गी ग्रह

जो ग्रह अपनी गति पर अग्रसर होता रहता है, उसे मार्गी ग्रह कहते हैं तथा जो ग्रह उसका चलता है, वह वक्री कहलाता है। जो ग्रह मार्गी होता है वह बलवान तथा वक्री होता है, वह बलहीन होता है। सूर्य और चन्द्रमा सदा मार्गी ग्रह होते हैं तथा अन्य ग्रह वक्री समझने चाहिए।

सौम्य और क्रूर ग्रह

सौम्य ग्रह—चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, और शुक्र।

क्रूर ग्रह—सूर्य और मंगल।

पाप ग्रह—शनि, राहु और केतु।

कुछ लोग क्रूर ग्रह और पाप ग्रह में भेद नहीं मानते। परन्तु सूर्य को पाप ग्रह कहना उचित नहीं है। सूर्य तो संसार का आत्मा तथा प्राण है, इसलिये वह क्रूर ग्रह तो हो सकता है, किन्तु पाप ग्रह नहीं हो सकता।

महादशा और अन्तर्दशाएं

दशाओं से सम्बन्धित नक्षत्र

ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा का ज्ञान भी वहुत आवश्यक होता है। जातक की महादशा का निश्चय उसके जन्म नक्षत्र के आधार पर किया जाता है। इसके लिए निम्न सूचना उपयोगी होगी—

ग्रह दशा	नक्षत्र
केतु	अश्विनी, मघा, मूल।
शुक्र	भरणी, पूर्वा फाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा।
सूर्य	कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुणी,उत्तराषाढ़ा।
चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण।
मंगल	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा।
राहु	आद्रा, स्वाति, शतभिषा।
गुरु	पुनर्वसु, विशाखा पूर्वा भाद्रपदा।
शनि	पुष्य, अनुराधा, उत्ताराभाद्रपदा।
बुध	अश्लेषा, रेवती।

यदि किसी का जन्म अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में हुआ हो तो उसका जन्म केतु की महादशा में हुआ समझिये। यदि भरणी, पूर्वा फाल्गुणी या पूर्वाषाढ़ा में हुआ हो तो शुक्र की महादशा में जन्म हुआ समझना चाहिए। इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों की महादशा की जानकारी की जाती है। ऊपर इसका पूरा वर्णन है।

महादशाओं की अवधि

सूर्य की महादशा ६ वर्ष की, चन्द्रमा की १० वर्ष की, मंगल की ७ वर्ष की, राहु की १८ वर्ष की, गुरु की १६ वर्ष की, शनि की १९ वर्ष की, बुध की १७ वर्ष की, केतु की ७ वर्ष की तथा शुक्र की महा-

दशा २० वर्ष की होती है। महादशाओं में अन्तर्दशाएं निम्न प्रकार होती है—

सूर्य की महादशा (६ वर्ष) में अन्तर्दशायें

अन्तर्दशाये	वर्ष	मास	दिवस
सूर्य	×	३	१८
चन्द्र	×	६	×
मंगल	×	४	६
राहु	×	१०	२४
गुरु	×	९	१८
शनि	×	११	१२
बुध	×	१०	६
केतु	×	४	६
शुक्र	×	×	×
योग	६	×	×

चन्द्र महादशा (१० वर्ष) में अन्तर्दशायें

अन्तर्दशायें	वर्ष	मास	दिवस
चन्द्र	×	१०	×
मंगल	७	×	×
राहु	१	६	×
गुरु	१	४	×
शनि	१	७	×
बुध	१	५	×
केतु	×	७	×

शुक्र	१	८	×
सूर्य	×	६	×
योग	१०	×	×

मंगल महादशा (७ वर्ष) में अन्तर्दशाएँ

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
मंगल	×	४	२७
राहु	१	×	१८
गुरु	×	११	६
शनि	१	१	९
बुध	×	११	२७
केतु	×	४	२७
शुक्र	१	२	×
सूर्य	×	४	६
चन्द्र	×	७	×
योग	७	×	×

राहु महादशा (१७ वर्ष) में अन्तर्दशायें

अन्तर्दशायें	वर्ष	मास	दिवस
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६

बुध	२	६	१८
केतु	१	×	१८
शुक्र	३	×	×
सूर्य	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	×
मंगल	१	×	१८
योग	१८	×	×

गुरु महादशा (१६ वर्ष) में अन्तर्दशाएँ

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	×	११	६
शुक्र	२	८	×
सूर्य	×	९	१८
चन्द्र	१	४	×
मंगल	×	११	६
राहु	२	४	२४
योग	१६	×	×

शनि महादशा (१९ वर्ष) में अन्तर्दशाएँ

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
शनि	३	×	३

बुध	२	८	९
केतु	१	३	६
शुक्र	३	२	×
सूर्य	×	११	१२
चन्द्र	१	७	×
मंगल	१	१	६
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२
योग	१६	×	×

बुध महादशा (१५) में अन्तर्दशाएं

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
बुध	२	४	२७
केतु	×	११	२७
शुक्र	२	१०	×
सूर्य	×	१०	६
चन्द्र	१	५	×
मंगल	×	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	६
योग	१७	×	×

केतु महादशा (७ वर्ष) में अन्तर्दशाएं

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
केतु	☼	४	२७
शुक्र	१	२	☼
सूर्य	☼	४	६
चन्द्र	☼	७	☼
मंगल	☼	४	२७
राहु	१	☼	१८
गुरु	☼	११	६
शनि	१	१	९
बुध	☼	११	२७
योग	७	×	×

शुक्र महादशा (२० वर्ष) में अन्तर्दशाएं

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
शुक्र	३	४	×
सूर्य	१	☼	×
चन्द्र	१	८	×
मंगल	१	२	×
राहु	३	×	×
गुरु	२	८	×
शनि	३	२	×
बुध	२	१०	×
केतु	१	२	×
योग	२०	×	×

उक्त प्रकार से महादशाओं की अन्तर्दशाओं के वर्षों का ध्यान रखा जाय। मान लीजिए कि किसी का जन्म राहु की महादशा में हुआ है तो वह १८ वर्ष तक राहु की महादशा का भोग करेगा और फिर गुरु की महादशा १६ वर्ष तक भोगेगा। इसी प्रकार अन्य दशाओं और अन्तर्दशाओं का निश्चय करना चाहिए।

फलित ज्योतिष के शत सूत्र

ध्यान रखने योग्य रहस्य योग

जन्म पत्र का अध्ययन करते समय फलित ज्योतिष से सम्बन्धित सिद्धान्तों पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक होता है। इसलिए सर्व प्रथम उन पर प्रकाश डालना उचित होगा—

फलित के विभिन्न सिद्धान्त और

(१) जिस भाव में शुभ ग्रह स्थिति हो अथवा जो भाव शुभग्रहों के द्वारा देखे जाते हों, वे शुभ फल प्रदान करते हैं। इसी प्रकार अशुभ ग्रह युक्त या अशुभ ग्रह युक्त या अशुभ ग्रह दृष्टि भाव अशुभ फल देने वाले होते हैं।

(२) जो ग्रह जिस राशि में हो और उसी नवांश में भी हो तो उसे वर्गोत्तम कहते हैं। वर्गोत्तम ग्रह स्वगृही ग्रह के समान ही बलवान एवं शुभ माना जाता है।

(३) किसी भाव के भावेश की स्थिति अपने भाव से आठवें स्थान पर होतो यह उस भाव की अत्यधिक बलहीनता का सूचक लक्षण होगा उदाहरणार्ण—मेष लग्न की कुण्डली में सप्तम भाव की राशि 'तुला' हुई और उसके अधिपति शुक्र की स्थिति दूसरे भाव में हो तो अशुभ'

समझी जायेगी। क्योंकि मेष लग्न के सप्तम भाव से मिलने पर द्वितीय भाव तक आठवाँ स्थान हुआ। इसके फलस्वरूप पति-पत्नी में अनबन, दाम्पत्य जीवन में अशान्ति अथवा इच्छित पति या पत्नी की प्राप्ति में बाधा होना समझा जा सकता है।

(४) यदि सूर्य और मंगल दसवें भाव में, चन्द्रमा और शुक्र चोथे भाव में बुध और वृहस्पति पहले भाव में तथा शनि बाहरवें भाव में हो तो बलवान माने जाते हैं। बलवान ग्रह सदैव शुभ फल देने वाले होते हैं। जबकि निर्बल ग्रह अशुभ फल देता है।

(५) सूर्य और चन्द्रमा एक-एक राशि के तथा शेष सभी ग्रह दो-दो राशियों के अधिपति होते हैं। दो राशियों का अधिपति कोई भी ग्रह मूल त्रिकोण राशि वाले भाव को अधिक फल प्रदान करने वाला होता है।

(६) वक्री हुआ ग्रह अधिक बलवान होता है और वह जिस भाव का अधिपति हो, उसे अधिक विशेष बलवान बनाता है। इसलिए वह भाव अपने अधिपति के प्रभाव से अधिक शुभ फल प्रदान करता है।

(७) यदि एक त्रिकोण का अधिपति अन्य त्रिकोण में स्थित हो तो वह अपना शुभत्व खो देता है। किन्तु यदि वह ग्रह लग्नश भी हो तो अपने शुभत्व को ५० प्रतिशत नहीं छोड़ता।

(८) यदि केन्द्र का अधिपति त्रिकोण में विद्यमान हो तो दुगुना बलवान हो जाता है। ऐसा ग्रह जिस भाव का अधिपति हो, उसकी पूर्ण रूप से वृद्धि होती है।

(९) यदि केन्द्र का अधिपति केन्द्र में ही हो उसका ५० प्रतिशत शुभत्व समाप्त हो जाता है। किन्तु केन्द्रेश के स्वराधि में स्थित रहने पर वह पूर्ण शुभ रहता है।

(१०) जो ग्रह दो भावों का अधिपति उसकी राशि की लग्न भाव से गणना करने पर जो राशि प्रथम होगा, उसका फल भी प्रथम प्राप्त होगा।

(११) लग्नेश की स्थिति जिस भाव में होगी, वह भाव शुभ फल देने वाला होगा जैसे कि लग्नेश पाँचवें भाव में स्थित होतो वह सन्तान सुख की प्राप्ति करायेगा ।

(१२) कोई भी एक ग्रह दो केन्द्र स्थानों का अधिपति हो वह अपने शुभत्व से वंचित हो जाता है। किन्तु. उन दोनों केन्द्र भावों में एक ही लग्न होने पर शुभत्व नष्ट नष्ट नहीं होता।

(१३) यदि चतुर्थ भाव का अधिपति पंचम भाव में हो और पंचम भाव का अधिपति चतुर्थ भाव में, तो इसे श्रेष्ठ फल देने वाला योग समझिये ।

(१४) यदि नवम भाव का अधिपति दशम में और दशम भाव का अधिपति नवम भाव में हो तो यह योग अत्याधिक श्रेष्ठ और अत्यन्त शुभ सूचक होगा ।

(१५) यदि चतुर्थ, भाव का अधिपति पंचम भाव में, पंचम भाव का चतुर्थ भाव में, नवम भाव का दशम भाव में और दशम भाव का अधिपति नवम भाव में हो तो वह योग सर्वश्रेष्ठ समझना चाहिए। ऐसा जातक अत्यन्त सौभाग्य शाली, सुखी, यशस्वी, प्रतिष्ठित, राज सम्मानादि मे सम्मानादि, दाम्पत्य जीवन तथा सन्तान-सुख से सुखी धनवान और सर्व समर्थ होता है ।

(१६) अष्टमेश सूर्य और चन्द्रमा सदा शुभ फल देने वाले होते हैं। जबकि अष्टमेश ग्रहों को दोष-युक्त समझा जाता है ।

(१७) किसी ग्रह का अष्टमेश और लग्नेश दोनों ही होना उसे अष्टमेश होने के दोष से बचाता है। इसलिए वह भी फल प्रदान करने वाला रहेगा ।

(१८) शुभ ग्रहों की स्थिति त्रिक स्थान में हो तो इससे त्रिक स्थान का दोष घट जाता है। किन्तु त्रिक में बैठे होने के कारण वे ग्रह अपने शुभत्व से वंचित होकर अशुभ फल दिखाते हैं।

(१९) इसके विपरीत—पाप ग्रहों का त्रिक भाव में स्थित रहना त्रिक भाव को तो पाप युक्त बना देता है, किन्तु त्रिक में स्थित रहने के कारण वे ग्रह स्वयं को शुभ फल देने बना वाला लेते है।

(२०) द्वादशेश को शुभ नहीं माना जाता, वह जिस भाव में स्थित होगा, उसी को अशुभ बना देगा।

(२१) जिस भाव में जिस ग्रह की स्थिति है, उस ग्रह का प्रभाव पड़ने की अपेक्षा, उस भाव को जो ग्रह देखता हों, उसका प्रभाव अधिक पड़ेगा।

(२२) यदि कोई भाव, उसका अधिपति तथा उस भाव का कारक, यह तीनों ही ग्रह वलवान हों तो उस भाव का पूरा शुभ फल प्राप्त होगा।

(३२) यदि भाव और उसका अधिपति दोनों वलवान हों तो अल्प शुभ फलदायक समझिये।

(२४) अपनी राशि में स्थित किसी ग्रह के साथ यदि केतु भी स्थित हो तो वह स्वराशिस्थ ग्रह अत्यन्त वलवान होकर अपना बहुत सुभ फल दिखाता है।

(२५) सूर्य और चन्द्रमा के अतिरिक्त जो ग्रह स्वराशि में स्थित हो, वह अपनी दूसरी राशि को भी शुभ बना वेता है।

(२६) यदि कोई ग्रह किसी भाव अथवा ग्रह से दसवें भाव में बैठा है तो वह दूसरे ग्रह पर भी नियन्त्रण रखेगा और उसका वही प्रभाव होगा, जो कि दृष्ट ग्रह का होता है।

(२७) चतुर्थेश और पंचमेश दोनों का एक साथ १, २, ४, ५, ७ ९ या १० वें भाव में स्थित होना शुभ फल देने वाला समझा जाता है।

(२८) यदि उन भावों में नवमेश और दशमेश दोनों ही हों तो अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेंगे।

(२९) यदि चतुर्थेश पंचमेश, नवमेश, और दशमेश चारों ही १, २ ४, ५, ७, ९, १२ भाव में हों तो यह योग जातक को अत्यन्त सौभाग्य शाली बनाता है। उसे धन, सन्तान, मान-प्रतिष्ठा, सुयश वैभव श्रेष्ठ पत्नी आदि किसी की भी कमी नहीं रहती।

(३०) जो ग्रह स्वाभाविक रूप से शुभ होता हुआ भी अशुभ भाव का अधिपति है तो वह उस भाव से प्रभावित होकर अशुभ फल ही प्रदान करेगा।

(३१) किन्तु यदि पाप ग्रह भी शुभ भाव का अधिपति होगा तो शुभत्व को प्राप्त होकर शुभ फल देगा।

(३२) कोई भी ग्रह चाहे स्वाभाविक रूप से शुभ हो अथवा अशुभ, जिस राशि में स्थित होगा, उस राशि के अधिपति को अपने गुणों से प्रभावित किये बिना नहीं रहेगा। तथा उसका फल भी उसी प्रकार प्राप्त होना निश्चित है।

(३३) जिस भाव में राहु या केतु अथवा दोनों की स्थिति हो उस भाव के स्वभाव को प्राप्त होकर अपना शुभ फल या अशुभ फल प्रदान करते हैं।

राहु या केतु जिस भाव में बैठे हों,उस भाव का अधिपति (आवेश) यदि शुभ है तो शुभ फल देंगे और यदि अशुभ है तो अशुभ फल दिखायेंगे।

(३४) राहु में शनि के पचास प्रतिशत गुण स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि राहु अपने से प्रभावित राशि को शनि के प्रभाव से आधा फल प्रदान करेगा।

(३५ इसी प्रकार केतु में मंगल के ५० प्रतिशत गुण रहते हैं और उनका फल भी उसी अनुपात में होता है।

(३६) शनि और राहु दोनों का स्वभाव विच्छेदनात्मक है। यदि धन-भाव शनि है तो धन की न्यूनता रहेगी। यदि धन भाव में केतु हो तो अर्द्ध न्यूनता समझिए।

(३७) यदि एक ही ग्रह दो भावों का अधिपति हो तो और एक भाव शुभ और दूसरा अशुभ फल वाला हो तो यह योग शुभ या अशुभ, कैसा भी फल नहीं दिखाता। क्योंकि दो भावों में से एक की शुभता और दूसरे की अशुभता दोनों के फलों को नष्ट कर देती है।

(३८) यदि एक गृह दो भावों का अधिपति होने के साथ ही त्रिकोण का भी अधिपति हो तो यह योग अशुभ भाव के फल को नष्ट करके शुभ भाव का फल प्रत्यक्ष करता है। इस प्रकार इस योग को शुभ फल देने वाला समझना चाहिए।

(३९) अष्टमेश का दोष केन्द्रेश या त्रिकोणेश होने से नष्ट नहीं होता। अर्थात् अष्टमेश ग्रह चाहे केन्द्रेश हो अथवा त्रिकोणेंश, उसका अशुभत्व रहता है और वह अशुभ फल प्रदान करता है।

(४०) परन्तु कोई अष्टमेश गृह लग्नेश भी हो तो उसका अष्टमत्व दोप नष्ट हो जाता है और वह दोष-रहित रह कर शुभ फल का देने वाला होता है।

(४१) लग्नेश की अपेक्षा चतुर्थेश अधिक वलवान होता और अधिक शुभ फल प्रकट करता है।

(४२) चतुर्थेश की अपेक्षा सप्तमेश अधिक बली होता है और सप्त मेश की अपेक्षा दशमेश अधिक बली रहता है। इस प्रकार यह उत्तरोत्तर अधिक वलवान और अधिक शुभ फल देने वाले होते हैं।

(४२) त्रिकोणेंश हुआ कोई भी गृह, चाहे पाप गृह हो या शुभ सदा शूभ ही रहता हैं।

(४४) त्रिकोण में पंचमेश बली होता है। किन्तु पंचमेश से अधिक वलवान नवमेश को समझिये।

(४५) यदि एक ही गृह केन्द्र और त्रिकोण दोनों का ही अधिपति हो बहुत अच्छा फल दिखाता है।

(४६) त्रिषडाय (३, ६, ११ भावा) में तृतीयेश बली होता है। किन्तु तृतीयेश की अपेक्षा षष्ठेश और षष्ठेश की अपेक्षा एकादशेश बलवान माना जाता है।

(४७) कोई भी ग्रह स्वभाविक शुभ होते हुए भी केन्द्रेश होने पर अपना शुभत्व नष्ट कर बैठते हैं। इस प्रकार स्वाभाविक अशुभ ग्रह केन्द्राधिपति होने पर अपना पाप-दोष छोड़ देते हैं।

(४८) कोई भी शुभ ग्रह यदि केन्द्र और त्रिकोण दोनों का हो अधिपति है तो उसका शुभत्व अक्षुण्ण बना रहेगा।

(४९) यदि कोई दो केन्द्रों का स्वामी ग्रह त्रिकोणाधिपति के साथ स्थित होतो उसका केन्द्रत्व दोष नष्ट हो जाता है और वह अपना शुभफल दिखाता है।

(५०) यदि कोई ग्रह त्रिकोण में स्थित रह कर केन्द्राधिपति से सम्बन्ध हो तो अल्पयोग कारक रहेगा।

(५१) किन्तु केन्द्र में विद्यमान ग्रह यदि त्रिकोणेश से सम्बन्थ स्थापित करे तो यह अति योग कारक लक्षण होगा।

(५२) यदि तृतीयेश तृतीय में हो तो शुभफल नहीं दिखा सकता, वरन् तटस्ट हो जाता है।

(५३) इस प्रकार षष्ठेश षष्ट भाव में या एकादश भाव में स्थित हो तो भी उनकी तटस्थता व्यक्त होगी।

(५४) राहु या केतु की स्थिति जिस भाव में भी होगी, उसी भाव को वे अपने गुणों से पूरित कर देते हैं, उस स्थित में वे उस भाव के अधिपति के समान होकर फल प्रदान करते हैं।

(५५) राहु या केतु जिस ग्रह के साथ स्थित होते हैं, उसी ग्रह के समान स्वयं को बना लेते और उस ग्रह के प्रभाव को दुगुना करके वैसा ही फल दिखाते हैं।

(५६) जिन भावों के अधिपति अस्त ग्रह हों, उनका फल भी नगण्य ही होता है।

(५७) निम्न अंशों तक सूर्य के पास पहुँचने पर ग्रह अस्त माने जाते हैं—

चन्द्रमा—१२ अंशों तक।

मंगल—१७ अंशों तक।

बुध—१३ अंशों तक।

वक्री बुध—१२ अंशों तक।

बृहस्पति—११ अंशों तक।

शुक्र—६ अंशों तक।

वक्री शुक्र—८ अंशों तक।

शनि—१५ अंशों तक।

इस प्रकार से अस्त ग्रहों का फल नगण्य होता अथवा कुछ भी नहीं होता।

(५८) यदि एक ही भाव में दो ग्रह स्थित हों तो उनका पारस्परिक सम्बन्ध माना जाता है और वे फलादेश को सम्मिलित रूप से प्रभावित करते हैं।

(५९) यदि केन्द्र स्थानों में दो ग्रह स्थित हों तो भी एक दूसरे को परस्पर में प्रभावित करते और अपना शुभाशुभ फल प्रत्यक्ष करते हैं।

(६०) यदि दो ग्रह परस्पर एक-दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो भी उनका पारस्परिक सम्बन्ध माना जायगा और वे परस्पर में एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए फलादेश को भी वैसा ही बनायेंगे।

(६१) सूर्य का कारकत्व आत्मा, पिता, ऐश्वर्य, स्वास्थ्य शक्ति तथा प्रभाव माना जाता है। फलादेश के समय इस पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। यह प्रथम नवम और दशम भावों का कारक ग्रह है।

(६२) चन्द्रमा का कारकत्व माता, सम्पत्ति मन, बुद्धि और राज्यानुग्रह आदि समझना चाहिए। यह चौथे भाव का कारक ग्रह है।

(६३) मंगल का कारकत्व भाई, साहस, रोग, शत्रु पृथिवी लघुत्व तथा गुरुत्व है। यह ग्रह तीसरे भाव का कारक माना जाता है। षष्ठ भाव का भी कारक है।

(६४) बुध का कारकत्व बन्धु, विद्या, कार्य, क्षमता, मित्र, विवेक-बुद्धि और वाणी आदि है। इसे भी चतुर्थ भाव का कारक ग्रह समझना चाहिए।

(६५) वृहस्पति का कारकत्व शरीर का गठन, सुन्दरता शरीर, पुत्र और धन-सम्पत्ति है। इसे द्वितीय पंचम, नवम और एकादश भावों का कारक ग्रह समझना चाहिए।

(६६) शुक्र का कारकत्व प्रेम, सुख, पत्नी आभूषण और वाहन समझना चाहिए। यह सातवे भाव का कारक ग्रह माना जाता है।

(६७) शनि का कारकत्व संकट, मृत्यु का कारक आयु, आजीविका तथा नौकरी आदि है। यह षष्ठ, अष्ठम और द्वादश भाव का कारक ग्रह है।

(६८) राहु कारक पितामह (बाबा) हैं।

(६९) केतु का कारकत्व मातामह (नाना) है।

(७०) यदि एक ग्रह शुभ भाव का स्वामी होकर भी कारक भाव का स्वामी भी हो तो ग्रह अकारक के ही समान फल दिखाने वाला होता है।

(७१) यदि शुभ की स्थिति षष्ठ भाव में हो तो शुभ योग समझिये। यह किसी प्रकार से अर्थ संकट उपस्थित नहीं होने देता। इसे योगकारी मानते हैं।

(७२) किन्तु यदि बारहवें भाव में शुक्र हो तो यह अत्यन्त धन की सम्पन्नता व्यक्त करने वाला योग है। अत्यन्त धन के साथ मान प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि भी देने वाला है।

(७३) यदि किसी एक भाव पर दो या अधिक ग्रहों की दृष्टि हो तो उनमें जो ग्रह अधिक बलवान होगा। उसी का सबसे अधिक प्रभाव होगा। यदि वह अशुभ हुआ तो अशुभ फल और यदि शुभ हुआ तो शुभ फल प्रदान करेगा।

(७४) परन्तु एक भाव पर अधिक ग्रहों की दृष्टि में सर्वाधिक बलवान ग्रह के अतिरिक्त अन्य विपरीत प्रभाव वाले ग्रहों की अधिकता हो तो वे भी अपना कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डालेंगे और इस प्रकार फलादेश भी वैसा ही रहेगा।

(७५) यदि धनेश, आयेश और राहु एक साथ धन भाव में स्थित हों तो योग आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति करने वाला समझा जायगा।

(७६) यदि नीच राशिस्थ कोई शुभ ग्रह लग्न भाव में हो तो इससे नीच राशि का दोष नष्ट होकर शुभ फल मिलता है।

(७७) यदि कोई ग्रह अष्टमेश और नीच राशि में हो तो उसका दोष दूर हो जायेगा।

(७८) यदि नीचस्थ गृह चन्द्रमा से केन्द्र भाव में स्थित हो तो भी नीचत्व दोष नष्ट होता है।

(७९) यदि किसी नीचराशिस्थ ग्रह पर उसकी नीच राशि के अधिपति की पूर्ण दृष्टि हो तो नीचत्व दोष नहीं रहता।

(८०) यदि नीच राशिस्थ गृह की नीच राशि का अधिपति लग्न में हो तो भी नीचत्व दोप भंग हो जाता है।

(८१) यदि नीच राशि में स्थित ग्रह का अधिपति तथा उसी नीच ग्रह की उच्च राशि का अधिपति केन्द्र में पारस्परिक रूप में स्थित हों तो नीचत्व भंग होता है ।

(८२) जब किसी ग्रह का नीचत्व दोष नष्ट हो जाता है तब उस गृह के दोष-मुक्त होने के कारण उस राशि का अधिपति द्विगुणित बल से सम्पन्न होकर अधिक शुभ फल दिखाता है।

(८३) द्वितीय भाव विशेष मारक समझा जाता है और यह किसी अशुभ योग के साथ घातक बन सकता है ।

(८४) द्वितीयेश को मारक से भी प्रबल मानते हैं और उनकी संज्ञा मारकेश भी हो जाती है ।

(८५) यदि मारकेश (द्वितीयेश) मारक भाव में स्थित हुआ हो तो यह योग मृत्यु की आशंक व्यक्त करता है ।

(८६) यदि राहु अथवा केतु अकेला ही त्रिकोण में स्थित हो तो शुभ फल दिखायेगा ।

(८७) यदि राहु या केतु में से एक लग्न भाव में अकेला ही बैठा हो तो भी शुभकारी समझा जाता है ।

(८८) यदि राहु या केतु दूसरे अथवा बाहरवें भाव में हो तो तटस्थ फल वाले अथवा सम रहेंगे ।

(८९) किन्तु राहु या केतु अष्टम भाव में स्थित होकर पाप युक्त हो जाते और अशुभ फल दिखाते हैं ।

(९०) यदि चन्द्रमा बुध, बृहस्पति या शुक्र सप्तमेश हों तो मारक प्रभाव वाले समझे जाते हैं ।

(९१) किन्तु सप्तमेश चन्द्रमा अल्प रूप में ही मारक समझना चाहिए ।

(९२) यदि बुध सप्तमेश हो तो चन्द्रमा की अपेक्षा कुछ अधिक मारक माना जायगा ।

(६३) यदि बृहस्पति सप्तमेश हो तो वह विशेष रूप से मारक समझा जाता है।

(६४) परन्तु, सप्तमेश शुक्र बृहस्पति की अपेक्षा कम मारक होता है।

(६५) षष्ठेष की स्थिति किसी भी भाव में क्यों न हो, जिसमें भी होगी उसी भाव पर अशुभ प्रभाव डालेगा और उस भाव के फल को अशुभ बना देगा।

(६६) यदि केन्द्रेश और त्रिकोणेश का परस्पर में सम्बन्ध हो तो वह एक दूसरे की दशा में शुभ फल देने वाले होते हैं। परन्तु पारस्परिक सम्बन्ध न होने की अवस्था में अशुभ फल दिखाते हैं।

(६७) केन्द्रेश त्रिकोणेश और त्रिषडायेश परस्पर सहधर्मी माने जाते हैं और तदनुसार फल दिखाते हैं।

(६८) लग्न भाव में सूर्य की राशि (सिंह) हो तो यह योग शुभ समझा जायगा। यदि लग्न भाव शुभ तथा योग कारक ग्रहों से द्रष्ट हो तो जातक को अत्यन्त पराक्रमी और प्रभावशाली बना देगा।

(६६ किन्तु योगकारक ग्रह की महादशा में पाप रूप अन्तर्दशा आने पर प्रारम्भ में शुभ फल और बाद में अशुभ फल उत्पन्न होगा है।

(१००) परन्तु योगकारक की महादशा में योगकारक अन्तर्दशा हो तो पूर्ण रूप से शुभ फलदायिनी दशा होती है।

— — —

द्वादश भाव फलादेश-निर्णय

विचारणीय तथ्य

अब बारहों भावों क विस्तृत रूप से फलादेश पर विचार किया जाता है। किसी भी जन्म कुण्डली का अध्ययन करने से पूर्व निम्न तथ्य विचारणीय होते हैं—

(१) भाव और उसकी राशि।

(२) भाव में विद्यमान ग्रह, यदि कोई हो तो।

(३) भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(४) भाव का अधिपति ग्रह और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(५) भाव के कारक ग्रह की कुण्डली में स्थिति।

प्रथम भाव

यदि व्यवसाय सम्बन्धी विचार करना है तो प्रथम ग्रहों से संबंधित व्यवसाय का निर्णय किया जाता है—

सूर्य—कागज, कपड़ा, घास, रूई, खेती या खेती से उत्पन्न वस्तुयें फल, अनाज इत्यादि।

चन्द्रमा—चित्रकारी, फोटोग्राफी, पानी से सम्बन्धित वस्तुओं का व्यापार पेय पदार्थ, सुगन्धित पदार्थ, काँचकी वस्तुयें, कलात्मक वस्तुयें, सजावट का सामान, अभिनय सर्राफे की वस्तुये रत्न-आभूषणों आदि।

मंगल—कोयला, सीमेंट, रंग नमक, किराना, औषधि, वैद्यक, हिकमत, डाक्टरी, वकालात इन्जिनियरी, पुलिस, मिलिटरी, तम्बाकू, खनिज तैल, विद्युत का सामान, घड़ियां आदि।

बुध—पशुओं से उत्पन्न वस्तुयें, ऊन, दूध, दही घी, मक्खन चर्बी कन्फेक्शनरी हलवाईगीरी, गणित, ज्योतिष, मुनीम, एकाउटेंसी, भौर-गत (लेन-देन) आदि।

बृहस्पति—पशुओं से उत्पन्न वस्तुयें, कनफैक्शरी, कमीशन ऐजेन्टी, दलाली, आयात-निर्यात, अध्यापन, लेखन, सम्पादन, प्रकाशन आदि।

शुक्र—कलात्मक वस्तुए', सजावट की वस्तुए', चित्रकारी, फोटोग्राफी सिनेमा, अभिनय, संगीत, तैल-व्यवसाय, क्लर्की तथा अध्यापन आदि।

शनि—सरकारी ठेके, बीमा, एजेण्टी, लॉटरी-विक्रय, तथा मशीनरी आदि।

शारीरिक स्वास्थ्य एवं गठन—

शारीरिक स्वास्थ्य एवं शारीरिक गठन के विषय में जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (लग्न भाव) का अध्ययन करते समय इन तथ्यों पर ध्यान देना अपेक्षित है।

(१) यदि कुण्डली में लग्न भाव, लग्नेश तथा लग्न भाव का कारक ग्रह बलवान हो तो यह अच्छे स्वास्थ्य का सूचक है। यह योग शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना व्यक्त करता है। ऐसा जातक मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहना चाहिए।

(२) यदि प्रथम भाव का कारक ग्रह (सूर्य) त्रिक स्थान में न होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो यह लक्षण भी अच्छे स्वास्थ्य का सूचक समझना चाहिए।

(३) यदि प्रथम भाव में कारक ग्रह (सूर्य) केन्द्र में शुभ राशि पर हो तथा कारक मगल या ऐसे ही अन्य ग्रह के द्वारा दृष्ट हो तो समझना चाहिए कि जातक बलवान तथा हृष्ट-पुष्ट होगा।

(४) यदि प्रथम भाव में किसी शुभ की राशि हो तथा उसे कोई अशुभ ग्रह न देखता हो तो यह योग भी उत्तम स्वास्थ्य की सूचना देता है।

(५) लग्नेश की केन्द्र-त्रिकोण में स्थित और शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो भी श्रेष्ठ स्वास्थ्य का सूचक समझिये।

(६) प्रथम भाव में सूर्य ग्रह की राशि (सिंह) हो और उसका गुरु से किसी प्रकार सम्बन्ध हो तो वस्त्र व्यवसाय में लाभ के साथ श्रेष्ठ स्वास्थ्य भी बताता है।

(७) यदि लग्न भाव से चन्द्रमा का सम्बन्ध हो तो जातक अभिनय आदि में सफल हो सकता है। उसके शरीर में स्फूर्ति और साहस भी रहेगा।

(८) यदि मंगल का सम्बन्ध प्रथम और षष्ठ भाव से है तो जातक अच्छे स्वास्थ्य का, साहसी तथा शूर-वीर होगा ऐसे व्यक्ति सेना या पुलिस के कार्य में सफल होते हुए पदोन्नति का अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

(९) गणितज्ञ होने के लिए दिल और दिमाग दोनों ही स्वस्थ रहने चाहिए। इसके लिए लग्न भाव से बुध का सम्बन्ध होना अपेक्षित होगा।

द्वितीय भाव

जन्म कुण्डली में इस भाव की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। इस भाव के द्वारा मुख्यतया पारिवारिक सुख-शान्ति तथा आर्थिक स्थिति के विषय में अध्ययन किया जाता है—

(१) यदि द्वितीय भाव में शुभ ग्रह या शुभ ग्रह की राशि हो तो आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। किन्तु यह आवश्यक है कि द्वितीय भाव अशुभ ग्रह न देखता हो अथवा उसमें किसी अशुभ ग्रह की विद्यमानता न हो।

(२) यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश की स्थिति केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो भी आर्थिक स्थिति दुर्बल नहीं होती।

(३) यदि केन्द्र में द्वितीयेश हो तथा वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी धन के मामले में आत्म निर्भरता व्यक्त करने वाला योग होगा। यदि स्वगृही हो तो भी शुभ होगा।

(४) यदि द्वितीय भाव में सूर्य स्वगृही, उच्चस्थ तथा शुभ युक्त शुभ दृष्ट हो तो जातक को पर्याप्त धन की प्राप्ति होती है और वह सुखी रहता है।

(५ यदि द्वितीय भाव में चन्द्रमा स्वराशिस्थ या उच्चस्थ हो तो यह धन तथा परिवार की सम्पन्नता का सूचक है। ऐसा जातक मधुर भाषी होता है।

(६) यदि दूसरे भाव में मंगल स्वगृही या उच्चस्थ हो तो जातक के धनी, मेधावी और समृद्ध परिवार का सूचक है।

(७) यदि दूसरे भाव में स्वगृही या उच्चस्थ बुध हो तो यह लक्षण भी बड़े परिवार तथा धन की सम्पन्नता का है। ऐसा जातक धार्मिक विचार का तथा श्रेष्ठ सन्तानवान होता है।

(८) यदि द्वितीय भावस्थ गुरु स्वगृही या उच्च का हो तो जातक धनी, बुद्धिमान, धर्म में रुचि रखने वाला, दीर्घजीवी तथा सुखी होता है।

(९) यदि द्वितीय भाव में शुक्र की स्थिति स्वराशि पर या उच्च राशि पर हो जातक को कुटुम्बियों से सुख मिलता है। ऐसा जातक बलवान भी होता है।

(१०) यदि द्वितीय भावस्थ शनि उच्चस्थ या स्वगृही हो तो जातक धन सम्पन्न होना चाहिए।

(११) यदि राहु या केतु दूसरे भाव में स्वराशिस्थ या उच्चस्थ हों तो यह लक्षण जातक के धनिक और बड़े कुटुम्ब का होने का है।

तृतीय भाव

जन्म कुण्डली के इस भाव से विदेश यात्रा तथा भाई के सुख का

विचार करते हैं। यद्यपि पूर्व काल से विदेश यात्रा सम्बन्धी अध्ययन के लिए नवम भाव का अवलोकन किया जाता रहा है, परन्तु आधुनिक ज्योतिषियों ने अपने अनुभव के आधार पर तृतीय भाव को इसके लिए अधिक उपयुक्त माना हैं। यहां इस भाव के विषय में विवेचन किया जाता है—

तीसरे भाव का कारक ग्रह मंगल है, इसलिए मंगल की प्रबलता विदेश यात्रा का योग बनाती है। यदि तृतीय भाव, तृतीयेश और मगल तीनों ही प्रबल हों तो विदेश यात्रा का अवसर अवश्य प्राप्त होना चाहिए।

विदेश यात्रा के लिए मस्तिष्क की प्रबलता भी अपेक्षित है तथा मस्तिष्क सम्बन्धी भाव प्रथम माना जाता है। चन्द्रमा यात्रा का कारक ग्रह है, इसलिए प्रथम और तृतीय, दोनों भावों का परस्पर सम्बन्ध होने पर और उनकी प्रबलता ही ऐसा योग बना पाती है। अतएव लग्न भाव से मंगल या चन्द्रमा अथवा तृतीयेश का सम्बन्ध अपेक्षित होता है।

यदि तीसरे भाव में गुरु की स्थिति मिथुन या कन्या राशि पर हो तो जातक को सुदूर तीर्थ यात्रा का सुयोग प्राप्त होगा।

भ्रातृ सुख (भगिनी सुख) का अवलोकन करने के उद्देश्य से तृतीय भाव में शुभ राशि, शुभ ग्रह, शुभ ग्रह दृष्ट आदि की प्रबलता देखनी चाहिए। यदि तृतीय भावस्थ सूर्य स्वराशिस्थ, उच्च राशिस्थ या शुभ युक्त दृष्ट है तो जातक को भाइयों का अच्छा सुख मिलता है।

यदि चन्द्रमा तीसरे भाव में स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त व शुभ दृष्ट हो तो भी जातक को भाइयों का अच्छा सुख मिलना चाहिए। यह योग जातक के पराक्रमी होने का भी सूचक है।

यदि मंगल तृतीय भावस्थ, स्वराशिस्थ, उच्च राशिस्थ, शुभ युक्त या दृष्ट हो तो जातक बड़े परिवार का होता है। किन्तु तृतीय भावस्थ

मंगल यदि सिंह राशि पर हो तो जातक का भाई, बहिन आदि से मतभेद रहता है।

यदि तृतीय भावस्थ बुध मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो भाई-बहिनों का सुख मिलेगा। किन्तु तृतीयस्थ बुध सिंह राशि पर हुआ तो कुटुम्बियों के साथ द्वेष रहने का परिचायक है।

यदि तीसरे भाव में गुरु वृषभ या तुला राशि पर है तो भाइयों से मतभेद उत्पन्न करने वाला योग समझिये।

यदि तृतीय भावस्थ शुक्र धनु या मीन राशि पर हो तो यह योग भाइयों से अनबन कराने वाला है। यदि तृतीयस्थ शुक्र मिथुन या कन्या राशि पर हो तो समझना चाहिए कि जातक को भाइयों की ओर से दुःख प्राप्त होगा।

यदि तीसरे भाव का शनि धनु या मीन राशि पर हो तो भाइयों से द्वेष कराने वाला होगा। यदि मिथुन या कन्या राशि पर है तो बहिनों की ओर से लाभ होना चाहिए।

चतुर्थ भाव

यह भाव भी मानव जीवन से सम्बन्धित अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका उपस्थित करता है। इसे मानसिक सुख-शान्ति के विषय में अत्यन्त आवश्यक समझा गया है। घर, वाहन, मित्र, साक्षी, स्थानान्तरण तथा जीवन से सम्बन्धित आनन्द के विषय में इस भाव के द्वारा अध्ययन किया जाता है। मातृ-सुख के ज्ञानार्थ भी इसी भाव को देखते हैं।

चन्द्रमा मन का अधीश्वर है अथवा मन चन्द्रमा का ही अंश है, इसलिए मानसिक सुख शान्ति के लिए चन्द्रमा का प्रबल होना आवश्यक है। यदि चन्द्रमा का सम्बन्ध चौथे भाव से हो तो यह मानसिक शान्ति बनाये रखेगा। यदि चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा लग्न भाव भी प्रबल हो तो मानसिक शान्ति स्थायी रूप से बनी रह सकती है।

परन्तु शनि मानसिक शान्ति में बाधक हो सकता है। यदि चौथे भाव से शनि का सम्बन्ध बनता हो तो मानसिक अशान्ति उत्पन्न किये बिना नहीं रहेगा। यदि चतुर्थ भाव से शनि का सम्बन्ध ने हो अथवा चतुर्थेश या चन्द्रमा से शनि का सम्बन्ध न रहे तो मानसिक शान्ति अच्छा योग होगा।

यदि चतुर्थ भाव में सूर्य की स्थिति मिथुन या कन्या राशि पर है तो यह योग माता-पिता की ओर से अच्छा सुख प्राप्त कराने वाला है। परन्तु मस्तिष्क पीड़ा के कारण मानसिक अशान्ति भी उत्पन्न कर सकता है।

यदि चतुर्थ भावस्थ सूर्य वृषभ या तुला राशि पर है तो यह योग माता-पिता की सम्पत्ति प्राप्त नहीं होने देता। मकान का सुख भी नहीं मिल पाता।

चतुर्थ भावस्थ चन्द्रमा उच्च राशि या स्वराशि में हो तथा उसे शुभ ग्रह देखते हों या शुभ ग्रह उसके साथ बैठे हों तो अच्छा मातृ-सुख प्राप्त कराने वाला योग समझिये। यही योग मित्र सुख, वाहन-सुख, घर, धरती और खेती आदि से सम्बन्धित सुख प्राप्त कराने में भी उत्कृष्ट समझा जाता है।

यदि चतुर्थस्थ चन्द्रमा मेष या वृश्चिक राशि पर हो मातृ-सुख की कमी व्यक्त करता है। यह योग जातक को रोगी भी बनाता है।

यदि चतुर्थ भावस्थ चन्द्रमा मकर या कुम्भ राशि पर हो तो माता-पिता का सुख, वाहन, ऐश्वर्य आदि की प्रचुरता रहती है। खेती से लाभ और आरोग्य बना रहेगा।

चतुर्थ भावस्थ मंगल उच्चस्थ, स्वगृही तथा शुभ युक्त और शुभ दृष्ट होने पर अच्छा मातृ-पितृ सुख प्राप्त कराता है तथा कृषि और पशु से सम्पन्न करता है।

किन्तु चतुर्थस्थ मंगल वृषभ या तुला राशिस्थ होने पर माता को रोगिणी बनाता और पिता की मृत्यु कराता है। स्वयं जातक भी वाहन के द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है।

चतुर्थ भाव में उच्चस्थ, स्वराशिस्थ, शुभ युक्त-दृष्ट बुध माता-पिता की सम्पत्ति और मातृ सुख प्राप्त कराने वाला है। वह योग मित्र-सुख की प्राप्ति में सहायक है।

यदि चतुर्थ भावस्थ बुध कर्क राशिस्थ हो तो माता के अभाव का सूचक है यदि मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो वाहन-सुख मिलता है किन्तु वाहन ही घातक भी हो जाता है। वह योग मित्रो से मतभेद कराने तथा जातक को ऋणी बनाने वाला भी है। इसलिए मानसिक शान्ति में अधिक बाधक समझिये।

चतुर्थ भावस्थ गुरु स्वराशिस्थ, उच्चस्थ, शुभ युक्त और शुभ दृष्ट होने पर माता-पिता से धन-प्राप्ति तथा खेती से लाभ होना व्यक्त करता है। किन्तु चतुर्थ भावस्थ गुरु का मकर या कुम्भ राशिस्थ होना नितान्त प्रतिकूल योग समझिये। इससे माना की मृत्यु शीघ्र होना तथा पशु द्वारा घात होना माना जाता है।

यदि चतुर्थ भावस्थ शुक्र स्वगृही आदि के रूप में बलवान है हो यह योग अच्छा मातृ-सुख तथा खेती से लाभ प्राप्त कराने वाला है। किन्तु चतुर्थस्थ शुक्र मिथुन या कन्या राशिस्थ है तो माता से क्लेश प्राप्त कराने वाला योग समझिये।

चतुर्थ भावस्थ स्वराशिस्थ, उच्चस्थ, शुभ युक्त व शुभ दृष्टि शनि मातृ-सुख और कृषि जन्य लाभ का सूचक है। यदि मिथुन या कन्या राशि पर हो तो धन का अभाव होने से मानसिक अशान्ति रहती है।

यदि चतुर्थस्थ शनि, वृषभ या तुला राशिस्थ हो तो माता से दुःख मिलना व्यक्त करता है। किन्तु कर्क राशिस्थ हो तो जातक को माता और मित्रों का अच्छा सुख मिलेगा।

यदि चतुर्थ भावस्थ राहु या केतु मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ या सिंह राशि पर हो तो मातृ-सुख अच्छा मिलेगा। पत्नी से भी सुख की प्राप्ति होगी। राज्य से धन आदि की प्राप्ति के कारण मानसिक सुख शान्ति भी बनी रहेगी।

पंचम भाव

जन्म कुण्डली का पंचम भाव सन्तान, शिक्षा तथा लाटरी आदि के अध्ययनार्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बुद्धि, राज्यच्युति आदि का विचार भी इसी भाव से करते हैं।

सन्तान सम्बन्धी विचार करते समय यह ध्यान रहना चाहिए कि यदि पंचम भाव से पुरुष ग्रह का सम्बन्ध हो तो पुत्र, स्त्री, ग्रह से सम्बन्ध हो तो कन्या और नपुंसक ग्रह का सम्बन्ध हो तो नपुंसक उत्पन्न होता है। पहिले बताया जा चुका है कि सूर्य, मंगल और गुरु पुरुष ग्रह, चन्द्र और शुक्र स्त्री ग्रह, बुध पुरुष नपुंसक हैं।

पंचम भाव में स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त-दृष्टि सूर्य अच्छा सन्तान सुख प्राप्त करता है। शिक्षा तथा विवेक की उत्पत्ति करता है। बुद्धि को प्रखर बनाता है।

यदि पंचम भावस्थ सूर्य कर्क राशि पर है तो यह अति कन्या योग समझिये। बुद्धि तीक्ष्ण होती और शिक्षा भी अच्छी प्राप्त होती है। कार्य क्षमता बढ़ती है।

यदि पंचमस्थ सूर्य धनु या मीन राशि पर हो तो जातक बुद्धिमान, विद्वान, तथा धार्मिक विचारों का होता है। किन्तु उसे सन्तान का अभाव रहता है।

यदि पंचमस्थ चन्द्रमा स्वराशिस्थ, उच्चस्थ या शुभ दृष्टि आदि हो तो इसे भी अति कन्या योग समझिये। यदि पंचमस्थ चन्द्रमा सिंह राशि पर हो जातक सन्तान-सुख प्राप्त करता और राज-कार्य में दक्ष होता है।

यदि पंचम भाव में मगल स्वराशिस्थ, उच्चस्थ, शुभ युक्त व शुभ दृष्टि हो तो पुत्र-सुख मिलता है। किन्तु कर्क राशिस्थ हो तो पुत्र का अभाव तथा धनाभाव रहता है।

यदि सिंह राशि एवं पंचम भाव में मंगल हो तो जातक को एक सन्तान तथा राज-सम्मान प्राप्त होता है। यदि वृषभ या तुला राशि पर हो तो जातक बुद्धि-विवेक से रहित तथा क्रोधी होता है।

यदि पंचम भावस्थ बुध स्वराशिस्थ या उच्चस्थ हो तो जातक को सन्तान सुख प्राप्त होता और विवेक बुद्धि की अधिकता होती है। यदि कर्क राशिस्थ हो तो पुत्र से द्वेष करता है।

यदि पंचम भावस्था गुरु बलवान हो तो जातक को पुत्रवान, विद्वान तथा सम्पन्न बनाता है। यदि मकर या कुम्भ राशि पर है तो सन्तान अच्छा मिलता है। किन्तु, धन शिक्षा एवं बुद्धि की कमी रहती है तथा जातक मूर्ख होता है।

पंचम भावस्थ शुक्र भी उच्चस्थ आदि रूप से बलवान होने पर सन्तान सुख अच्छा मिलता है। परन्तु मिथुन या कन्या राशि पर हो तो सन्तान-सुख नहीं मिलता तथा जातक मूर्ख होता है।

यदि पंचमस्थ शुक्र कर्क राशि पर हो तो यह अति पुत्री योग समझिये। किन्तु सिंह राशि पर हो तो अति पुत्र तथा राज्य से धन की प्राप्ति का योग बनेगा।

यदि पंचम भाव में शुक्र मकर या कुम्भ राशि पर हो तो जातक को मूर्ख तथा धन-हीन होने का सूचक है। वृश्चिक राशि पर हो तो राज-कार्य में चतुर होना चाहिए।

यदि पांचवें भाव में शनि की स्थिति उच्चस्थ आदि रूप से हो तो जातक को पुत्र-सुख प्राप्त कराने वाला तथा बुद्धिमान बनाने वाला है। यदि सिंह राशि पर हो तो राज-कार्य में प्रवीण बनाता है।

यदि पंचम भावस्थ शनि वृषभ या तुला राशि में है तो जातक को धन-सन्तान का अभाव रहता है, किन्तु उसे दत्तक पुत्र का सुख प्राप्त होता है।

यदि पंचमस्थ शनि की स्थिति मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो जातक मूर्ख तथा पुत्र हीन होता है। किन्तु मिथुन या कन्या राशि पर हो तो इसे अति पुत्री योग समझिये।

यदि पाँचवें भाव में राहु या केतु की स्थिति स्वगृही या उच्चस्थ आदि रूह से हो तो पुत्र सुख मिलेगा। किन्तु धनु या मीन राशि पर राहु अथवा मिथुन या कन्या राशि पर केतु हो तो सन्तान के लिए दु:खित होना व्यक्त होता है।

पंचम भाव में शुभ ग्रह का होना या पंचम भाव का शुभ ग्रह युक्त होना, पंचमेश का केन्द्र या त्रिकोण में होना, उच्च राशिस्थ होना आदि लक्षण उच्च शिक्षा का योग बनाते हैं।

कुण्डली में गुरु की अच्छी स्थिति भी शिक्षा का अच्छा योग बनाती हैं। क्योंकि शिक्षा का कारक ग्रह गुरु ही है। साथ ही यदि लग्न भाव भी बलवान हो तो यह अत्युच्च शिक्षा का योग समझा जाता है।

पंचम भाव प्रारब्ध या भाग्य सम्बन्धी भाव भी है। यदि यह अधिक बलवान, अति शुभ श्रेष्ठ है तो सहसा धन-प्राप्ति सम्भव है। परन्तु सहसा अति धन-योग तभी बनेगा जब कि कुण्डली में धन-प्राप्ति का प्रबल योग हो। इसके लिए पंचम भाव के साथ द्वितीय भाव और एकादश भाव की प्रबलता भी आवश्यक है। यदि यह तीनों भाव अधिक शुभ हों तो आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति, लाटरी आदि का योग बनता है।

षष्ठ भाव

जन्म कुण्डली में षष्ठ भाव रोग, शत्रु, मुकदमा आदि के विचारार्थ उपयोगी होता है। यदि षष्ठ भाव या षष्ठेश की स्थिति प्रबल हो तो

उसके फल स्वरूप रोग-नाश, शत्रु-नाश तथा मुकदमे या झगड़े-झंझट आदि में विजय के अवसर प्राप्त होते हैं ।

किन्तु षष्ठ भाव और प्रथम भाव से शनि अथवा अन्य अशुभ ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और वह किसी न किसी रोग से पीड़ित रह सकता है।

षष्ठ भाव में उच्चस्थ, स्वगृही शुभ युक्त दृष्ट रूप से सूर्य की स्थिति रोग, और शत्रु दोनों को भगाने वाली होती है। किन्तु शष्ठ भावस्थ सूर्य वृषभ या तुला राशि पर हो तो स्वास्थ्य खराब तथा रोगोत्पत्ति का सूचक है। शत्रु भी प्रबल हो सकते हैं।

यदि षष्ठस्थ सूर्य मिथुन या कन्या राशि पर है तो रोग की दृष्टि से प्रतिकूल योग समझिये। इसके फल स्वरूप हृद्रोग उत्पन्न हो सकता है। किन्तु यह योग शत्रु नाशक है।

यदि षष्ठस्थ सूर्य धनु या मीन राशि पर है तो रोग तथा शत्रु नष्ट होते हैं। किन्तु मकर या कुम्भ राशिस्थ होने पर रोग और शत्रुओं का बल बढ़ जाता है। मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो भी यही फल समझना चाहिए।

छठे घर में चन्द्रमा की उपस्थिति भी स्वगृही आदि के रूह में बलवती होने के कारण रोग और शत्रुओं को नष्ट करने वाली होती है। किन्तु मेष या वृश्चिक राशिस्थ होने पर जातक रोगी और शत्रुओं से घिरा रहता है। उसे धन की भी कमी होती है।

यदि षष्ठस्थ चन्द्रमा मिथुन या कन्या राशि पर हो तो जातक का सभी के साथ झगड़ा रहता है। यह योग स्वभाव में अधिक उग्रता और साहस उत्पन्न करके भयकर कार्य करने में प्रवृत्त करता है। इसलिए बहुत ही उथल-पुथल रह सकती है।

धनु या मीन राशि पर षष्ठस्थ चन्द्र जातक को सदा रोगी बनाये रखता है। सिंह राशि पर हो तो भी यही स्थिति रहती है। किन्तु मकर या कुम्भ राशिस्थ होने पर रोग और शत्रु नष्ट होते हैं।

षष्ठस्थ मंगल का स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त आदि होना भी रोग और शत्रु नाशक योग है। इसके प्रभाव से कठिन रोग भी ठीक हो जाते तथा मुकदमे में विजय प्राप्त होती है।

परन्तु कर्क राशि युक्त षष्ठ भाव में स्थित मंगल रोग और शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के कार्य में बाधा उपस्थित करता है इससे मुकदमे में हारने की शंका बढ़ जाती है।

यदि षष्ठस्थ मंगल धनु या मीन राशि पर हो तो धन आदि के लाभ के साथ शत्रु नष्ट होते हैं। मुकाबले की लड़ाई हो तो भी विजय प्राप्त होना सम्भव है।

यदि षष्ठस्थ मंगल कुम्भ राशि पर हो तो यह योग भी रोग और शत्रुओं को प्रबल करने वाला है। वृषभ या तुला राशि पर हो तो पत्नी रोगिणी रहेगी। यदि मिथुन राशि पर हो तो यह योग वृद्धावस्था में कष्ट रोग उत्पन्न होने की सूचना देता है।

छठे भाव में बुध का स्वगृही आदि से अधिक बलवान होना रोग और शत्रुओं का नाशक है। किन्तु कर्क राशिस्थ होना जातक के क्षय रोग से पीड़ित होने का लक्षण है।

यदि षष्ठस्थ बुध मेष या वृश्चिक राशि पर है तो जातक को राज्याधिकारी बना सकता है। किन्तु वृषभ या तुला राशि पर हो तो राज्याधिकारियों से मित्रता कराता है।

यदि षष्ठस्थ बुध मेष मकर अथवा कुम्भ राशि पर है तो झंझट में डालने वाला योग समझिये। यह स्वजनों के साथ द्वेष उत्पन्न करता तथा मित्रों को भी शत्रु बना देता है।

षष्ठ भावस्थ बृहस्पति स्वराशिस्थ उच्चस्थ, शुभ युक्त, शुभ दृष्ट हो तो स्वास्थ्य की वृद्धि करता तथा निरोग बनाता हैं। किन्तु मिथुन या कन्या राशि पर हो तो कुष्ट रोग की उत्पत्ति का योग उपस्थित कर सकता है।

यदि षष्ठस्थ गुरु वृषभ या तुला राशि पर हो तो रोग उत्पन्न करता तथा शत्रुओ को प्रवल बनाता है। मकर या कुम्भ राशि पर हो तो भी जातक को रोग और शत्रु परेशान करते हैं।

छठे भाव का शुक्र स्वराशिस्थ आदि रूप से वलवान हो तो रोग और शत्रुओं की वृद्धि करता है मिथुन या कन्या राशि पर होने पर भी रोग उत्पन्न करता तथा धन नष्ट करता है।

यदि षष्ठस्थ शुक्र कर्क राशिस्थ है तो शत्रुओं को प्रबल कर जातक की परेशानी बढ़ा देता है। मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो विष या विषैले जन्तु के काटने से मरण या मरणान्तक पीड़ा की शका व्यक्त करता है।

षष्ठ भावस्थ शनि उच्चस्थ या स्वराशिस्थ होने की स्थिति में जातक को स्वस्थ तथा रोग रहित रखता है। यदि मकर या धनु राशिस्थ हो राज्याधिकार प्राप्त कराता है।

किन्तु षष्ठस्थ शनि का मेप या वृश्चिक राशि पर होना रोग और शत्रु वृद्धि का लक्षण समझिये। कर्क राशिस्थ हो तो सदा रोगी बनाये रखता है। सिंह राशिस्थ हो तो जातक अपने नाना, मामा आदि से विरोध तथा मनमुटाव रखता है।

षष्ठ भावस्थ स्वगृही या उच्चस्थ राहु या केतु रोग को नष्ट करने वाले होते हैं। यदि धनु या मीन राशि नर राहु हो तो नष्ट होते हैं। मिथुन या कन्या राशि पर केतु का होना भी यही फल उत्पन्न करता है।

यदि छठे भाव से चन्द्रमा का और अथम भाव से शनि का सम्बन्ध हो तो हम योग को श्वास रोग उत्पन्न करने वाला समझिये। क्योंकि श्वास रोग का सम्बन्ध चन्द्रमा और शनि दोनों से है। लग्न भाव से चन्द्रमा का और षष्ठ भाव से शनि का सम्बन्ध हो तो भी श्वास रोग की उत्पत्ति सम्भावित होगी।

यदि शनि का सम्बन्ध लग्न भाव, छठे और आठवें भाव से हो तो पक्षाघात हो सकता है। लग्न भाव से स्वास्थ्य के सम्बन्ध में तथा छठे भाव मे रोग के सम्बन्ध में अध्ययन करते हैं। रोगी ठीक होगा या नहीं, इसका विचार आठवें भाव से करना चाहिए।

सप्तम भाव

सप्तम भाव से वैवाहिक जीवन का विषय मुख्य रूप से विचारणीय होता है। व्यापार, यात्रा, खोई हुई वस्तु तथा गुप्त रोग या उदर रोग आदि के विषय में भी इसी भाव से विचार करते हैं।

सातवें भाव में शुभ ग्रह की उपस्थिति या शुभ राशि की विद्यमानता, शुभ ग्रह युक्तता या शुभ दृष्टता का होना दाम्पत्य जीवन का सुखी होना व्यक्त करेगा। यदि सप्तम भाव का कारक ग्रह शुभ स्थिति में है तो पति-पत्नी में प्रेम रहेगा।

सातवें भाव में स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त दृष्ट सूर्य की स्थिति को स्त्री सुख तथा व्यापार में लाभ की प्राप्ति होना सूचित करता है। विदेश या स्वदेश में ही यात्रा से भी धन-लाभ होना चाहिए।

यदि सप्तमस्थ सूर्य मेष या वृश्चिक राशि पर है तो दो पत्नियाँ होंगी और देशाटन का भी अवसर आयेगा।

यदि सप्तमस्थ सूर्य कर्क राशिस्थ है तो गुप्तरोग से पीडित होना व्यक्त करेगा। किन्तु वृषभ या तुला राशिस्थ होने की स्थिति में संदेहास्पद चरित्र की स्त्री वृद्धावस्था में प्राप्त होती है।

यदि सप्तमस्थ सूर्य धनु या मीन राशि पर हो तो व्यापार से लाभ होगा। किन्तु मकर या कुम्भ राशिस्थ होने पर व्यापार में हानि और देशाटन में कष्ट हो सकता है। स्त्री सुख का अभाव भी व्यक्त होता है।

सातवें भाव में चन्द्रमा उच्चस्थ या स्वगृही होना स्त्री-सुख की प्राप्ति तथा देशाटन में लाभ का सूचक है। किन्तु मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो स्त्री से अनबन रहेगी।

मिथुन या कन्या राशि पर सप्तमस्थ चन्द्रमा स्त्री के कारण हो जातक की मृत्यु होना व्यक्त करता है। मकर या कुम्भ राशि पर सप्तमस्थ चन्द्र स्त्री की चारित्रिक दुर्बलता बताता तथा वृषभ या तुला राशि पर हो तो स्त्री से मतभेद सूचित करता है।

सप्तम भाव में मंगल का स्वराशिस्थ उच्चस्थ, शुभ, युक्त और शुभ दृष्टि रूप से स्थित होना भी स्त्री-सुख प्राप्त कराने तथा व्यापार में लाभ दिलाने का योग है। इससे देशाटन के द्वारा भी धन लाभ की सम्भावना व्यक्त होती है।

यदि सप्तमस्थ मंगल सिंह राशि पर है तो स्त्री का चरित्र संदेहमय होता है। यदि मिथुन या कन्या राशि पर है तो इसे दो पत्नी योग समझिये। किन्तु दोनों स्त्रियां नष्ट हो सकती हैं।

यदि सप्तमस्थ मंगल वृषभ या तुला राशि पर है तो जातक को विदेश में जाकर रहने का योग समझिये।

स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त या दृष्ट बुध सप्तम भाव में हो तो व्यापार में लाभ, देशाटन में धन की प्राप्ति तथा सुन्दर सुशील पत्नी की उपलब्धि का योग समझिये।

यदि सप्तमस्थ बुध सिंह राशि पर हैं तो स्त्री का चरित्र संदिग्ध होता तथा राज्य-सम्मान की प्राप्ति होती है। किन्तु कर्क राशिस्थ होने की स्थिति में व्यापार में घाटे और स्त्री से झगड़े की स्थिति बन सकती है। सम्भव है कि तलाक की नौबत आ जाय।

यदि सप्तम भाव का बुध धनु या मीन राशि पर हो व्यापार में हानि और संदिग्ध चरित्र की स्त्री होना व्यक्त होता है। यह योग देशाटन में मृत्यु होना व्यक्त करता है। यदि मकर या कुम्भ राशि पर हो तो जातक का स्त्री के साथ क्लेश हो सकता है।

सातवें भाव में वृहस्पति का स्वगृही या उच्चस्थ होना व्यापार में लाभ और सुखी दाम्पत्य जीवन सूचक है। ऐसा जातक यशस्वी एवं सम्मानित होता है।

सिंह राशि में सप्तमस्थ गुरू व्यापार में लाभ कराता है। इसे खेती के कार्य में तथा देशाटन में भी लाभ का योग समझिये। व्यापार में कुशलता भी इस योग का एक प्रभाव है।

मिथुन या कन्या राशि में सप्तम भावस्थ वृहस्पति विदुषी और धर्म-पालन करने वाली पत्नी की प्राप्ति करता है। यह योग वैवाहिक जीवन की सफलता में सहायक है।

मेष या वृश्चिक राशिस्थ एवं सप्तमस्थ गुरु जातक को व्यापार में प्रचुर लाभ प्राप्त कराता है तथा उसमें विद्वत्ता और विवेक बुद्धि की भी उत्पत्ति कराता है।

यदि सप्तम भावस्थ वृहस्पति मकर या कुम्भ राशि पर हो तो यह योग व्यापार में हानि कराने वाला है। किन्तु जातक को स्त्री-सुख अच्छा प्राप्त होता है।

किन्तु वृषभ या तुला राशि में सातवें भाव पर स्थित वृहस्पति जातक को आर्थिक संकट से परेशान तो करता ही है, साथ ही स्त्री से मन मुटाव उत्पन्न करा देता है।

यदि सातवें भाव में शुक्र की स्थिति स्वगृही या उच्च राशि पर हो तो देशाटन तथा व्यापार में लाभ और अच्छे स्त्री-सुख की प्राप्ति का सूचक है।

यदि सप्तमस्थ शुक्र मिथुन, कन्या, मकर या कुम्भ राशि पर हो तो संदिग्ध चरित्र की स्त्री मिल सकती है। यदि सिंह राशि पर हो तो पत्नी से प्रेम नहीं रहता।

यदि सप्तमस्थ शुक्र मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो जातक की आजीविका शस्त्रों के व्यापार से होता है। फिर भी उसमें पर्याप्त लाभ न होने के कारण आर्थिक कष्ट बना रहता है।

यदि सप्तमस्थ शुक्र कर्क राशि पर हो तो स्त्री विदुषी और बुद्धिमती मिलेगी।

यदि सातवें भाव में शनि की स्थिति स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त या शुभ दृष्ट रूप से है, तो इस व्यापार में लाभ तथा स्त्री-सुख की प्राप्ति का योग समझिये।

यदि सप्तमस्थ शनि मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो इसे देशाटन में धन-हानि होने और संदिग्ध चरित्र की पत्नी प्राप्त होने से सम्बन्धित योग समझना चाहिए।

यदि सप्तम भावस्थ शनि वृषभ या तुला राशि पर हो तो यह स्त्री मिलने और अस्वस्थ्य रहने का योग है।

यदि सप्तमस्थ शनि मिथुन या कन्या राशि पर हो तो जातक धनहीन होता है। यदि धनु या मीन राशि पर हो तो कामुक तथा गुप्त रोग से पीड़ित होता है।

अष्टम भाव

आठवाँ भाव भी मनुष्य की आयु से सम्बन्धित होने के कारण अति महत्व पूर्ण माना जाता है। इससे मृत व्यक्ति धन, ऋण, दुर्ग, छिद्र आदि के सम्बन्ध में भी विचार करते हैं।

अष्टम भाव तथा आयु का कारक ग्रह शनि है। यदि शनि प्रबल हो तो जातक दीर्घजीवी होता है। यदि प्रथम भाव शुभ राशि से युक्त तथा शुभ ग्रह सहित हो, लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा अष्टमेश शुभ स्थिति में हो तो जातक की आयु लम्बी होती है।

यदि अष्टम भाव में सूर्य स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त शुभ दृष्ट रूप से हो तो जातक दीर्घजीवी और सुखी होता है। उसे किसी बात की चिन्ता प्रायः नहीं रहती।

यदि अष्टमस्थ सूर्य मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो नेत्र-रोग, गर्मी आदि की सम्भावना रहती है।

यदि अष्टमस्थ सूर्य वृषभ या तुला राशिस्थ हो तो अर्श रोग से पीड़ित एवं अल्पायु बनाता है।

यदि धनु या मीन राशि पर अष्टमस्थ सूर्य हो तो शरीर में साधारण रोग होगा। किन्तु धन-प्राप्त होगा और ऋण से छुटकारे की स्थिति बनेगी।

यदि अष्टमस्थ सूर्य कर्क राशि पर हो तो वक्षस्थल में पीड़ा होगी। यदि मकर या कुम्भ राशि पर हो तो जातक की आयु कम होगी और वह धनहीन भी रहेगा।

आठवें भाव में चन्द्रमा स्वगृही, उच्चस्थ, शुभ युक्त या शुभ दृष्ट हो तो जातक के स्वस्थ, रोग-रहित तथा दीर्घजीवी होने का लक्षण समझिये।

यदि अष्टमस्थ चन्द्र मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो जातक सदा रोगी रहेगा और आयु कम होगी।

यदि तुला राशि पर आठवें भाव में चन्द्रमा की स्थिति है तो भी अल्प आयु की सूचक है। मिथुन या कन्या राशिस्थ है तो क्षय-रोग से मृत्यु का योग समझिये।

धनु या मीन-राशि पर अष्टमस्थ चन्द्र का होना मध्य आयु में मृत्यु होना व्यक्त करता है। मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो जातक धनहीन और रोगी रहेगा।

अष्टम भाव में मंगल स्वगृही या उच्चस्थ हो तो निरोग और दीर्घायुष्य बनाता है। किन्तु कर्क राशिस्थ या सिंह राशिस्थ हो तो रोगी रहना व्यक्त करता है। सिंह राशि हो तो धन-हानि और आयु की कमी भी सूचित करती है।

वृषभ या तुला राशि में अष्टमस्थ मंगल व्यापार में हानि की स्थिति बनाता और स्त्री की ओर से भी कष्ट की प्राप्ति करता हैं। किन्तु धनु या मीन राशि पर हो तो व्यापार में पर्याप्त लाभ कराता हुआ धनागमन के स्रोत विस्तृत करता है।

यदि अष्टमस्थ मंगल मकर या कुम्भ राशि पर हो तो जातक अल्पायु होता है। स्त्री क्रोधी स्वभाव होने के कारण जीवन में क्लेश बना रहता है।

यदि आठवें भाव में बुध की स्थिति उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ रूप से तथा शुभ युक्त-दृष्ट है तो जातक सदा रोग-रहित, सुखी और दीर्घायु होता है।

यदि आटमस्थ बुध मेष या वृश्चिक राशि पर है तो भी जातक के दीर्घायु होने का योग है। इससे खेती या अनाज के क्रय-विक्रय में लाभ होना भी व्यक्त होता है।

यदि अष्टमस्थ बुध धनु या मीन राशि पर है तो सदा रोगी रहने के कारण आयु भी कम होती है।

यदि कर्क राशि में अष्टमस्थ बुध स्थित है तो रोगी होता है। सिंह राशि में है तो धन हीन होगा। मकर या कुम्भ राशि में है तो जातक दीर्घजीवी नहीं हो पाता।

यदि अष्टम भाव में गुरु की स्थिति स्वगृही आदि रूप से बलवान हो तो यह योग सदा स्वस्थ, निरोग, दीर्घजीवी और धनवान होना व्यक्त करता है।

यदि अष्टमस्थ गुरु मेष या वृश्चिक राशिस्थ हो तो मस्तिष्क में विकार तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी रहती है। मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो जातक रोगी होता है।

यदि सिंह राशिस्थ हो तो धन के मामले में तंग एवं परेशान रहता है। यदि मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो जातक अस्वस्थ, रोगी एवं अल्पायु होगा।

यदि शुक्र की स्थिति अष्टम भाव में स्वराशिस्थ, उच्चस्थ, शुभ दृष्ट हो तो जातक स्वस्थ, दीर्घजीवी, धन-सम्पन्न, किन्तु असुन्दर होता है।

यदि अष्टमस्थ शुक्र मेष या वृश्चिक राशि पर हैं तो जातक को प्राप्त धन में सन्तोष नहीं होता तथा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। आयु भी कम होती है।

यदि मकर या कुम्भ राशि में अष्टमस्थ शुक्र हो तो जातक अल्पायु होता है। यदि सिंह राशिस्थ हो तो भी रोगी और कम आयु का होगा। कर्क राशि पर हो तो पत्नी को रोग रहेगा। धनु या मीन राशि पर हो तो धन की सम्पन्नता होती है।

यदि अष्टम भाव में शनि स्वगृही, उच्चराशिस्थ, शुभ युक्त या शुभ दृष्ट हो तो जातक स्वस्थ, रोग-रहित तथा दीर्घायु होता है।

यदि अष्टमस्थ शनि मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो यह अल्पायु और रोगी बनाने वाला लक्षण है। सिंह राशि पर हो तो गुप्त रोगों से पीड़ित रहता है।

यदि अष्टमस्थ शनि कर्क राशि पर हो तो जातक का अपना जीवन-निर्वाह कठोर परिश्रम से कर पाता है तथा धनु या मीन राशि पर हो तो भिक्षा से आजीविका करता है।

यदि आठवें भाव में राहु या केतु स्वराशिस्थ उच्चराशिस्थ होना जातक का निरोग रहना व्यक्त करता है, किन्तु आयु की दृष्टि से मध्य आयु जीवी होता है।

यदि राहु की स्थिति धनु या मीन राशि पर है अथवा केतु की स्थिति मिथुन या कन्या राशि पर है तो यह योग जातक को रोगी तथा अल्पायु बनाता है।

नवम भाव

नवम भाव में धन-सम्पत्ति युक्त भाग्य का प्रतिनिधित्व करता है। आकस्मिक लाभ (लाटरी आदि) का विचार भी इससे कर सकते हैं। तीर्थयात्रा, भाई की स्त्री, साले तथा धर्म आदि के अध्ययन में भी यही भाव उपयोगी है।

यदि नवम भाव शुभ राशि युक्त शुभ ग्रह युक्त या शुभ दृष्टि हो तथा केन्द्र या त्रिकोण में नवमेश हो तो यह योग भाग्योदय करने वाला हो सकता है। यदि कुण्डली में सूर्य या गुरु की श्रेष्ठ स्थिति हो और लग्न भाव भी प्रबल हो तो यह भी जातक के भाग्यशाली होने का लक्षण है।

यदि सूर्य की स्थिति नवम् भाव में स्वराशिस्थ, उच्च राशिस्थ, शुभ युक्त तथा शुभ दृष्टि हो तो जातक धन से अधिक सम्पन्न भाग्यवान बलवान होता है।

यदि नवमस्थ सूर्य कर्क राशि पर हो तो जातक भाग्यशाली होगा, किन्तु वह प्रवास में रह कर ही लाभ उठा सकेगा। उसे वहाँ अर्थ-संकट का सामना नहीं करना होगा।

यदि मिथुन या कन्या राशि पर नवम भावस्थ सूर्य की स्थिति हो तो जातक को धन-सन्तान की प्राप्ति होती है। उसे स्त्री-सुख शीघ्र मिलता है।

यदि धनु या मीन राशि पर हो तो देशाटन से लाभ होगा। यदि मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो यह योग जातक को मन्द भाग्य वाला बनाता है।

यदि नवम् भावस्थ सूर्य वृषभ या तुला राशि पर स्थित हो तो जातक का माता-पिता से विरोध रहता तथा भाग्य भी कमजोर होता है।

यदि नवम भावस्थ चन्द्रमा स्वगृही, उच्चगृही, शुभ युक्त आदि हो तो जातक का भाग्य बहुत अच्छा समझिये। उसे सहसा किसी स्रोत से पर्याप्त धन की प्राप्ति सम्भव है।

उक्त योग तीर्थ यात्रा का अवसर भी उपस्थित करता है। खेती के कार्य में अनाज के क्रय-विक्रय में पर्याप्त लाभ की सम्भावना बढ़ जाती है। सन्तान से भी सुखी रहता है।

यदि नवमस्थ चन्द्रमा मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो जातक को निम्न स्तर कार्यों से उपार्जन करना पड़ता है। छल-प्रपंच का सहारा लेकर ही धन का सचय नहीं कर पाता।

वृषभ या तुला राशि पर नवमभावस्थ चन्द्र की स्थिति जातक को धन के विषय में सम्पन्न बनाती है : किन्तु मकर अथवा कुम्भ राशि पर हो तो इसका आशय जातक का क्रोधी स्वभाव होने के कारण धन-लाभ के कार्य में भी बाधाएं आती हैं।

यदि नवमस्थ चन्द्र सिंह राशि पर है तो माता-पिता के अल्पायु होने के कारण जीवन के आरम्भ में ही परेशानियाँ आने लगती हैं, इस लिए धनादि की प्राप्ति कठिन होती है।

मिथुन या कन्या राशिस्थ नवम् चन्द्रमा जातक के पिता को दीर्घ-जीवी बनाते हैं, इसलिए धनादि के विषय में सुविधाजनक स्थिति रहती है।

नवम् भाव में जंगल का स्वगृही आदि रूप से बलवान होना देशाटन से पर्याप्त धन-लाभ का सूचक है। ऐसा जातक धन और सन्तान से सम्पन्न, भाग्यवान होता है।

यदि नवमस्थ मंगल धनु या मीन राशि पर हो तो यह योग तीर्थ यात्रा का अवसर प्राप्त कराता है। यदि कुम्भ राशिस्थ हो तो उसकी श्रद्धा धर्म में नहीं होती।

वृषभ या तुला राशि पर नवम मंगल का होना पिता की शीघ्र मृत्यु का सूचक है। ऐसा जातक बुरी संगत में पड़ कर पिता के धन को बर्बाद कर देता है।

यदि नवमस्थ मंगल कर्क राशि पर है तो यह योग देशाटन में दुःख प्रदान करने वाला होगा। ऐसे जातक को सन्तान का अभाव होता है तथा देवता और गुरुजनों के प्रति श्रद्धा नहीं होती।

यदि नवम भाव में बुध की स्थिति स्वराशि पर या उच्च राशि पर है तो यह योग जातक को धन और सन्तान दोनों ओर से ही भाग्य-वान बनाता है। यदि कर्क राशि पर बुध नवमस्थ हो तो धनागम का स्रोत विस्तृत होता तथा सहसा धन की प्राप्ति सम्भव होती है।

यदि नवमस्थ बुध मेष या वृषभ राशि पर हो तो जातक विद्वान किन्तु धन-पक्ष में सामान्य स्थिति का होता है। उसे अति सन्तान योग भी है, जो कि व्यय अधिक कराता और लाभ कम। जातक बातूनी अधिक होता है और बातों के भरोसे ही जीविकोपार्जन कर पाता है। ऐसे व्यक्ति दलाल, एजेन्ट, मुहर्रिर अथवा इसी प्रकार के अन्य कार्य करने वाले हो सकते हैं।

यदि नवम भाव में धनु या मीन राशि में बुध बैठा है तो यह योग धन की कमी होना व्यक्त करता है। ऐसा जातक बलहीन और नास्तिक विचारों का होता है।

वृषभ या तुला राशि पर बुध की स्थिति तीर्थ यात्रा का योग बनाती है। ऐसा जातक सभी कार्यों में दक्ष तथा अच्छे आचरण वाला एवं संयमशील होता है।

यदि नवमस्थ बुध सिंह राशि पर हो तो जातक भाग्यवान, पिता को सुख देने वाला और ईश्वर में विश्वास करने वाला होता है। यह धर्म को सर्वोपरि मानता है।

नवम भाव में स्वगृही या उच्च राशिस्थ वृहस्पति अच्छे भाग्य का सूचक है। वह देशाटन से धन-लाभ का योग बनाता है तथा जातक में धार्मिक अभिरुचि जाग्रत करता है।

यदि मकर या कुम्भ राशि में नवमस्थ वृहस्पति हो तो जातक धन-हीन होता तथा देवता या गुरु से द्वेष करता है।

यदि नवम भावस्थ गुरु मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो जातक पिता का धन प्राप्त करता है। किन्तु वृषभ या तुला राशि में हो तो पिता से द्वेष करता और यात्रा करता है।

सिंह राशि में नवम गुरु जातक को धनवान और परोपकारी बनाता है। मिथुन या कन्या राशि पर हो तो जातक भाग्यवान और यशस्वी होता है।

नवम भावस्थ शुक्र यदि स्वगृही या उच्चस्थ हो तो जातक को देशाटन से लाभ और प्रसिद्धि मिलती है। धन के सम्बन्ध में जातक आत्म-निर्भर होता है। सन्तान सुख भी उपलब्ध रहता है।

मिथुन या कन्या राशि पर नवम शुक्र का होना जातक को भाग्य-हीन बनाता है। ऐसे जातक को देशाटन में दुःख उठाने पड़ते और नीचे कार्य करने होते हैं।

यदि नवमस्थ शुक्र मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो जातक सौ-भाग्य शाली, स्त्री-सुख से सुखी, पुत्रवान तथा दीर्घजीवी होना चाहिए। यदि कर्क राशिस्थ हो तो उसे देशाटन में धन का पर्याप्त लाभ होगा। सिंह राशिस्थ हो तो भाग्यवान होता है।

यदि मकर या कुम्भ राशि में नवम शुक्र हो तो जातक को नीचों का धन प्राप्त होता है। किन्तु धनु राशिस्थ हो तो भाग्यहीन होता है।

शनि का नवम भाव में स्वगृही या उच्चस्थ होना जातक के भाग्य-वान होने का सूचक है। किन्तु मेष या वृश्चिम राशिस्थ होने पर जातक भाग्यहीन होता है।

कर्क राशि में नवमस्थ शनि की स्थिति जातक को मन्द भाग्य बनाती तथा मिथुन या कन्या राशिस्थ होने पर पितृ-सुख का अभाव रहता है।

नवम भाव में राहु या केतु का स्वराशिस्थ आदि होना सौभाग्य का लक्षण है। यदि राहु या केतु कर्क राशि पर है तो व्यापार में लाभ होता है।

यदि धनु या मीन राशि पर राहु अथवा मिथुन या कन्या राशि पर केतु हो तो अभाग्य का सूचक होगा। यदि वृषभ या तुला राशिस्थ हो धन-लाभ का योग समझिये।

यदि नवम भाव में वृहस्पति की शुभ राशि हो और उसमें शुभ ग्रह या उच्चस्थ शुक्र स्थिति हों, उसे वृहस्पति अपनी शुभ दृष्टि से देखता हो तो यह योग सौभाग्यशाली बनाने वाला है।

दशम भाव

इस भाव का प्रमुख रूप से विचारथीय विषय कर्म है और कर्म जीवन आश्रय रूप है, इस लिए दशम भाव भी कम महत्वपूर्ण नहीं है इस भाव से राजयोग, सम्मान, पितृ-सुख, जनुशासन, पद आदेश तथा व्यापार आदि का भी विचार किया जाता है।

दशम भाव में शुभ ग्रह की राशि का होना तथा उसका शुभ युक्त और शुभ दृष्ट होना राजयोग की स्थिति बताता है। यदि दशम भाव का कारक ग्रह सूर्य श्रेष्ठ स्थिति में हो यथा लग्न भाव भी प्रबल हो राजयोग का सुअवसर उपस्थित होता है।

यदि दशम भावस्थ सूर्य राशिस्थ या उच्चस्थ हो तो पिता का धन प्राप्त होकर प्रसिद्धि बढ़ती है। वस्तुत: यह योग राजयोग के समान सौभाग्य प्राप्त कराने वाला है।

मेष राशि भी राज सम्मान और धन प्राप्त कराने में सहायक है। वृश्चिक राशि का भी ऐसा ही फल हो सकता है। किन्तु, दशम भाव में इन राशियों का सूर्य के साथ होना एक विशेष योग प्रस्तुत करता और जातक को भाग्यवान बना देता है।

किन्तु सूर्य का दशमस्थ वृष या तुला राशि में होना प्रतिकूल योग समझिये। यह राज की ओर से असम्मानित करने में सहायक होता है। इसलिए समाज में भी मान-प्रतिष्ठा कम होती है। ऐसे जातक को पितृ सुख भी प्राय नहीं मिल पाता।

धनु या मीन राशि में दशमस्थ सूर्य राजयोग तो उपस्थित करता ही है, राज-कार्य में भी जातक को दक्ष बनाता है। यह योग भाग्य-वर्द्धन में सहायक है।

यदि दशमस्थ सूर्य कर्क राशिस्थ भी हैं तो जातक यशस्वी होगा। यदि मकर या कुम्भ राशिस्थ है तो राज्य की ओर से तिरस्कार प्राप्त होता है। माता-पिता का सुख भी अल्प होता है।

दशम भाव में चन्द्रमा की भी उच्चस्थ या स्वगृही रूप से स्थिति पिता का धन राज-धन तथा व्यापारादि के द्वारा लाभ से उपार्जित धन प्राप्त कराती है।

किन्तु, मेष या वृश्चिक राशि पर दशम चन्द्रमा जातक को राज-दण्ड का भागी बनाता है तथा पितृ-धन से वंचित करता है। ऐसे जातक में गृह-दोष होने पर भी बुद्धि की तीव्रता रहेगी।

यह दशमस्थ चन्द्रमा मिथुन या कन्या राशि पर हो, जातक शुभ कर्मों और कार्यों में दक्ष होता है। यदि सिंह राशि पर हो तो यश प्राप्त कराने वाला समझिये।

मकर या कुम्भ राशि पर चन्द्रमा की दशम स्थिति राज्य से हानि कराती है। ऐसा जातक राज-दण्ड या अधिक कर का भागी होता है। वह पिता से द्वेष भाव रखता है।

उच्च का मंगल राज-सम्मान या राजधन की प्राप्ति में सहायक समझा जाता है। यदि यह दशम भाव में स्वराशिस्थ उच्च राशिस्थ तथा शुभ युक्त दृष्ट है तो यह योग बहुत प्रबल होगा और जातक का राज-सम्मान तथा राज-पुरस्कार की प्राप्ति हो सकती है। पिता में भी धन मिलने की सम्भावना समझिये। ऐसा जातक यशस्वी और सदाचारी होता है।

यदि वृषभ या तुला राशि पर दशम मंगल है तो यह योग जातक को माता-पिता का स्नेह और अन्त में धन की प्राप्ति कराने वाला है। ऐसा जातक परिश्रमी और पराक्रमी भी होता है।

मिथुन या कन्या राशिस्थ दशम मगल जातक के सन्तान योग में बाधा उपस्थित करता है तथा जातक को पितृ-द्वेषी बना देता है।

यदि दशमस्थ मगल धनु या मीन राशि पर हो चित्त में देवता और गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव जाग्रत है। यदि मकर या कुम्भ राशि पर हो तो अनुकूल नहीं रहता। विशेष कर कुम्भ राशिस्थ मंगल जातक को छल-प्रपंच की प्रेरणा देता हैं।

कर्क राशिस्थ दशम मंगल भी प्रतिकूल योग ही समझिये। यह व्यापार में हानि, पितृ धन का वंचन तथा समाज में अपयश का भागी बनाता और राज–भय उपस्थित करता है।

यदि दशमस्थ मंगल सिंह राशि पर हो तो श्रेष्ठ होगा। इसे जातक के सौभाग्यशाली तथा सदाचारी होने का योग समझा जाता है।

बुध यदि अनुकूल हो तो विशेष रूप से धन की प्राप्ति कराकर सौभागशाली बना सकता है, क्योंकि यह दशम भाव का स्वामी है।

यदि यह दशम भाव में स्वराशिस्थ, उच्च राशिस्थ, शुभ दृष्ट या शुभ युक्त हो तो राज-कृपा, राज-सम्मान, राज-धन, पितृ–धन प्राप्त कराता है। व्यापार में अत्यन्त लाभ, लाटरी आदि से धन की प्राप्ति तथा यश की वृद्धि भी इस योग से सम्भव है।

यदि दशमस्थ बुध मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो इसे राजयोग समझिये। जातक को राज्य का अधिकार मिलता तथा धन की प्राप्ति होती है।

वृषभ या तुला राशि में दशमस्थ बुध हो तो जातक धनवान और पुत्रवान होता है। मित्रों की ओर से भी लाभ की वहुत कुछ सम्भावना होती है।

यदि दशमस्थ बुध मीन राशि पर हो तो व्यापार में हानि करने वाला योग समझिये। पिता को भी अनुकूलता और स्नेह प्राप्त नहीं होता तथा समाज में अपयश मिलता है।

सिंह राशि में दशम बुध जातक को ऐश्वर्यवान राज्याधिकारी बनाता है। उसमें दया-भाव भी रहता है। कर्क राशिस्थ हो तो पिता से अनवन रहती है।

गदि मकर या कुम्भ राशि पर दशमस्थ बुध है तो यह योग धन की प्राप्ति तो कराता है, किन्तु छोटे वर्ग से धन मिलने की अधिक सम्भावना रहती है।

वृहस्पति अति प्रवल ग्रह है और जव यह दशम भाव में उच्चस्थ आ स्वगृही रूप से स्थित हो तथा उसे शुभ ग्रह देखते हो या [शुभ ग्रह साध वैंठे हो तो जातक की स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ बना देता है। व्यापार या राज-व्यापार में अपना राज-सम्मान आदि से लाभ रूप में विशेष की प्राप्ति हो सकती है। यह भी सम्भव है कि कोई लाटरी खुल जाय।

यदि मेष या वृश्चिक राशि पर दशमस्थ गुरु हो तो धर्म-कर्म में रुचि तथा संगीत में दक्षता होती है। जातक की कला उसके यश-विस्तार में सहायक होती है।

यदि दशमस्थ गुरु मकर या कुम्भ राशि पर है तो व्यापार आदि में धन-हानि तथा दण्ड रूप में अर्थ-सकट उपस्थित हो सकता है। पिता की भी प्रतिकूलता प्राप्त होती है।

यदि सिंह राशिस्थ है तो कोई ऊँचा राजपद मिलता है। यदि मिथुन या कन्या पर हो तो जातक कवि, साहित्यकार तथा विद्वान् होता है।

शुक्र का स्वभाव उदार होता है। वह दशम भाव में उच्चस्थ या स्वगृही हो तो धन की प्राप्ति में सहायक होता है। उसे राज्य से धन, सम्मान, प्रतिष्ठा मिलनी सम्भव है।

यदि अष्टमस्थ शुक्र मिथुन या कन्या राशि पर है तो जातक नौकरी द्वारा उदर पूर्ति करता है। उसे पिता का स्नेह प्राप्त नहीं होता।

यदि कर्क राशिस्थ हो तो जातक धार्मिक विचार का तथा सुखी होता है। यदि सिंह राशिस्थ है तो राज्य-कृपा अपेक्षाकृत रूप से न्यून ही मिल पाती है।

यदि मेष या वृश्चिक राशि पर दशम शुक्र है तो इच्छित कार्यों की पूर्ति का योग है। यदि मकर या कुम्भ राशिस्थ है तो राज्य-कृपा और धन व ऐश्वर्य की सुलभता होगी। यदि धनु या मीन राशिस्थ है तो जातक यशस्वी तथा कुल की यश-वृद्धि करने वाला होगा।

यदि क्रूर ग्रह होता हुआ भी बलवान होने पर अनुकूल ही रहता है। यदि वह दशम भाव में स्वगृही या उच्चस्थ हो तो जातक को व्यापार में लाभ तथा माता-पिता का पर्याप्त सुख मिलेगा। किन्तु सहराशिस्थ हो तो पिता की ओर से दुःख की प्राप्ति होगी।

यदि दशमस्थ शनि धनु या मीन राशि पर हों तो राज्य से धन की प्राप्ति विशेष रूप से होगी। यदि कर्क राशिस्थ है तो जातक माता-द्वेषी होता और हानि उठाता है।

यदि मेष या वृश्चिक राशि पर दशम शनि है तो राज-दण्ड की आशंका रहेगी। यदि मिथुन या कन्या राशिस्थ है तो पित्त-जन्य रोग हो सकता है।

यदि दशमस्थ शनि वृषभ या तुला राशि पर है तो जातक लालची होते हुए भी तीर्थ यात्रा करने में अधिक रुचि लेता रहेगा।

दशम भावगत राहु-केतु भी उस स्थिति में हितकर हो सकते हैं, जब वे प्रबल हों। अर्थात् स्वगृही या उच्चराशिस्थ शुभ युक्त और शुभ-दृष्ट हों तो जातक को राज्य कृपा प्राप्त कराते और यशस्वी बना देते हैं।

यदि वृषभ, तुला कर्क राशि पर दशम राहु या केतु हैं तो मातृ-धन की प्राप्ति का अच्छा योग उपस्थित करते हैं। ऐसे जातक को राज-कृपा भी मिलेगी।

यदि राहु की स्थिति दशमस्थ धनु या मीन राशि पर हो अथवा केतु की स्थिति मिथुन या कन्या पर हो जातक का पिता से मन-मुटाव रहता है।

यदि दशमस्थ राहु या केतु मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ अथवा सिंह राशि पर स्थित हो तो जातक ने अनुकूल योग समझिये। ऐसा जातक राज्य की ओर से धन, सम्मान प्राप्त कराता और यशस्वी।

यदि दशम भाव में दशमेश बुध उच्चस्थ है तथा दशम भाव का कारक ग्रह सूर्य भी दशम भाव में बैठा है, साथ ही लग्न भाव को बृहस्पति शुक्र दृष्टि से देखता तो इसे प्रबल राजयोग कह सकते हैं।

एकादश भाव

एकादश भाव का स्थान भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे विपरीत एकादश रूप से विचार किया जाता है और आय पर ही

मनुष्य जीवन के सुख की बहुत कुछ निर्भरता है। साथ ही लाभ, वृद्धि, प्राप्ति, प्रशंसा, पशु-धन तथा पुत्र वधु के विषय में भी इस भाव के द्वारा अध्ययन करते हैं।

एकादश भाव का कारक ग्रह बृहस्पति है, यदि कुण्डली में इसकी प्रबल स्थिति हो, एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा एकादश भाव शुभ राशि का हो तथा अशुभ दृष्ट न हो तो अच्छी आय का योग समझना चाहिए।

यदि एकादश भाव में स्वगृही या उच्चस्थ सूर्य स्थित हो तो यह योग जातक की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने में सहायक होगा।

यदि एकादस्थ सूर्य वृश्चिक राशि पर हो तो बुद्धि को भ्रान्त करने वाला योग समझिये। इससे जातक के चित्त में अशान्ति रहने के कारण विवेक की हानि हो सकती है।

यदि वृषभ या तुला राशि पर ग्यारहवें भाव में सूर्य की स्थिति है तो जातक को धनागम के मार्ग में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। सन्तान का सुख भी न मिलने का योग समझिये।

यदि एकादशस्थ सूर्य मकर या कुम्भ राशि पर है तो पुत्र-योग नहीं बनता और धन की भी हानि होती है। यदि पुत्र हो भी तो बुद्धिहीन होगा।

यदि मेष या वृश्चिक राशि पर है तो बुद्धि नष्ट होने पर भी आर्थिक लाभ होता है। पुत्र का अभाव हो सकता है।

यदि मिथुन या कन्या राशि पर हो तो आय और यश में वृद्धि का योग है। कर्क राशिस्थ एकादशस्थ सूर्य अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण प्राप्त कराता है।

यदि एकादशस्थ सूर्य धनु या मीन राशि पर है तो जातक मेधावी, सन्तानवान और धनवान होता है। उसके आय के स्रोत अच्छे होते हैं।

एकादश भाव में चन्द्रमा की स्थिति यदि शुभ या अशुभ दृष्ट हो तो जातक को सब प्रकार से सौभाग्यशाली बनाता है। उच्चस्थ या स्वगृही चन्द्रमा विद्वता का भी सूचक है। जातक को वस्त्राभूषण भी इच्छित रूप में प्राप्त कराता है। पुत्र-सुख की प्राप्ति का भी इसे एक लक्षण समझना चाहिए।

यदि एकादशस्थ चन्द्रमा मेष वृश्चिक राशि पर हो तो जातक में बुद्धि का अभाव रहता है। साथ ही धन और सन्तान की भी कमी रहती है।

यदि मकर या कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा ग्यारहवें भाव में हो तो यह योग अपयश प्राप्त कराने वाला है। यदि बलहीन सिंह राशिस्थ हो तो पुत्र आदि का अभाव रहता है तथा आय की अपेक्षा व्यय अधिक होता है।

यदि वृषभ या तुला राशि पर अष्टम चन्द्रमा हो तो जातक को धन की प्राप्ति होती है।

यदि मिथुन या कन्या राशि पर है तो यह व्यापार में लाभ कराने वाला लक्षण है।

यदि चन्द्रमा एकादश भाव में धनु या मीन राशि पर हो तो अतुल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

मंगल स्वगृही या उच्चस्थ रूप में ग्यारहवें भाव में स्थिति हो तो धन और सन्तान का लाभ होता है। यह योग जातक को बुद्धिमान बनाने वाला भी है।

यदि मगल की स्थिति सिंह राशिस्थ एकादश भाव में है तो जातक को राज्य की ओर से धन की प्राप्ति होती है तथा यश की प्राप्ति होती है।

यदि वृषभ या तुला राशि पर एकादशस्थ मंगल हो तो यह भी धनवान बनाने वाला योग है। यदि मिथुन या कन्या राशि पर हो तो शिक्षा की कमी रहती है।

यदि एकादशस्थ मंगल धनु या मीन राशि पर हो तो राज्य की ओर से धन तो मिलता है, किन्तु वह धन अधिक नहीं होता।

किन्तु एकादशस्थ मंगल यदि कर्क राशि पर है तो जातक के लिए अनुकूल नहीं होता। यह योग सन्तान का अभाव व्यक्त होता है।

बुध यदि ग्यारहवें भाव में स्वगृही या उच्च राशिस्थ के रूप में हो तो यह योग अनुकूल होगा। जातक को अनेक प्रकार के द्रव्य और वस्त्राभूषण प्राप्त होते हैं।

किन्तु धनु या मीन राशि पर एकादश भावस्थ बुध जातक के आय के स्रोतों को सकुचित कर देता है। इस कारण उसे आर्थिक संकट में रहना होता है।

यदि मेष या वृश्चिक राशि पर ग्यारहवाँ बुध हो तो जातक के क्रोधी होते हुए भी राज्य की ओर से धन की प्राप्ति होती है और जातक प्रसन्न रहता है।

यदि वृषभ या तुला राशि पर बुध हो तो इसे अति कल्या योग समझिये। मकर या कुम्भ राशि पर हो तो नीच व्यक्तियों को धन की प्राप्ति होती है।

यदि बुध ग्यारहवें भाव में कर्क राशि पर हो तो जातक रत्नों के संग्रह में समर्थ होता है। तथा उसकी आय का साधन प्रायः व्यवहार ही है।

यदि एकादशस्थ बुध सिंह राशि पर हो तो यह योग जातक को धनवान बनाने वाला है।

वृहस्पति बुद्धिमान और यशस्वी बनाने का गुण रखता है। वह यदि एकादश भाव में स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ हो तो व्यापार में पर्याप्त धन का लाभ करता है। जातक को इच्छित वस्त्राभूषण तथा यश की प्राप्ति होती है।

यदि एकादशस्थ गुरु मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो जातक विद्वान् और धनवान तो होता है, किन्तु पुत्रों की ओर से बहुत कष्ट प्राप्त होता है।

यदि मिथुन या कन्या राशि पर ग्यारहवाँ गुरु स्थित हो तो यह अपयश प्राप्त कराने वाला है। किन्तु सिंह राशिस्थ हो तो वाहन-सुख की प्राप्ति होती है।

ग्यारहवें भाव में शक्र बुद्धिमत्ता का सूचक है। यदि शुक्र की स्थिति स्वराशिस्थ या उच्चस्थ हो तो जातक को पुत्र सुख की भी प्राप्ति होती है।

यदि एकादस्थ शुक्र मकर या कुम्भ राशि पर हो तो म्लेच्छों से धन-लाभ सम्भव है। यदि सिंह राशिस्थ हो तो वाहन-सुख की प्राप्ति होती है।

यदि मिथुन या कन्या राशि में एकादशस्थ शुक्र हो तो यह धन हीनता का सूचक योग है। यदि कर्क राशिस्थ हो तो जातक दयालु चित्त का होता है।

यदि एकादस्थ शुक्र मेष या वृश्चिक राशि पर है तो जातक धनवान और-कार्य में दक्ष होता है। यदि धनु या मीन राशि पर है तो जातक धनवान तथा पुत्रवान् होता है।

शनि का स्वभाव उग्र है और वह ग्यारहवें भाव में स्थित रह कर सन्तान की कमी करता है। यदि शनि उच्चस्थ या स्वराशिस्थ हो तो व्यापार में लाभ तो होता ही है, किन्तु सन्तान की अति संख्या में बाधक बनता है।

यदि मेष या वृश्चिक राशि में शनि एकादश भाव में है तो यह योग धन का संकट उपस्थित किये बिना नहीं रहता। व्यापार आदि में हानि भी सम्भावित है।

यदि ग्यारहवें भाव का शनि वृषभ या तुला राशि पर है तो जातक को धन-सम्पन्न तो बनाता ही है, किन्तु पुत्र पक्ष में बाधक सिद्ध होता है।

यदि मिथुन या कन्या राशि में है तो खेती से लाभ होना चाहिए। धनु या मीन राशिस्थ हो तो जातक धनिक और विद्वान् होना चाहिए। कर्क राशिस्थ हो तो वह ऊँचा व्यवसायी बनना चाहिए।

एकादश भाव में राहु या केतु का स्वगृही हो या उच्चस्थ होना जातक को पुत्रवान् और धनवान बनाता है। उसे व्यापार में पर्याप्त लाभ होता है।

यदि राहु की स्थिति एकादश भाव में धनु या मीन राशि पर हो अथवा केतु की मिथुन या कन्या राशि पर हो तो जातक सन्तान-हीन, धनहीन तथा बुद्धिहीन होता है।

यदि एकादस्थ राहु या केतु मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ अथवा सिंह राशि पर हो तो जातक धनहीन, मूर्ख तथा प्रपंची होता है।

यदि ग्यारहवें भाव में वृषभ, तुला कर्क राशि पर राहु या केतु हो तो जातक को अल्प सन्तान की प्राप्ति होती है, किन्तु वह धनवान होता है।

यदि एकादश भाव में बुध की स्थिति उच्चस्थ हो तथा कारक ग्रह गुरु भी उच्चस्थ एवं त्रिकोणस्थ हो और गुरु की लग्न पर पंचम दृष्टि हो एवं लग्नेश केन्द्र में रहकर लग्न भाव पर दृष्टि रखे तो यह योग अर्थ के पक्ष में प्रबल समझा जायेगा।

द्वादश भाव

जन्म कुण्डली का द्वादश भाव मुख्य रूप से व्यय सम्बन्धी माना जाता है। हानि, ऋण, दारिद्रय, दुःख, शत्रु, जासूस, पाप अथवा शयन-सुख आदि का विचार भी इसी भाव से करते हैं।

द्वादश भाव में शुभ राशि, शुभ ग्रह, दृष्ट हो तथा द्वादशीश का सम्बन्ध शुभ ग्रहों से हो तो व्यय, ऋण, दरिद्रता आदि से छुटकारा होता है। यदि द्वादश भाव शुभ अर्थात् प्रबल हो तो जातक अपने परिश्रम और विवेक के बल पर आर्थिक परेशानियों पर विजय प्राप्त करता हुआ सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है।

यदि द्वादश भाव में सूर्य स्वराशिस्थ या उच्चराशिस्थ हो तो जातक श्रेष्ठ कर्म करने वाला होता है। उसका आचरण शुभ, संयमित जीवन तथा धार्मिक विचार होते हैं। वह अपव्यय कभी नहीं करता, इसलिए अधिक व्यय से बचा रहता है। उसे ऋण लेने की आवश्यकता नहीं होती और यदि कुछ व्यय करता भी है तो पुण्य कार्यों में।

किन्तु द्वादशस्थ सूर्य वृषभ या तुला राशि पर हो तो यह अनुकूल योग नहीं होगा। ऐसा जातक किसी न किसी रोग से पीड़ित रहता है तथा पाप कर्मों में धन का व्यय करता है।

यदि मेष या वृश्चिक राशि पर अष्टम सूर्य हो तो जातक को अभक्ष्य पदार्थों के खाने की लत पड़ जाती है। उसके विलासिता पूर्ण जीवन के कारण धन का व्यय तो अधिक परिमाण में होता है, किन्तु आय के स्रोत संकुचित होते जाते हैं।

मिथुन या कन्या राशि पर द्वादश भावस्थ सूर्य का होना धन की कमी व्यक्त करता है। ऐसा जातक सदैव आर्थिक परेशानी में पड़ा रहता है।

कर्क, धनु या मीन राशि में बारहवें भाव के सूर्य का फल शुभ कार्यों में धन का व्यय कराता है। ऐसा जातक दानशील और परोपकारी होता है। उसके धनागम के स्रोत ठीक रहने के कारण जातक दु:खी नहीं रहता।

बारहवें भाव में उच्च का, स्वगृही या शुभ युक्त चन्द्रमा व्यय तो कराता ही है, किन्तु व्यय शुभ कार्यों में ही होगा। यह योग स्वास्थ्य भी ठीक रखता और दीर्घजीवन प्रदान कराता है।

यदि बारहवें भाव का चन्द्र मेष या वृश्चिक राशि पर है तो धन-नाश का [योग समझिये। जातक का धन आग या चोरी में नष्ट होने की आशंका रहती है। रोगाक्रान्त रहने के कारण व्यय की अधिकता तथा आर्थिक चिन्ता सम्भावित है।

यदि वृषभ या तुला राशि पर द्वादस्थ चन्द्रमा हो जातक उग्र स्वभाव का, विलासी तथा वेश्यागामी होना चाहिए। उसे दुराचरण के कारण अपयश मिलता और धन का अपव्यय होता है।

मिथुन या कन्या राशि पर द्वादशस्थ चन्द्रमा की स्थिति जातक कों अत्यन्त धन-वैभव से सम्पन्न तो बनाती है, किन्तु साथ ही रोगी भी रखती है।

सिंह राशिस्थ द्वादश चन्द्रमा अभक्ष्य पदार्थों के सेवन में रुचि बढ़ा कर अपव्यय करता है। मीन राशिस्थ हो तो जातक की माता रोग ग्रस्त रहेगी। मकर या कुम्भ राशिस्थ होने पर जातक स्वयं रोगी रहता तथा आर्थिक संकट से परेशान रहता है।

बारहवें भाव का मंगल लालच उत्पन्न करता है। वह स्वगृही या उच्चस्थ हो तो लालच की प्रवृत्ति अधिक बढ़ जाती है। इस कारण धन का व्यय कम होता है।

यदि द्वादश मंगल अपनी नीच राशि कर्क में स्थिति है तो शरीर पीड़ित करेगा तथा अग्नि से घात की आशंका व्यक्त करेगा। यह योग बुरे कार्य में अपव्यय का सूचक भी है।

वृषभ तुला राशिस्थ बारहवें भाव का मंगल धनहीन बनाता है तथा मिथुन या कन्या राशिस्थ हो तो अहंकारी और लालची बना देता है।

यदि सिंह राशिस्थ हो तो राज-दण्ड का योग बनेगा। यदि मकर या कुम्भ राशिस्थ है तो वह योग जातक को धनहीन तथा भिक्षा वृत्ति से निर्वाह कराने वाला बनाता है।

यदि धनु या मीन राशि पर बारहवाँ मंगल हो तो अनेक व्यक्तियों से विरोध होगा तथा व्यय भी बढ़ेगा।

द्वादश भाव में बुध का स्वराशिस्थ या उच्चस्थ होना धार्मिक कार्यों में व्यय कराता तथा जातक को स्वस्थ और प्रसन्न रखता है।

यदि मेष या वृश्चिक राशि पर द्वादस्थ बुध की स्थिति हो तो यह योग जातक को लालची प्रवृत्ति का तथा राज-कार्यों में कुशल बनाता है।

यदि द्वादस्थ बुध वृषभ या तुला राशि पर हो तो जातक बुद्धि जीवी तथा व्यापार से धन कमाने वाला होता है। ऐसा जातक पुण्य कार्यों में धन का व्यय करता और सुखी रहता है।

यदि बारहवें बुध की स्थिति धनु या मीन राशि पर हो तो जातक को धन की हानि का सामना करना होता है। शरीर तो स्वस्थ रहता, किन्तु आर्थिक चिन्ता के कारण शक्ति क्षीण होने लगती है।

यदि द्वादशस्थ बुध कर्क राशिस्थ हो तो ननसाल से प्राप्य धन में बाधा उत्पन्न हो जाती तथा शत्रुओं की वृद्धि होती है।

यदि सिंह राशि पर बारहवाँ बुध है तो जातक राज्य की नौकरी से जीविकोपार्जन करता है।

यदि बुध मकर या कुम्भ राशिस्थ हो तो आचरण ठीक नहीं होता तथा नीचों की सेवा करनी होती है।

बारहवें भाव में उच्चस्थ, स्वगृही, शुभ या शुभ दृष्ट वृहस्पति स्वास्थ्य रक्षा और धन-रक्षा में भी सहायक होता है। यह जातक को व्यापार में लाभ कराता, किन्तु धार्मिक कार्यों अर्थात् पुण्य-दानादि में व्यय की प्रेरणा देता है। जातक शरीर तथा मन से स्वस्थ और प्रसन्न रहता है। उसमें रोग और शत्रु को नष्ट कराने की सामर्थ्य रहती और वह सफल रहता है।

किन्तु वृषभ या तुला राशि पर द्वादश वृहस्पति हो तो धन-सन्तान की कमी रहती है। यदि मकर या कुम्भ राशि पर हो तो जातक रोगी एवं दुखी रहेगा।

मिथुन या कन्या राशि पर बारहवें भावगत वृहस्पति जातक को कामुक प्रवृति का, मूर्ख तथा रोगी बनाता और धन का व्यर्थ अपव्यय कराता है।

यदि द्वादशस्थ गुरु सिंह राशिस्थ है तो जातक का आचरण सन्देहास्पद रहता और वह धन को नष्ट करता हुआ दुःखित रहता है।

मेष या वश्चिक राशिस्थ बारहवाँ गुरु भी जातक को आचरण-हीन रोगी तथा शत्रुओं से पीड़ित बनाता है।

द्वादश भाव में स्वगृही या उच्च राशिस्थ शुक्र धन की सम्पन्नता व्यक्त करता है। ऐसे जातक को उसके नाना-मामा आदि से धन की प्राप्ति होती है।

यदि द्वादशस्थ शुक्र मेष या वृश्चिक राशि में हो तो जातक को व्यसन लग जाते हैं और इस कारण धन का अपव्यय भी होता तथा जातक चिन्तत और दुःखी भी रहता है।

यदि मिथुन कन्या या कर्क राशि पर बारहवें भावगत शुक्र हो तो जातक धन का अपव्यय करता है तथा उसके आय के स्रोत दुर्बल हो जाते हैं।

सिंह राशि में द्वादशस्थ शुक्र जातक को निर्धन बनाता है। यदि वह मकर या कुम्भ राशि पर स्थित हो तो अग्नि अथवा चारों के द्वारा धन नष्ट होता हैं।

यदि धनु या मीन राशि पर बारहवें भाव में शुक्र हो तो यह योग शुभ कार्यों में धन की प्राप्ति करता हैं।

बारहवें भाव में स्थित शनि स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ हो तो जातक स्वस्थ, धनवान तथा लालची होता है। उसके आय के साधन अच्छे रहते हैं।

यदि द्वादशस्थ शनि मेष या वृश्चिक राशि पर हो तो जातक अस्वस्थ एवं रोगी रहता है तथा उसे धन की भी अधिक व्यय करना होता है।

यदि द्वादशस्थ शयि वृषभ या तुला राशिस्थ हो तो जातक रोगी होता है। यदि मिथुन या कन्या राशि पर हो तो शरीर में कोई दोष उत्पन्न हो जाता है।

यदि कर्क राशि पर हो तो नेत्र, विकार की चिन्ता रहती है ओर तदि सिंह राशि पर हो तो जातक को कोई व्यसन लग जाता है धन का और अपव्यय होता है।

यदि द्वादशस्थ शनि धनु या मीन राशि पर हो तो जातक रोगी रहता तथा शुभ [कार्यों में धन का व्यय करता है। किन्तु उसे ननसाल का सुख प्राप्त होता है।

बारहवें भाव में स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ राहु या केतु का होना जातक को स्वस्थ और धनवान बनाता है। ऐसा जातक लालची प्रवृत्ति का होता है।

यदि मिथुन या कन्या राशि पर केतु अथवा धनु या मीन राशि पर राहु का होना जातक को रोगी, धनहीन तथा ऋणी बनाने का योग समझिये।

यदि द्वादश राहु या केतु वृषभ, कर्क या तुला राशि पर हो तो जातक पापी, कपटी नेत्र-पीड़ित,रोगी तथा अल्पायु होता है। किन्तु मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ या सिंह राशिस्थ हो तो स्वस्थ, अल्प पुत्र-वान तथा शत्रु-रहित होना चाहिए।

———

लग्नस्थ राशि के अनुसार फलित

लग्न भाव सभी भावों में मुख्य माना जाता है। जिस लग्न में जातक का जन्म होता है, उसका सांकेतिक अंकन उस भाव में किया जाता है। पहिले बता चुके हैं कि जन्म कुण्डली में बारह भाव होते हैं, जिनमें राशियों का उल्लेख होता है। प्रत्येक भाव में एक राशि रहती है। राशियों के क्रम से उन भावों में अंक (१ से १२ तक) लिखे जाते हैं। यदि लग्न भाव में १ लिखा हो तो यह मेष राशि का सूचक होगा। यदि २ का अंक लिखा हो तो वृषभ राशि समझिये। नीचे क्रमानुसार लग्नस्थ राशियों का फल लिखा जाता है—

१. मेष राशि का फलित

यह राशि लग्न को सुदृढ़ बनाती है। पुरुष, रात्रि बली, क्रूर स्वभाव की, चर एवं ह्रस्व संज्ञक तथा पूर्व दिशा की अधीश्वरी मानी जाती है। यह मंगल ग्रह के आधिपत्य में रहने वाली राशि प्रायः दशम भाव में अधिक बलवान होती है। इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार होंगे—

सूर्य—पुत्र भावेश, त्रिकोणेश तथा पंचमेष।

चन्द्रमा—सुखेश, केन्द्रेश तथा चतुर्थेश।

मंगल—लग्नेश और अष्टमेश।

बुध—शत्रु भावेश और पराक्रमेष।

वृहस्पति—व्ययेश, भाग्येश तथा त्रिकोणेश।

शुक्र—केन्द्रेश, द्वितीयेश सप्तमेष तथा प्रबल मारकेश।

शनि—आयेश, राज्येश, और केन्द्रेश।

मेष राशि का ग्रहानुसार फलित

सूर्य—मेष लग्न में इसकी स्थिति त्रिकोणेश के रूप में होने से अपनी दशा और अन्तर्दशा में शुभ फल के देने वाली होती है। इसकी

अपनी दशा जातक के भाग्योदय में प्रबल कारण बनती है। इसके प्रभाव से पुत्र-प्राप्ति, आय में वृद्धि, सन्तान की शिक्षा एवं अन्यान्य प्रकार से उन्नति, स्वयं को राज सम्मान की प्राप्ति आदि के अवसर बढ़ जाते हैं।

चन्द्रमा—यह चतुर्थेश तो है ही, माता से सम्बन्धित स्वाभाविक कारक ग्रह भी है, इसलिए इसकी दशा और अन्तर्दशा जातक को वाहनादि का तथा माता का भी अच्छा सुख प्राप्त कराने वाली समझी जाती है। ऐसा जातक कार, स्कूटर, मोटर साईकिल, घोड़ा-गाड़ी प्रभृति सवारियां रखने में समर्थ होता है। सुरेश होने के कारण मेष लग्न की कुण्डली में चन्द्रमा जातक को सुखी बनाता है।

मंगल मेष लग्न वाली जन्म कुण्डली में मंगल लग्नेश तो है ही, अष्टमेश भी है। इसकी अपनी दशा या अन्तर्दशा जातक के लिए सौभाग्य वर्द्धक होती है। नौकरी पदोन्नति, खेत या घर के लिए भूमि की प्राप्ति, गढ़े धन की उपलब्धि, आरोग्य-लाभ आदि तथा ऐश्वर्य एवं वाहनादि की प्राप्ति में यह सुखद योग होगा। जातक चिकित्सा का कार्य करे तो उसे अधिक सफलता मिलेगी। यद्यपि ग्रहों में अष्ठत्व दोष के कारण दुर्बलता आ जाती है, किन्तु चन्द्रमा का अष्टमेश होना दोष का कारण नहीं होता।

वुध—शत्रु स्थान और पराक्रम स्थान का अधिपति होने के कारण वुध शत्रुओं की वृद्धि करता है इसलिए शत्रु परेशान करते रहते हैं। यह तृतीय और षष्ठ दोनों भावों का स्वामी होने के कारण अशुभ बन जाता है, इस कारण जातक की परेशानियां बढ़ती जाती हैं। नौकरी में कभी-कभी जवाब तलब होना, स्थानान्तरण का कठिनाई से रुक पाना तथा व्यापार-चढ़ाव एवं खेती आदि में आशा-निराशा का सामना करना होता है।

बृहस्पति—यह ग्रह भाग्येश होने के कारण अनागम के स्रोत विस्तृत करना है, किन्तु यहाँ व्ययेश भी है। इसलिए धन का व्यय भी

पर्याप्त मात्रा में करता है और यह एक ऐसा कारण है जो आर्थिक संकट उपस्थित करता रहता है।

साथ ही वृहस्पति त्रिकोणेश भी है, इसलिए यह अपनी दशा और अन्तर्दशा में शुभ फल देने वाला होना चाहिए। किन्तु भोग्येश रहने के कारण दशा के पूर्वार्द्ध में धन दायक और व्ययेश होने के कारण उत्तरार्द्ध में खर्च कराने वाला होगा।

शुक्र—मेष लग्न में शुक्र द्वितीय और सप्तम भाव का स्वामी है। यह दोनों भाव मारक माने गये हैं। इन दोनों का आधिपति होने से शुक्र की स्थिति प्रबल मारकेश की बन जाती है। इसलिए इससे बहुत हानि होनी चाहिए। परन्तु यदि शुक्र की महादशा में शुक्र का ही अन्तर हो तो इसका मारक गुण नष्ट हो जायगा। फिर भी उस समय यह जिस ग्रह से युक्त या दृष्ट होगा, उसकी अन्तर्दशा और अपनी महादशा मारक गुण व्यक्त कर बैठेगा।

शनि—आयेश, राज्येश और केन्द्रेश होने के कारण अत्यन्त सौभाग्यशाली और राज्य के स्थायित्व का कारण होना चाहिए, आयेश होने पर आय-वृद्धि भी आपेक्षित होती है। किन्तु यह उपचय का अधिपति होने के कारण अकारक बन जाता और भाग्य के उत्कर्ष में भी बाधक रहता है। अतः इस ग्रह के कारण उन्नति की गति बहुत मन्द रहेगी।

राहु और केतु—इन ग्रहों का यहाँ कोई स्वतन्त्र प्रभाव नहीं समझना चाहिए। यह जहाँ, जिस ग्रह के साथ बैठे हों, वहाँ वैसा ही फल प्रदान करेंगे।

योग कारक स्थितियाँ—

लग्न में सूर्य, चतुर्थ भाव में चन्द्रमा और दशम भाव में मंगल की स्थिति जातक को उच्च प्रशासकीय पद की प्राप्ति का अवसर देती है। ऐसा णातक शासनाधिकारी होना चाहिए।

सूर्य-चन्द्र अथवा सूर्य-मंगल का सम्बन्ध अच्छा राजयोग बनाता है।

यदि जातक महिला हो और उसका प्रसव होने को हो तो शिशु का जन्म मंगल की प्रत्यन्तर दिशा अथवा सूक्ष्म दशा में होता है।

मंगल और बुध का सम्बन्ध सदैव परेशानी उत्पन्न करने वाला है। ऐसा जातक मस्तिष्क विकार या शिरो रोग से पीड़ित हो सकता है।

सप्तम भाव में बुध की स्थिति जातक के वैवाहिक सुख में व्यवधान उपस्थित करती है। यह योग उसकी पत्नी को बीमार रखती है।

वृहस्पति और शनि का सम्बन्ध साधारण राजयोग लाता है। किन्तु यह योग प्रबल नहीं होगा।

शुक्र किसी भी स्थान पर हो यदि गुरु की दृष्टि रही तो उसका कारकतत्व नष्ट हो जायगा। इसलिए अशुभ फल प्रदान करेगा।

२. वृषभ राशि का फलित

जन्म कुण्डली में वृषभ राशि अपना महत्व पूर्ण अस्तित्व रखती है। क्रम से मेष के पश्चात् यह दूसरी राशि है। इसे जलाश्रयी, स्थिर, सौम्य स्वभाव. ह्रस्व पृष्ठोदय तथा रात्रि बली राशि मानते हैं। यह स्त्री लिंग की राशि दक्षिण दिशा की अधीश्वरी है।

यह राशि दशम भाव में अधिक बलवान होती है। इसका अधिपति शुक्र है। इसके फलित विन्दु निम्न प्रकार समझिये—

सूर्य—मारतेश, केन्द्रेश, चतुर्थेश तथा सुखेश।

चन्द्रमा—तृतीयेश।

बुध—पुत्रेश, धनेश तथा पंचमेश।

वृहस्पति—आयेश और अष्टमेश।

शुक्र—लग्नेश और षष्ठेश।

शनि—राज्येप तथा भाग्येश।

वृषभ राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—वृष लग्न की कुण्डली में यह ग्रह चतुर्थेश और केन्द्रेश होने के कारण अधिक शुभ तथा कारक ग्रह समझिये। साथ ही यह ग्रह दशम भाव पर पूर्ण दृष्टि रखता है, इसलिए अत्यन्त सौभाग्य वर्द्धक होता है। इस योग के प्रभाव से जातक को पिता-माता का सुख प्राप्त होता तथा पिता को भी सम्मान मिलता है।

चन्द्रमा—वृष लग्न की कुण्डली में चन्द्रमा तीसरे भाव का अधिपति होता है, इस कारण इसकी स्थिति त्रिषडायेश की भी है। इस योग को शुभ नहीं मानते, साथ ही यह अकारक भी है। इसलिए यह हानिकारक ही रहता है। इसकी महादशा अन्तर्दशा में भाइयों से विरोध, परिवार में अशान्ति एवं अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं। जीवन में अनेक प्रकार के उतार चढ़ाव आते हैं, जो कि मानसिक अशान्ति के कारण बन सकते हैं।

मंगल—वृषभ लग्न की कुण्डली में मंगल सप्तमेश, द्वादशेश एवं व्ययेश है। साथ ही जायेश भी हैं। इस ग्रह को यहाँ अकारक ही मानना होगा। सप्तमेश होने के कारण मंगल मारकेश भी हैं, इसलिए जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। यह भी सम्भव है कि पत्नी का स्वास्थ्य ठीक न रहे। क्योंकि द्वादेश का फल स्वास्थ्य तथा सम्मान को भी नष्ट करना होता है।

इस प्रकार यह योग मंगल की महादशा और अन्तर्दशा में रोग की उत्पत्ति, गृह-कलह, रक्त-विकार, अग्निकाण्ड व्यय की अधिकता तथा पारिवारिक परेशानी बढ़ सकती है।

बुध—वृषभ लग्न की कुण्डली में बुध धनेश और पंचमेश है। धनेश का अभिप्राय मारकेश भी है, क्योंकि धन भाव मारक भाव भी है। इसलिए स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही रहेगा। किन्तु पंचकेश होने से शुभ भी होता है, फिर धन-भाव का स्वामी धन-दान की दृष्टि

से कुछ उदार तो होगा ही। इससे मान्यता यह है कि बुध की दशा-अन्तर्दशा का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा किन्तु उत्तरार्द्ध हानिकारक हो सकता है।

वृहस्पति आयेश और अष्टमेष है, यह दोनों भाव अकारक समझिये, इसलिए भी इससे प्रवल अकारत्व का समावेश है। साथ ही अष्टमेष होना इसकी प्रवलता को और भी बढ़ा देता है। इसलिए वृहस्पति अधिक हानिकारक समझिये।

सामान्यतः यह माना जाता है कि वृहस्पति जिस भाव में भी होगा, इसे शुभ नहीं रहने देगा। इसकी दशा मारक हो तो भी यदि उसमें शुभ ग्रहों का योग उपस्थित हो तो मारक गुण अत्यन्त न्यून हो सकते हैं।

शुक्र—यह लग्नेश और षष्ठेश होने के कारण वृषभ लग्न में अशुभ फल नहीं दिखा सकता। क्योंकि शुक्र का लग्नेश होना शुभ लक्षण माना गया है। परन्तु षष्ठेश होने के कारण यह अकारक वन गया और शुभ पक्ष में निर्बलता आ गई। फिर भी लग्नेश होने के कारण यह षष्ठेश होने के दोष से वहुत कुछ बच जाता है। इसलिए शुक्र का यह योग अधिकांश में लाभदायक एवं शुभ ही समझिये।

शनि—वृषभ लग्न की कुण्डली में शनि अधिक कारक ग्रह होगा, क्योंकि वह केन्द्रेश और त्रिकोणेश भी है। साथ ही भाग्येश और राज्येश संज्ञक होने पर यह योग जातक को अत्यन्त शुभ होता है। यह सौभाग्य वर्द्धन और राज्य में भी उच्चपद प्राप्ति के लिए सहायक है।

राहु और केतु—वृषभ लग्ण की कुण्डली में राहु की अष्टमस्थ, दशमस्थ एवं द्वाद्वश स्थिति अत्यन्त शुभ फल प्रदान करती है। मुख्य रूप से राहु और केतु भावेश के फल के अनुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करने वाले वन जाते हैं।

योग कारक स्थितियाँ—

निर्बल सूर्य यदि शनि अथवा राहु से दृष्ट हो यह योग नौकरी में स्थानान्तरण की स्थिति बनाता है।

लग्न भाव में चन्द्रमा अकेला हो तो यह शुभ नहीं समझा जाता, वरन् धन का हरण करता है।

लग्न भाव में मंगल और शुक्र का एक साथ रहना तथा बुध या वृहस्पति द्वारा दृष्ट होना बुध की महादशा के श्रेष्ठ होने की सूचना देता है।

यदि लग्न भाव में बुध और शुक्र एक साथ बैठे हों तथा उन्हें मंगल और वृहस्पति देखते हों तो यह योग स्त्री-सुख की कमी रहना व्यक्त करता है।

ग्यारहवें भाव में सूर्य और शनि एक साथ बैठे हों तो यह जातक को दीर्घजीवी बनाते हैं।

यदि बुध-वृहस्पति एक साथ रह कर मंगल के द्वारा दृष्ट हों तो धन-प्राप्ति का श्रेष्ठ योग समझिये।

यदि दूसरे या पाँचवे भाव में बुध की स्थिति हो तो यह योग जातक की वाणी में ओज भर देता है।

यदि बुध, शनि और राहु तीनों एक साथ कहीं स्थित हों और बुध को राहु और शनि पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो वह छोटी आयु में ही अपने घर तथा परिवार से पृथक् हो जाता है।

यदि वृषभ लग्न में उत्पन्न जातक की कुण्डली में बुध और सूर्य एक साथ पंचम भाव में और शनि दशम भाव में हो तो यह योग पूर्ण रूप से सुख प्राप्ति कराने वाला है।

यदि वृषभ लग्न की कुण्डली के चतुर्थ भाव शुक्र एकाकी बैठा हो तो इसे वाहन-सुख की स्थायी रूप से प्राप्ति कराने वाला श्रेष्ठ योग समझिये।

शनि और राहु की दृष्टि अच्छी नहीं मानी जाती। यह विच्छेदात्मक ग्रह जिस स्थान पर होंगे या जिसको देखेंगे, वही विच्छेद उत्पन्न करेंगे।

यदि चतुर्थ भावस्थ वृहस्पति के द्वारा देखा जाता हो तो उसे शुभ फलदायक योग समझिये।

वृषम लग्न की कुण्डली में दशम भावस्थ राहु जातक को राजनैतिक नेवा बनने में सहायक होता है।

मिथुन राशि का फलित

राशि क्रम में मिथुन राशि तीसरा है। इसे युग्म राशि कहते हैं। इसका स्थान जुआघर, शरावखाना, रतिस्थान आदि माने जाते हैं। यह जलाश्रयी राशि शीर्षोदय, रात्रिवली, सम संज्ञयक तथा द्विस्वभाव होती है। इसकी गणना क्रूर राशियों में है।

लग्न में बलवान यह राशि जीव संज्ञक, पुरुष प्रधान तथा पश्चिम दिशा की अधीश्वरी होती है। इसका अधिपति बुध सौम्य ग्रह माना जाता है। इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार होंगे—

सूर्य—त्रिषडाय राशियों में से एक का अधिपति।

मंगल—षष्ठेश तथा एकादशेश।

बुध—लग्नेश ओर चतुर्थेश।

वृहस्पति—मारकेश, सप्तमेष ओर राज्येश।

शुक्र—त्रिकोणेश तथा व्ययेश।

शनि—अष्टमेश ओर भाग्येश।

मिथुन राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—त्रिषडाय राशियों में से एक का स्वामी होने के कारण अकारण ग्रह बन जाता है। इसलिए यह योग प्रायः हानिकारक ही

रहता है। इसके कारण जातक को चिन्ताएं और परेशानियाँ व्यस्त किये रहती हैं। वह अपने को एक ऐसी स्थिति में पाता है जिसमें उतार चढ़ाव प्रायः आते ही रहते हैं।

चन्द्रमा—मिथुन राशि की जन्म कुन्डली में चन्द्रमा धनेष रूप से है, इसलिए धन-लाभ की स्थिति उत्पन्न करता है। जातक को व्यापार आदि से पर्याप्त लाभ होना चाहिए। परन्तु सामान्य रूप से मारकेश भी है। दूसरा भाव धन का होता है तो मारक भी होता है। इस कारण जातक का स्वास्थ्य बिगड़ता रह सकता है और इस कारण धन का व्यय भी स्वाभाविक है। अभिप्राय यह है कि चन्द्रमा की दशा-अन्तर्दशा में पूर्वार्द्ध शुभ और उत्तरार्द्ध कष्ट प्रद हो सकता।

मंगल—मिथुन लग्न की कुन्डली में मंगल की स्थिति अकारण तथा अति पाप ग्रह के रूप में है। यह षष्ठेश और एकादशेश दोनों ही स्थितियों में होने के कारण अधिक हानिकारक बन जाता है। विशेष कर षष्ठेश होना उसके अकारत्व को प्रकट करता और अशुभ बना देता है।

बुध—मिथुन राशि की कुन्डली में लग्नस्थ बुध लग्नेश होने के कारण कारक ग्रह बन जाता है। यद्यपि दो केन्द्रों का अधिपति होने के कारण इसकी स्थिति तटस्थ होनी चाहिए, किन्तु लग्नेश होना ही शुभ परिणाम का सूचक है। ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत और सम्पन्न रहता है। इसका प्रभाव शारीरिक स्वास्थ्य पर भी अनुकूल पड़ता है। चतुर्थेश होने के कारण भ्राता माता आदि के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है।

वृहस्पति—मिथुन राशि की कुन्डली में लग्नस्थ होने पर वृहस्पति सप्तमेष, राज्येश के साथ मारकेश भी होता है। यहाँ दो केन्द्रों का अधिपति होने के कारण अकारक ग्रह बन जाता है।

सप्तमेष होना प्रबल मारकेश समझा जाता है, उस पर भी वृहस्पति यदि सप्तमेश हो तो यह बहुत ही हानिकारक है। क्योंकि वृहस्पति हीनबल होकर तो प्रायः हानि ही पहुँचाता है। वह जिस स्थान पर होगा, उसके शुभत्व को नष्ट करने लगेगा। इस प्रकार राज्येश होने पर भी वृहस्पति प्रायः लाभकारी सिद्ध नहीं होता।

शुक्र—मिथुन राशि की कुण्डली के लग्न भाव में शुक्र की स्थिति उसे त्रिकोणेश और व्ययेश दोनों ही बनाता है। त्रिकोणेश होने का अर्थ उसे पूर्ण रूप से शुभत्व प्राप्त होना है। इसलिए यह योग जातक को सुखी सम्पन्न बनाने वाला होता है।

व्ययेश होने के कारण व्यय अधिक होना चाहिए, इस कारण सुख की स्थिति में बाधा भी आनी चाहिए। किन्तु शुक्र को विद्वानों ने व्ययेश दोष से मुक्त माना है, इसलिये व्ययेश की स्थिति में प्राप्त होने वाला फल निरर्थक हो जाता है तथा जातक को सुख की प्राप्ति में बाधा नहीं आती।

शनि—मिथुन राशि की लग्न में शनि की स्थिति पूर्ण रूप से अकारण मानी जाती है। फिर भी अष्टमेश हुआ शनि अपने दोष से बचा रह कर स्वास्थ्य को सामान्य बनाये रखता है। साथ ही भाग्येश होने के कारण भी उसके प्रतिकूल प्रभाव में न्यूनता आ जाती है।

राहु और केतु—यद्यपि राहु और केतु का शुभाशुभ फल भाव तथा भावेश की स्थिति पर निर्भर करता है। फिर भी नवम् भाव में केतु की स्थिति जातक को तीव्र बुद्धि प्रदान करने वाली होती है।

योग कारक स्थितियाँ—

मिथुन लग्न की जन्म कुण्डली में यदि तीसरे भाव में सूर्य और बुध दोनों साथ बैठे हों तो यह योग बुध की दशा में पर्याप्त धन की प्राप्ति, कराने वाला होगा।

यदि द्वितीय भाव में चन्द्रमा, और मंगल शुक्र तीनों ही एक साथ स्थिर हों तो अत्यन्त धनवान बनाने का योग है। ऐसा जातक लाटरी आदि से पर्याप्त धन राशि प्राप्ति कर सकता है।

यदि मंगल केन्द्र में स्थिर हो तो पापग्रह होते हुए भी अपनी दशा एवं अन्तर्दशा में शुभ फल देने वाला होगा।

किन्तु मंगल की स्थिति प्राय: सभी भावों में हानिकारक होती है। यह उस भाव के फल को प्रभावित करती है।

यदि मिथुन लग्न की कुण्डली के एकादश भाव में बुध की स्थिति हो तो यह योग जातक के विषय में भ्रम उत्पन्न करने वाला होगा।

यदि नवें भाव में बृहस्पति और शनि दोनों एक साथ बैठे हों तो यह योग तीर्थ यात्रा कराने वाला समझिये।

यदि लग्न और चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो तो यह योग जातक को साहसी और हिंसक वृत्ति का बन सकता है।

यदि शनि या राहु बुध को देखते हैं तो जातक रक्त विकार से परेशान रहता है।

यदि बुध को मंगल देखता हो तो यह योग जातक को आचरणहीन, दुर्व्यसनी तथा अपव्यय करने वाला बनाता है।

यदि मिथुन लग्न की कुण्डली के षष्ठ भाव में चन्द्रमा की स्थिति हो तो जातक चिन्तित एवं परेशान रहेगा।

मिथुन लग्न की कुण्डली के नवम् भाव में शनि की स्थिति भाग्योदय सहायक होती है।

मिथुन लग्न की कुण्डली में लग्न में केतु तथा चतुर्थ भाव में सूर्य हो तो जातक यशस्वी होता है।

मिथुन लग्न की कुण्डली में नवम भावस्थ चन्द्रमा और एकादश भावस्थ मंगल हो तो यह जातक को अत्यन्त धनवान बनाने वाला योग होगा।

नवम भाव में शनि तथा एकादश भाव में बुध और सूर्य हों तो जातक अत्यन्त प्रसिद्ध एवं सम्मानित होता है।

४. कर्क राशि का फलित

राशिक्रम में कर्क राशि चौथी मानी गई है। इसका स्थान जलाशय, जलीय तट तथा कुँआ, वापी सरोवर, सरिता आदि हैं। यह चर संज्ञक तथा स्त्री राशि पृष्ठोदय, एवं रात्रि के समय बलवान होने वाली है। इसका अधिपति चन्द्रमा है।

इसका भाव सौम्य, शूद्र, वर्ण, सम कहलाता है। यह उत्तर दिशा की अधीश्वरी तथा चतुर्थ भाव में पूर्ण बलवान होने वाली है। इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार होंगे —

सूर्य — धनेश।

चन्द्रमा—लग्नेश।

मंगल—पंचमेष और राज्येश।

बुध—व्ययेश, धनेष।

वृहस्पति—षष्ठेश और भाग्येश।

शुक्र—आयेश तथा सुखेश।

शनि — सप्तमेश और अष्टमेश।

कर्क का ग्रहानुसार फलित —

सूर्य—इस लग्न में द्वितीय भाव का स्वामी तथा धनेश होने के कारण का धनागम या धन-सम्पन्नता की स्थिति उत्पन्न करेगा। किन्तु द्वितीय भाव मारक भाव भी है, इसलिए धनेश होने के साथ ही उसका मारकेश होना भी बनता है। किन्तु यह मारकेश योग सामान्य ही होगा, जो कि कभी-कभी स्वास्थ्य को खराब करेगा तथा इसी कारण व्यय भी कराता रहेगा।

सामान्य मारकेश होने के कारण अकारक भी है और कोई भी अकारक ग्रह कभी भी लाभकारी नहीं हो पाता।

चन्द्रमा —कर्क लग्न वाली जन्म कुण्डली में चन्द्रमा लग्नेश तथा कारक ग्रह होता है। यह जातक को शुभ फल देने वाली स्थिति में होता है। इसके कारण जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा उसका रूपलावण्य दर्शनीय और आकर्षक बना रहता है।

मंगल —कर्क लग्न के साथ मंगल की स्थिति शुभ फलदायक होगी। क्योंकि यहाँ मंगल पंचमेश और राज्येश है। इसलिए पूर्ण रूप से कारक ग्रह बन जाता है। इसके कारण जातक कला के प्रति रुचिवान और विद्वान् होना चाहिए। उसे पुत्रादि की ओर से सुख की प्राप्ति होनी चाहिए। परन्तु मंगल कुछ उग्रता भी उत्पन्न करता है, इसलिए इस प्रकार के योग वाले जातक क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं।

बुध—कर्क लग्न में बुध की स्थिति व्ययेश और पराक्रमेश के रूप में रहती है। व्ययेश के साथ पराक्रमेश भी होना, इस बात का सूचक है कि यह योग कुछ लाभ कर नहीं होगा। साथ ही यह यहाँ अकारक ग्रह होने के कारण भी कुछ अच्छा फल नहीं दिखाता। वरन् व्यय अधिक कराता और कभी-कभी तो जातक की आर्थिक स्थिति को जटिल करके चिन्ता ग्रस्त बना देता है।

बृहस्पति—लाभदायक नहीं होता, क्योंकि यह जिस भाव में स्थित होता है, उस भाव के शुभ प्रभाव की हानि कर देता है। यह ग्रह लग्न भाव में होता है तो स्वास्थ्य खराब करता है और धन भाव में होता है तो धन की हानि करता है। तीसरे भाव में होता है तो परिवारी-जनों से अनबन रहती है। चौथे भाव में माता से द्वेष, पंचम भाव में सन्तान-सुख में कमी तथा षष्ठ भाव में मामा-नाना को कष्ट होता है।

शुक्र—कर्क लग्न वाली कुण्डली में शुक्र का कारकत्व तो रहता ही नहीं। किन्तु यदि यह धन भाव में अथवा द्वादश भाव में हो तो कारकत्व से युक्त होकर लाभप्रद हो जाता है। सामान्यत: शुक्र स्थिति ग्यारहवें भाव में शुभ मान ली जाती है। किन्तु बात ऐसी नहीं

है, क्योंकि वहाँ तो अपना कारकत्व छोड़ चुका होता है। किन्तु धन भाव में होने पर वह स्वराशि (तुला) से ग्यारहवें भाव में होगा साथ ही द्वितीय राशि वृषभ से केन्द्र स्थान में रहेगा। इस प्रकार यह योग कारक ग्रह बनकर शुभ स्थिति उत्पन्न करेगा।

शनि—यह ग्रह कर्क लग्न की कुण्डली में सप्तमेश अष्टमेश के रूप में दोनों स्थितियों को प्राप्त होता है, इस लिए विद्वानों ने इसकी स्थिति को तटस्थ माना है। इस स्थिति में जातक को कुछ लाभ या हानि का अवसर नहीं आता।

राहु और केतु—यह ग्रह अपना स्वतन्त्र फल न देकर भाव, भावेश, साथी ग्रह अथवा जिसके द्वारा दृष्ट हो, उसकी स्थिति के अनुसार फल दायक होते हैं।

योगकारक स्थितियाँ—

कर्क लग्न की जन्म कुण्डली में यदि सूर्य और बुध लग्न में एक साथ बैठे हों तथा शुक्र चतुर्थ भाव में और चन्द्रमा, मंगल एवं बृहस्पति एकादश भाव में हों तो व्यापार में अत्यन्त धन-लाभ का योग बनेगा और सदैव सफलता मिलेगी।

यदि कर्क लग्न के साथ चन्द्रमा तथा सप्तम भाव में मंगल स्थित हो तो इसे अच्छा धन-योग समझिये।

यदि लग्न में चन्द्रमा और बृहस्पति एक साथ बैठे हों तो यह विशेष रूप से राजयोग बनेगा।

लग्न में चन्द्रमा और दशम भाव में सूर्य की स्थिति भी विशेष राजयोगी बनाती है।

यदि कर्क लग्न में बृहस्पति, दशम भाव में सूर्य और एकादश भाव में चन्द्र, बुध और शुक्र हो तो यह अति प्रसिद्ध कारक योग है। ऐसा जातक अत्यन्त सम्मानित और देश-विदेश पर्याप्त ख्याति प्राप्त करता है।

यदि कर्क लग्न की कुण्डली में बुध की स्थिति पंचम भाव में हो और उसके साथ शुक्र भी पंचम भाव में ही बैठा हो तो यह श्रेष्ठ धन प्राप्ति का योग होगा।

यदि कर्क लग्न की कुण्डली के सप्तम अथवा द्वादश भाव में शुक्र की स्थिति हो तो जातक की माता को कोई न कोई रोग सदैव लगा रह सकता है।

यदि कर्क लग्न की कुण्डली में मंगल पाँचवें भाव में बैठा हो तो यह योग विशिष्ट राजयोग प्रदर्शित करेगा।

यदि कर्क लग्न वाली कुण्डली के लग्न भाव में वृहस्पति, चतुर्थ भाव में शनि और सप्तम भाव में मंगल स्थित हो तो जातक संसार में प्रसिद्ध तथा सुखी होता है।

यदि कर्क लग्न की कुण्डली के द्वितीय भाव में सूर्य, तृतीय भाव में बुध और वृहस्पति, चतुर्थ भाव में शुक्र तथा षष्ठ भाव में मंगल की स्थिति हो तो जातक परिश्रमी और बुद्धिमान होता है। वह अपने ही परिश्रम और विवेक के बल पर पर्याप्त धन की प्राप्ति करता आर धनिक वन कर प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

यदि द्वितीय भाव में चन्द्र, मंगल और वृहस्पति तथा पंचम भाव में शुक्र और सूर्य हो तो जातक धनपति वन जाता है।

५. सिंह राशि का फलित

यह राशि क्रमानुसार पाँचवी मानी गई है। सिंह के समान आकार निश्चित होने पर इसका यह नाम दिया गया है। इसका पुरुषाकार तथा दीर्घाकार होता है। इसे क्रूर स्वभाव की स्थिर राशि मानते है तथा यह दिन में अत्यन्त बलवान रहने के कारण दिवाबली मानी जाती है।

सिंह राशि शीर्षोदय राशि है। इसकी मूल संज्ञा है तथा यह पृथिवी तत्व प्रधान है। इसका स्वामी सूर्य है तथा यह पूर्व दिशा की स्वामिनी

है। मुख्यतः यह राशि विशेष रूप से प्रबल समझी जाती है। इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार होंगे—

सूर्य—लग्नेश।

चन्द्रमा—व्ययेश।

मंगल—सुखेश और भाग्येश।

बुध—आयेश, धनेश, मारकेश।

बृहस्पति—पंचमेश और अष्टमेश।

शनि—षष्ठेश और सप्तमेश।

सिंह राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य–सूर्य लग्नेश होने पर पूर्ण कारक ग्रह बनाता है। यदि इसकी स्थिति स्वगृही (सिंह लग्न से) ही हो तो यह योग जातक साहसी, किसी उच्चपद पर आसीन तथा राज्य-कार्य में योग्य बनाता है। इसके प्रभाव से जातक में क्रोध और अहंकार की वृद्धि भी होती है, किन्तु कभी-कभी प्रशानिक स्थिति को बनाये रखने के लिए क्रोध और अहंकार की भी अपेक्षा रहती ही है।

चन्द्रमा—सिंह लग्न की कुण्डली में इसकी स्थिति व्ययेश की होती है। इस कारण यह ग्रह यहाँ अकारक ही माना जायगा। आय न्यून और व्यय की अधिकता इसका एक लक्षण होगा। इसके प्रभाव से अनेक प्रकार से धन की हानि हो सकती है। जातक अपव्यय की ओर प्रवृत्त हो सकता है।

मंगल—सिंह लग्न की कुण्डली में भाग्येश और सुखेश होने के कारण पूर्ण रूप से कारक ग्रह होता है। इसे धन प्राप्ति का एक सुयोग भी कह सकते हैं। यह धन-प्राप्ति का योग उपस्थिति कराने के साथ ही सुख भी प्राप्ति कराता है। इससे जातक स्वास्थ्य ठीक रहना व्यक्त होता है तथा व्यवसाय ही अपेक्षित रूप में चलता है।

बुध—सिंह लग्न की कुण्डली में बुध की स्थिति धनेश और आयेश के रूप में होने से धनागम की दृष्टि से लाभकर होते हुए भी सामान्य मारकेश बनने के कारण अधिक शुभ फल नहीं दिखाती । इस प्रकार यह ग्रह प्रायः अकारक ही होता है । यह योग के विषय में यह समझा जाता है कि जातक इसके प्रभाव से अधिक उतार-चढ़ाव देखता है । फिर भी उसे किसी प्रकार की अधिक हानि का सामना नहीं करना होता

वृ.स्पति—सिंह लग्न की जन्म कुण्डली में वृहस्पति की स्थिति पंचमेश और अष्टमेश रूप में होती है । वृहस्पति पचम भाव का कारक ग्रह भी होता है और उस स्थिति में जातक को सन्तान-सुख की प्राप्ति कराता है । व्यापार आदि के द्वारा लाभ भी सम्भावित है ।

किन्तु वृहस्पति का अष्टमेश होना कुछ दोष पूर्ण समझा जा सकता था । किन्तु उसकी सफलता जातक के लिए हितकर होती और उसके दोष को दबा देती है । प्रबल वृहस्पति जातक को विद्वान्, अभिमान और अध्ययनशील बनाता है ।

शुक्र—सिंह लग्न में इस ग्रह का सशक्त होना लाभदायक नहीं होता। इसके प्रभाव से जातक उपलब्ध राजयोग को भी खो बैठने की स्थिति में होता है । अभिप्राय यह कि शुक्र का राज्येष या त्रिषडायेष होना शुक्र के कारकत्व को नष्ट करके उसे अकारक बना देता है । इसके फल स्वरूप जातक के स्वभाव में क्रोध की तीव्रता बढ़ जाती है तथा वह छल-कपट पूर्ण व्यवहार से कार्य निकालने में भी नहीं चूकता ।

शनि—सिंह राशि की लग्न में शनि का षष्ठेश और सप्तमेष होना अशुभ लक्षण है । इस स्थिति में शनि अपने कीरकत्व से रहित रह कर अकारक बन जाता । क्योंकि षष्ठेष और सप्तमेष दोनों ही स्थिति अनुकूल नहीं रहती ।

यह योग नाना-मामा आदि की ओर से मिलने वाले सुख से जातक को बंचित कर देता है । रोग या शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना भी

कठिन हो जाता है। जातक को कभी-कभी कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना होता है।

राहु और केतु—यह जिस भाव में स्थित हो, उसी भावेश के समान प्रभाव दिखाते हैं। यदि भावेश शुभ है तो शुभ फल दिखाने में सहयोगी होंगे, किन्तु भावेश अशुभ हुआ तो राहु केतु भी उस अशुभ फल में अपना सहयोग देंगे।

योग कारक स्थितियाँ—

सिंह लग्न की जन्म कुण्डली में स्वगृही सूर्य की स्थिति जातक को साहसी, गर्वीला तथा प्रशासनिक कार्यों में कुशल बनाती है। ऐसा जातक कोई उच्च पदाधिकारी या न्यायाधीश होना चाहिए। यदि व्यापारी है तो किसी बड़ी कम्पनी, कारखाने आदि का स्वामी हो सकता है।

यदि सिंह लग्न सूर्य, मंगल और बुध एक साथ स्थित हों तो बुध की दशा अत्यन्त अनुकूल और सौभाग्य से सम्पन्न बनाने वाली सिद्ध होगी।

सूर्य और बुध किसी भी भाव में बैठे हों और कुण्डली में सिंह लग्न हो तो उत्तम धन योग होगा।

यदि सिंह लग्न वाली कुण्डली के द्वितीय अथवा अष्टम भाव में शनि की स्थिति हो तो यह योग धन का अभाव व्यक्त करता है। उसे ननसाल का सुख भी प्रायः नहीं मिलता।

यदि सिंह लग्न की कुण्डली में सूर्य, मंगल और बुध तीनों ग्रह एक साथ किसी भी स्थान पर बैठे हों तो यह योग जातक को अत्यन्त धनवान और भाग्यशाली बनाता है।

शनि और मंगल का एक साथ किसी भी भाव में बैठना जातक के पिता को वृषण-वृद्धि रोग से पीड़ित करेगा।

यदि राहु और मंगल एक साथ कहीं भी स्थिति हों तो भी जातक का पिता अण्डकोष के विकार से पीड़ित होना चाहिए।

यदि सिंह लग्न की कुण्डली में सूर्य, बुध और वृहस्पति एक साथ स्थिर हों तो यह योग जातक को अधिक यशस्वी, प्रसिद्ध और धनाढ्य बनाता है।

यह सिंह लग्न वाले जातक की कुण्डली में बुध की स्थिति पंचम भाव में हो तथा शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो यह योग लाटरी आदि के रूप में अकस्मात धन प्राप्त कराने वाला होगा।

यदि नवम भाव में शुभ युक्त या शुभ इष्ट बुध बैठा हो तो भी लाटरी आदि से धन प्राप्ति का बोध बनेगा।

यदि ग्यारहवें भाव में राहु और शनि एक साथ हों तो पुत्र-सुख की न्यूनता व्यक्त होती है।

यदि शुक्र और वृहस्पति एक साथ बैठे हों तो जातक को आर्थिक संकट में डाल सकते हैं।

यदि द्वादश भाव में शनि और मंगल स्थित हों तो शनि की दशा जातक के लिए शुभ होती है।

६. कन्या राशि का फलित

राशि क्रम में यह छठी राशि है। इसे स्त्री संज्ञक, सौम्य तथा द्विस्व भाव मानते हैं। इसका पूर्वार्द्ध बलवान होता है तथा लग्न में यह राशि विशेष रूप से प्रबल रहती है। इसका स्थान तृणाच्छादित भूमि तथा विलास भूमि और वैश्य वर्ण कहा गया है।

यह राशि जीव संज्ञक, विविध वर्णों और दक्षिण दिशा की अधीश्वरी, शीर्षोदय एवं दिवा बली है। इस जलाश्रयी राशि का स्वामी बुध है। साथ ही यह राशि बुध की स्वराशि तो है ही, उच्च राशि भी है इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार समझे जाते हैं—

सूर्य—व्ययेश।
चन्द्रमा—आयेश।
मंगल—अष्टमेश तथा त्रिषडायेश।

बुध — लग्नेश तथा राज्येश।

वृहस्पपित—चतुर्थेश ओर सप्तमेश।

शुक्र —भाग्येश एवं धमेश।

शनि—पचमेश एव षष्ठेश।

कन्या राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—कन्या राशि की लग्न में सूर्य की स्थित व्ययेस के रूप में होने के कारण उसका कारकत्व समाप्त हो जाता है। इस योग से व्यय की वृद्धि और आय की कमी होती है। जातक अर्थ चिन्ता में सदा परेशान रहता है। धनागम के स्त्रोत संकुचित हो जाते हैं। समाज में अपयश की प्राप्ति होती है।

चन्द्रमा—कन्या लग्न की कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति भी व्ययेश की है। चन्द्रमा यहाँ ग्यारवें भाव का अधिपति होने से हानिकारक नहीं होता। कुछ व्यक्तियों के मत में चन्द्रमा सामान्य रूप से कारक है। क्योंकि सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही श्रेष्ठ माने गए हैं। इन्हें किसी प्रकार का दोष प्राय: नहीं लगता। कन्या लग्न में स्थित चन्द्रमा जातक को धनवान, राज्याधिकार प्राप्त एवं सुखी बनाता है। ऐसा जातक अपने कोमल स्वभाव और मीठी वाणी के बल पर सफलता प्राप्त करता है।

मंगल—कन्या राशि की लग्न में मंगल की स्थिति अष्टमेश और त्रिषडायेश रूप में होती है। इस कारण यह ग्रह अष्टमत्व दोष से युक्त एवं अकारक बन जाता है। इसका प्रभाव जातक के मस्तिष्क पर पड़ता है और वह इसे मूर्ख तथा क्रोधी बनाता है।

बुध—कन्या राशि की लग्न में बुध लग्नेश, राज्येश तथा कारकेश भी है। कन्या राशि बुध की स्वराशि और उच्च राशि भी है। इस प्रकार यह योग अत्यन्त सौभाग्य वृद्धि का सूचक है। इसके प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य सदा ठीक रहता हैं, उसे कोई रोग सताता नहीं। इसलिए दीर्घजीवी बनाने में सहायक है।

साथ ही यह योग जातक को विद्वान् बुद्धिमान और धार्मिक विचारधारा का बनाता है। इस प्रकार लग्नस्थ बुध कन्या राशि के जातक के लिए अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

वृहस्पति--कन्या राशि की लग्न वाली जन्म कुण्डली में वृहस्पति चतुर्थेश और सप्तमेश होने के कारण अकारक ग्रह माना गया है। साथ ही यह केन्द्र के स्वामित्व के दोष से भी युक्त होता है।

किन्तु सप्तमेश होने के कारण वृहस्पति का दोप नष्ट हो जाता है और इस स्थिति में जातक को पानी की ओर से उत्तम सुख की प्राप्ति होती है तथा व्यापार में भी पर्याप्त लाभ होता है।

शुक्र—धनेश और भाग्येश के रूप में कन्या लग्न वाले जातक के लिए सामान्य फल देने वाला होता है। ऐसा जातक अशिक्षित, मूर्ख तथा रोगी होना चाहिए। उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। समाज में उसकी प्रतिष्ठा गिर जाती है। निन्दा प्राप्त कराता है। उसे छल-प्रपंच से युक्त करने में भी यह योग प्रभावकारी है।

शनि—कन्या लग्न वाली कुण्डली में शनि की स्थिति पंचमेश और षष्ठेश रूप से रहने के कारण उसका कारकत्व नष्ट हो जाता है। वह जातक का प्रतिकूल रूप प्रभावित करता तथा पुत्रादि से द्वेष उत्पन्न कराता है।

राहु और केतु—यद्यपि भावानुसार फल देने वाले होते हैं, किन्तु यहाँ रोगी के स्वास्थ्य को प्रभावित करते और उसे रोगी बनाये रखते हैं।

योग कारक स्थितियां—

यदि कन्या राशि की कुण्डली में किसी भी भाव में भी सूर्य और चन्द्रमा एक साथ स्थित हों तो जातक को सूर्य की दशा में सौभाग्य की पूर्ण रूप से प्राप्ति होती है।

यही फल सूर्य और शुक्र के एक साथ होने का भी होगा। इसते जातक को सूर्य की दशा में धन-सम्मान की प्राप्ति होती और यश भी बढ़ता है।

कन्या राशि की लग्न वाली कुण्डली में वृहस्पति का षष्ठ भाव में होना गृहस्थ जीवन के सुखी न होने का सूचक है।

यदि कन्या की कुण्डली के षष्ठ भाव में राहु की स्थिति हो तो जातक अस्वस्थ होगा।

यदि कन्या लग्न की कुण्डली के द्वितीय भाव में शुक्र और केतु दोनों एक साथ स्थिर हों तो जातक को लौटरी आदि से धन की प्राप्ति आकस्मिक रूप से होती है।

यदि कन्या लग्न वाले जातक की कुण्डली में अस्टमस्थ मंगल प्रवल हो तो जातक दीर्घजीवी होता है।

यदि उक्त लग्न वाले जातक की कुण्डली के षष्ठ भाव में राहु और अष्टम भाव में बुध हो तो जातक को स्त्रियां के द्वारा प्रेम और सम्मान नहीं मिल पाता।

यदि कन्या लग्न वाली कुण्डली में वृहस्पति की स्थिति अष्टम भाव या द्वादश भाव में हो तो पति-पत्नी में प्रेम नहीं होता।

कन्या लग्न में उत्पन्न जातक की कुण्डली में नवमस्थ राहु तीर्थ यात्रा का प्रवल योग बनाता है।

यदि कन्या लग्न वाली कुण्डली में सातवें भाग में चन्द्रमा और शुक्र, अष्टम भाव में सूर्य तथा एकादश भाव वृहस्पति की स्थिति हो तो जातक को अभिलाषित स्त्री की प्राप्ति होती तथा ससुराल भी अच्छी और जातक का सम्मान करने वाली होती है।

यदि कन्या लग्न में चन्द्रमा, बुध और शुक्र तीनों ही एक साथ लग्न भाव में बैठे हों तो जातक अत्यन्त शुभ तथा लाभकारी स्थिति में होता है।

यदि कन्या लग्न की कुण्डली में द्वितीय भावस्थ शनि हो तो जातक को शनि की दशा सौभाग्यदायक होती है।

यदि कन्या लग्न की कुण्डली के पंचम भाव में शनि की स्थिति हो तो अति कन्या योग समझिये।

यदि कन्या लग्न की कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र दोनों ही चतुर्थ भावस्थ हों तो दोनों की दशाएं शुभप्रद होती हैं।

यदि कन्या लग्न की कुण्डली में राहु द्वितीय भाव में हो तो अत्यन्त शुभ होगा। यदि राहु नवम भावस्थ हो तो भी शुभ फलदायक योग ही समझिये।

कन्या लग्न का मंगल क्षीण बल हो तो लाभदायक तथा शुभ होता है।

७. तुला राशि का फलित

राशि क्रम में यह सातवीं राशि मानी गई है। इसकी आकृति हाथ में तराजू लेकर तौल करते हुए व्यक्ति के समान होती है। यह धातु संज्ञक, चर संज्ञक तथा क्रूर स्वभाव की है। इसकी जाति पुरुष तथा निवास स्थान व्यापारिक केन्द्र है। यह राशि दीर्घ आकार की होता है।

तुला राशि पश्चिम दिशा की स्वामिनी, शीर्षोदय तथा दिवाबली होती है। इस राशि का स्वामी शुक्र है। यह शनि की उच्च राशि और सूर्य की नीच राशि है। इसके फलित बिन्दु इस प्रकार समझने चाहिए—

सूर्य—आयेश, लाभेश।

चन्द्रमा—राज्येश।

मंगल—धनेश, मारकेश, सप्तमेश।

बुध—भाग्येश एवं व्ययेश।

वृहस्पति—त्रिषडायेश ।

शुक्र—लग्नेश एवं अष्टमेश ।

शनि—चतुर्थेश एवं पंचमेश ।

तुला राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—तुला राशि की लग्न कुण्डली में सूर्य की स्थिति आयेश या लाभेश के रूप में कारकत्व से रहित मानी जाती है। यह योग जातक के दाम्पत्य जीवन को प्रभावित बनाता और उसे स्त्री-सुख से वंचित कराता है। ऐसे जातक द्वारा किये गये उपकार भी नष्ट हो जाते हैं। परन्तु कुछ विद्वानों के मत में यह योग शुभ फल देने वाला और पदोन्नति करने वाला है।

चन्द्रमा—तुला राशि की लग्न में चन्द्रमा का स्थिर होना उसे राज्येश संज्ञक बनाता है। यह योग पूर्ण रूप से कारक समझना चाहिए। इसे धन प्राप्ति में सहायक समझिये। साथ ही स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। किन्तु कुछ मत में यह योग अस्थियों या रोग उत्पन्न करता है. इसलिए अनुकूल नहीं रहता।

मंगल—तुला लग्न वाली जन्म कुण्डली में मंगल का लग्नस्थ होना उसे धनेश, सप्तमेश मारकेश की स्थिति प्राप्त कराता है। ऐसा जातक बहुत साहसी तथा झगड़ालू स्वभाव का होता है। उसकी नाभि मोटी होनी चाहिए।

यह योग जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित करता और उसे रोगी बना सकता है। मंगल की मारक दशा अनेक प्रकार के कष्ट उत्पन्न करती और चिन्ताग्रस्त बनाती है।

बुध—तुला लग्न की कुण्डली में बुध भाग्येश तथा व्ययेश के रूप में है। इसलिए यह ग्रह कारकत्व से वंचित तथा अकारक है। फिर भी योग जातक को सदाचारी बनाता है। इस कारण इसके प्रभाव से शुभ फल की प्राप्ति भी संभव है।

वृहस्पति—तुला लग्न की जन्म कुण्डली में वृहस्पति की स्थिति त्रिपडायेष के रूप में होने के कारण उसके कारकत्व को नष्ट कर प्रवल शकारकत्व प्रदान करती है। यह योग जातक को गम्भीर तथा चिन्ता शील बनाता है। किन्तु उस योग के कारण जातक को मान-प्रतिष्ठा और कीर्ति की प्राप्ति भी होती है।

शुक्र—तुला लग्न की कुण्डली में शुक्र की स्थिति लानेश और अष्टमेष की है। साथ ही काकेश भी समझिये। यह योग जातक को स्वस्थ रोग-रहित, दीर्घायु, विवेक वुद्धि से सम्पन्न तथा धनवान बनाता हैं। ऐसे जातक को स्त्री का पर्याप्त सुख प्राप्त होता तथा दाम्पत्य जीवन हर्षोल्लासप्रद होता है। शास्त्रादि के अध्ययन में रुचि होने के कारण दान-पुन्य करता तथा तीर्थ यात्रा आदि में भी अधिक रुचि रखता है।

शनि—तुला लग्न की कुण्डली में शनि की स्थिति चतुर्थेश और पंचमेश रूप होने के कारण कारकत्व की वृद्धि करती है। ऐसा जातक वात-प्रकृति का होता है तथा वह सदाचारी रहता और अनेक शुभ कार्य करता है। वह बुरे कार्यों से सदा बचता रहता है और समाज में प्रतिष्ठा तथा यश पाता है।

राहु और केतु—यह ग्रह यद्यपि भावानुसार फल दिखाते हैं, किन्तु यहाँ इनका फल स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाला होता है और रोग की उत्पत्ति करता है।

योग कारक स्थितियाँ—

तुला राशि की लग्न वाली जन्म कुण्डली में लग्न भाव में सूर्य और चन्द्रमा तथा नवम भाव में राहु हो तो जातक को सहसा धन की प्राप्ति का सुयोग मिलता है। धन की प्राप्ति चाहे किसी सम्बन्धी, मित्र द्वारा हो या लाटरी राज्य-पुरस्कार के द्वारा ही।

यदि तुला राशि की लग्न में सूर्य स्थिर हो तो उच्च प्रशासनिक योग बनाता है। ऐसा जातक कोई राज्याधिकारी, मिलिटरी का उच्चाधिकारी या न्यायाधीश हो सकता है।

तुला राशि की लग्न में शुक्र की स्थिति शुक्र दशा को मारक बना देती है।

किन्तु लग्न भाव में सूर्य और शुक्र का एक साथ होना जातक को पर्याप्त धन की प्राप्ति कराने वाला योग समझिये। किन्तु यदि बुध भी साथ हो तो अनुकूल योग नहीं होगा।

यदि तुला लग्न वाली कुण्डली में सूर्य. मंगल, बुध और शनि चारों ग्रह एक साथ किसी भी स्थान में स्थिर हों तो जातक बहुत धनवान होता है।

तुला लग्न की कुण्डली में शनि चाहे जिस भाव में हो, उसी भाव को शुभ योग प्रदान करेगा।

सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि चारों ग्रह एक साथ हों तथा वह चारों एक भाव में ही हों तो अत्यन्त धन की प्राप्ति होती है।

यदि तुला लग्न की कुण्डली में वृहस्पति की स्थिति अष्टम भाव में हो तो जातक को बहुत धन मिलता है।

यदि तुला लग्न में बुध और शुक्र एक साथ बैंठे हों तो जातक विद्वात् धार्मिक तथा सम्मानित होगा।

यदि तुला लग्न वाली कुण्डली के चतुर्थ भाव में शनि का रहना धन प्राप्ति का सुखद योग समझिये।

यदि तुला लग्न की खुण्डली के चतुर्थ भाव में चन्द्रमा की स्थिति हो तो जातक कूटनीतिक होगा। सम्भव है कि वह राजदूत तक की स्थिति पर पहुँच जाय।

यदि तुला लग्न की कुण्डली के सातवें भाव ये मंगल हो तो जातक की पत्नी स्वस्थ, सुन्दर दीर्घ आयु की होगी।

यदि तुला लग्न वाली कुण्डली में मंगल की स्थिति अष्टम या द्वादश भाव में हो तो जातक की तरुणावस्था दुःख में व्यतीत होती है ।

यदि तुला लग्न की कुण्डली से सूर्य और बुध एक साथ स्थित हों तथा शनि उन्हें देखता हो तो यह योग जातक को अत्यन्त भाग्यवान और प्रतापी बनाता है ।

यदि तुला लग्न की कुण्डली के द्वादश भाव में बुध की स्थिति हो तो जातक का भाग्योदय विशेष रूप से होता है ।

७. वृश्चिक राशि का फलित

राशि क्रम में यह राशि आठवीं है । इस राशि को दीर्घाकार, सौम्य स्वभाव की तथा स्त्री जाति की मानते हैं । इसका वर्ण काला, रत्न मूँगा और धातु तांबा है । यह राशि आश्विन मास मेंदग्ध अर्थात् शक्तिहीन रहती है तथा इसे जल तत्व प्रधान राशि माना गया है।

यह राशि उत्तर दिशा की अधीश्वरी है । शीर्षोदय तथा दिवावली होती है । इसका अधिपति मंगल है । इस प्रकार मगल इसका अपना ग्रह, उच्च राशि मकर तथा नीच राशि कर्क है । इसका अधिपति ग्रह अग्नि तत्व प्रधान है । इसके फलित बिन्दु निम्न होंगे—

सूर्य—राज्येश ।

चन्द्रमा—भाग्येश ।

मंगल—लग्नेश व षष्ठेश ।

बुध—अष्टमेष तथा आयेश ।

वृहस्पति—धनेश एवं पंचमेश।

शुक्र—सप्तमेश एवं व्ययेश ।

शनि—तृतीयेश तथा चतुर्थेश ।

वृश्चिक राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—वृश्चिक राशि की जन्म कुण्डली में सूर्य की स्थिति लग्न भाव में राज्येश संज्ञक बनती है। इसलिये यहाँ यह एक कारक ग्रह का फल प्रदर्शित करेगा। यह अपने प्रभाव से जातक को अत्यन्त प्रतापी, मेधावी तथा विद्वान बनाता है। ऐसा जातक अपने वुद्धि बल से धनागम के स्त्रोत विस्तृत कर लेता है। व्यापारिक रुचि के कारण आय के साधन अच्छे रहते हैं। उसे समाज में प्रतिष्ठा और कोई राजपद या राज सम्मान भी मिल सकता है।

चन्द्रमा—वृश्चिक लग्नस्थ चन्द्रमा भी कारक ग्रह होता है। किन्तु इसका फल कोई बहुत अच्छा नहीं देखा गया। यह धन के मामले में तो बहुत निर्बल योग है। क्योंकि ऐसे योग वाले जातक प्रायः आर्थिक संकट में फँसे हुए देखे गये हैं।

मंगल—वृश्चिक लग्नस्थ मंगल लग्नेश और षष्ठेश की स्थिति को प्राप्त होता है, इसे कारकत्व से युक्त ग्रह माना गया है। इसका प्रभाव जातक के स्वास्थ्य पर अनुकूल पड़ता है। वह उसे रोग रहित और दीर्घायुष्य बनाता है। उसे राज-सम्मान की प्राप्ति तथा धन की वृद्धि होती है।

बुध—वृश्चिक राशि की कुण्डली में लग्नस्थ बुध अष्टमेश और आयेश की स्थिति को प्राप्त होकर भी अकारक ग्रह बन जाता है। किंतु लग्नस्थ होने के कारण उसका अष्टमेश दोष प्रवल नहीं हो पाता। इस योग के प्रभाव से जातक विद्वान, मन्त्र विद्या में दक्ष तथा ज्योतिष विद्या में दक्ष तथा ज्योतिण विद्या का भी ज्ञाता होता है। उसकी रुचि शुभ कार्यों में होती है, इसलिए यह सदैव अच्छे कार्य करता है, इसलिए यह योग बुध के अकारकत्व को हटा कर उसे लाभकारी वना देता है।

वृहस्पति–वृश्चिक लग्न में वृहस्पति धनेश और पंचमेश की स्थिति को प्राप्त होकर तटस्थ भाव प्रदर्शित करता है। यह जातक के मन को प्रभावित अस्थिर या चंचल बना देता है। ऐसे जातक का चित्त किसी भी कार्य में निश्चयात्मक रूप से नहीं लगता। इसलिए वह कभी कोई एक योजना बनाता है तो कभी दूसरी। इस प्रकार उसे सफलता मिलना कठिन ही होता है।

शुक्र–वृश्चिक लग्नस्थ शुक्र सप्तमेश और व्ययेश के रूप में ही नहीं रहता, वरन वह मारक गुण प्रदर्शित करता है। कुछ मतों में यह योग स्वास्थ्य के लिए हानिकर है तथा व्यय भी अधिक कराता है। सप्तम भाव मारक है, इसलिए इसका स्वामी होना प्रबल मारक योग उपस्थित करेगा।

परन्तु कुछ विद्वान लग्न भावस्थ शुक्र के वृश्चिक राशि में होने को शुभ मानते हैं। उनके विचार में यह योग जातक को स्वस्थ, रोग-रहित बलवान, बुद्धिमान तथा दीर्घजीवी बनाता है। इस प्रकार इस योग को अशुभ मानना निरर्थक है।

शनि—वृश्चिक लग्न में शनि की विद्यमानता उसे तृतीयेश और चतुर्थेश संज्ञक बनाती है। विद्वानों ने इस स्थिति को अकारक माना है। इसका प्रभाव जातक के शरीर पर पड़ता है और वह कुरूप तथा अस्वस्थ होता है। उसके पास धन की भी कमी रहती है।

राहु और केतु—वृश्चिक लग्नस्थ राहु या केतु भी जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित करते और उसे रोगी बना देते हैं।

योगकारक स्थितियाँ—

वृश्चिक लग्न की जन्म कुण्डली में यदि मंगल षष्ठ भाव में है तो यह अति शुभकारी योग है।

वृश्चिक लग्न की जन्म कुण्डली के षष्ठ भाव में सूर्य का होना जातक के पिता का अत्यन्त प्रभावशाली, प्रसिद्ध तथा विद्वान होना व्यक्त करता है।

वृश्चिक लग्न की जन्म कुण्डली के छठे भाव में बुध का बैठे होना शुभाशुभ योग है। यह जातक को अत्यन्त धन सम्पन्न बनाता तथा रोगी भी रखता है।

यदि वृश्चिक लग्न की कुण्डली के पंचम भाव में बुध एकाकी बैठा हो तो विदेश यात्रा का योग बनायेगा।

यदि वृहस्पति और शनि परस्पर आपने-सामने स्थिर हों तो यह योग खेती आदि के द्वारा लाभ कराने वाला होता है।

यदि नवम भाव में एकाकी वृहस्पति स्थिर हो तो जातक भाग्य-वान, पुत्रवान, धनवान, तथा सम्मानित होता है। उसमें भाषण शक्ति की भी प्रवलता होता है।

सप्तम भाव में शुक्र का एकाकी रहना जातक के विलास-प्रिय और कामुक होने का लक्षण है।

यदि चतुर्थ भाव में शनि एकाकी बैठा हो तो जातक के प्रजनन अंगों को प्रभावित करता तथा उसे कर्तव्य अथवा गुप्द्र रोगों से पीड़ित रखता है।

यदि वृश्चिक लग्न की कुण्डली के छठे भाव में मंगल और शनि दोनों एक साथ हों यह लक्षण जातक को छल-प्रपंच और चोरी आदि कर्मों में चतुर बनाता है।

यदि उक्त लग्न की कुण्डली के तीसरे भाव में शनि की स्थिति एकाकी हो तो जातक की छोटी वहिनें अधिक होती है।

यदि वृश्चिक लग्न की कुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में बैठा हो तो यह योग जातक को अपनी स्त्री के प्रेम जाल में फँसाये रखने वाला होता है।

यदि वृश्चिक लग्न की कुण्डली के तृतीय भाव में वृहस्पति और शुक्र दोनों एक साथ बैठे हों तो ऐसा जातक धनवान तो होते हैं, किन्तु

उसके पुत्र सब संचित धन को नष्ट कर डालते हैं। इस प्रकार जातक धनवान से दुःखित हो जाता है।

यदि मंगल और बुध एक साथ बैठे हों तो जातक क्रोधी स्वभाव का होगा तथा चोट खायेगा।

यदि शुक्र, शनि और राहु तीनों एक साथ सातवें भाव में हों तों जातक को धूर्त और दुश्चरित्र बनाते हैं।

९. धनु राशि का फलित

द्वादश राशिओं के निश्चित क्रम में यह नवीं राशि है। इसका स्थान हाथी, अश्व, रथ आदि के रहने का स्थान माना जाता है। इसका वर्ण स्वर्णिम, स्वभाव सौम्य तथा आकार दीर्घ होता है।

इस राशि को सम स्वभाव की पुरुषाकृति, क्रूर स्वभाव तक द्विस्व भावी की मानते हैं। यह राशि रात्रि में बलवान होने वाली तथा पृष्ठोदय कहलाती है। इसकी जीव संज्ञा होती है।

यह चतुष्प्रद, परार्द्ध प्रधान तथा दशम भाव में अधिक बलवान होती है। इसका अधिपति बृहस्पति है। इसकी उच्च राशि कर्क तथा नीच राशि मकर है। यह राशि अग्नि तत्व प्रधान है। इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार होंगे—

सूर्य—भाग्येश।

चन्द्रमा—अष्टमेश।

मंगल—पंचमेश और व्ययेश।

बुध—सप्तमेश राज्येश।

बृहस्पति—लग्नेश।

शुक्र—षष्ठेश तथा लाभेश।

शनि—धनेश और पराक्रमेश।

धनु राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य धनु राशि की लग्न में सूर्य की स्थिति उसे पूर्ण रूप से कारकत्व प्रदान करती है। इसलिए जातक के लिए यह योग हितकर रहेगा। उसका स्वास्थ्य ठीक रहेगा तथा रोग-रहित रहता हुआ दीर्घ जीवन प्राप्त करेगा।

यह योग जातक में कुछ हीन भावना भी भर देता है। इसलिए स्त्री के समक्ष जातक दवा रहेगा तथा उसकी सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझेगा।

चन्द्रमा—धनु लग्नस्थ चन्द्रमा कारक भान से रहित रहता तथा मारक योग उपस्थिति करता है इसके कारक जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है और रोग उसे घेरे ही रहते हैं। किन्तु विद्वता की दृष्टि से जातक अत्यन्त विद्वान् और अध्ययशील होता है। उसकी प्रतिष्ठा भी रहती है।

मंगल—धनु लग्न में मंगल की विद्यमानता उसे पंचमेश और व्ययेश के रूप में अकारक वना देती है। परन्तु उस स्थिति में भी जातक को अच्छी शिक्षा प्राप्त होती और विद्वता की वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने बुद्धि-बल से ही धन की प्राप्ति में सफल होती है।

बुध—जन्म कुण्डली में धनु राशि पर बुध का लग्नस्थ होना उसे सप्तमेश और राज्येय बना देता है। किन्तु केन्द्र भाव का भी स्वामी होने से उसे जो दोष लगता है, उसके कारण बुध के कारकत्व में कमी आ जाती है और वह सामान्य रूप से अकारक बन जाता है।

और वह सामान्य अकारकत्व ही जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। वह उसे रोगी, अशिक्षित, मूर्ख तथा नास्तिक कोटि में रखकर अपना प्रभाव प्रदर्शित करका है।

वृहस्पति—धनु लग्नस्थ वृहस्पति लग्नेश की स्थिति में होने के कारण शुभ फल देने वाला होता है। वह केन्द्र का स्वामी होने के

कारण दोष युक्त भी होता है, किन्तु लग्नेश होने के कारण उसका वह दोष स्वतः नष्ट हो जाता है। इस प्रकार इस योग में वृहस्पति की स्थिति कारक ग्रह के रूप में होती है।

उक्त स्थिति में जातक विद्वान्, बुद्धिमान, धनवान तथा राज्य-सम्मान से उपकृत होता है। उसे सन्तान सुख की प्राप्ति भी सुलभ होती है। यश की वृद्धि भी होती है।

शुक्र—धनु लग्नस्थ शुक्र षष्ठेश और लाभेश रूप में रह कर पूर्ण रूपेण अकारक बन जाता है। यह जातक के विवेक को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है, इस कारण विद्वान होते हुए भी वह छल-प्रपंच में विश्वास करता है। जातक की वात-प्रकृति होती है।

शनि—धनु लग्न में शनि की स्थिति धनेश और पराक्रमेश के रूप में तो होती है, किन्तु वह उसे अकारकत्व भी प्रदान करती है। उसके फल स्वरूप जातक अपने गुरुजनों, परिवारीजनों तथा भले आदमियों से द्वेष रखने लगता और खोटे मनुष्यों की संगति में रहता है।

राहु और केतु—धनु लग्न में राहु की स्थिति जातक को रोगी बनाती है तथा केतु की स्थिति उसे रोग मुक्त करती है।

योगकारक स्थितियाँ—

धनु लग्न में उत्पन्न जातक की जन्म कुण्डली के दशम भाव में सूर्य और वृहस्पति एक साथ हो तो यह योग जातक को प्रशासनिक दक्षता प्रदान करता है। ऐसा जातक अच्छा प्रशासक, न्यायाधीश या पुलिस अथवा मिलिटरी का अधिकारी हो सकता है।

धनु लग्न की कुण्डली के पंचम भाव में शनि एकाकी हो तो शुभ फल देने वाला होगा।

यदि धनु लग्न की कुण्डली में शनि तृतीय भावस्थ और सूर्य-शुक्र नवम भावस्थ हों तो यह योग अत्यन्त सौभाग्यवर्द्धक समझना चाहिए।

यदि धनु लग्नकी कुण्डली के सप्तम भाव में बुध की स्थिति हो तो विवाह शीघ्र होने का योग है।

यदि धनु लग्न की कुण्डली में बुध की स्थिति अष्टम भाव में हो तो जातक को त्वचा रोग से पीड़ित रहने वाला योग होगा ऐसा जातक रक्त-दोष से परेशान रहेगा।

पंचम भाव में शुक्र और शनि का एक साथ रहना उदर विकार के बने रहने का सूचक है।

यदि मंगल की स्थिति सप्तम भाव में हो तो यह योग जातक को कामुक बनाता है।

यदि धनु लग्न की कुण्डली के पंचम भाव में वृहस्पति हो तो अत्यन्त भाग्यवर्धक योग होगा। ऐसा जातक धनवान, विद्वान तथा धार्मिक रुचि का होगा।

यदि धनु लग्न की कुण्डली के पंचम भाव में शनि की एकाकी स्थिति है तो जातक की पत्नी प्राय, अस्वस्थ रहेगी और उसकी आयु भी कम होगी।

यदि सातवें भाव में मंगल और शुक्र दोनों एक साथ हों तो स्त्री की मृत्यु जलने से सम्भावित है।

यदि लग्न भाव में शनि और राहु एक साथ हों तथा सप्तम भाव में गुरु हो तो यह योग स्त्री के विधवा होने का है। इसके कारण स्त्री को दाम्पत्य-सुख अल्प ही मिल पाता है।

यदि धनु लग्न का कुण्डली के आठवें भाव में मंगल और शुक्र एक साथ वैठे हों तो दुर्घटना में अकाल मृत्यु होने की आशंका व्यक्त होती है।

यदि मंगल की स्थिति आठवें भाव में हो तो अशुभ नहीं होगी।

यदि मंगल नवम भाव में स्थित हो तो जातक का धन पुत्र नष्ट कर देते हैं।

यदि धनु लग्न की कुण्डली में शुक्र की स्थिति दशम भाव में हो तो विशेष रूप से धन की प्राप्ति होती है।

मकर राशि का फलित

राशियों के निश्चित क्रम में यह राशि दसवीं मानी गई है। इसकी गणना सौम्य स्वभाव की राशियों में है। इसका वर्ण पिंगल, मध्यम तथा पृथिवी तत्व प्रधान है।

मकर राशि पृष्ठोदय, रात्रिवली तथा माघ मास में दग्ध (शून्य) प्रभाव की होती है। इसका रत्न नीलम और धातु स्वर्ण है। चर संज्ञक यह राशि स्त्री जाति की तथा दक्षिण दिशा की अधीश्वरी है। इसका अधिपति शनि है। उच्च राशि तुला और नीच राशि मेष होती है। यह जलचर राशि चतुष्पद पूर्वार्द्ध तला दशम भाव में प्रवल मानी जाती है। इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार समझिये—

सूर्य—अष्टमेश।

चन्द्रमा—सप्तमेश।

मंगल—चतुर्थेश तथा लाभेश।

बुध—षष्ठेश एवं भाग्येश।

वृहस्पति—पराक्रमेश तथा व्ययेश।

शुक्र—पंचमेश तथा राज्येश।

शनि—लग्नेश एवं धनेश।

मकर राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—मकर राशि लग्न में सूर्य की स्थिति अष्टमेश रूप से है। किन्तु सूर्य निर्मल ग्रह होने के कारण अष्टमत्व दोष से मुक्त रहता है। इस प्रकार यह ग्रह यहाँ कारक बना रहता है।

फिर भी मकर लग्नस्थ सूर्य स्वास्थ्य को प्रभावित किये विना नहीं रहता, इसलिए हृदय-रोग या उससे सम्बन्धित कोई विकार उत्पन्न कर

सकता है। जातक को रक्तचाप प्रभृति रोग भी सम्भावित है। अथवा रक्त सम्बन्धी कोई भी रोग हो सकता है।

चन्द्रमा--मकर लग्नस्थ चन्द्रमा सप्तमेश की स्थिति को प्राप्त होता हुआ कारकत्व से युक्त रहता है। किन्तु जातक के सौन्दर्य के अनुकूल नहीं रहता। इसके प्रभाव से वह कुरूप या अनाकर्षक रूप का हो सकता है। तथा स्वास्थ्य भी खराब रह सकता है।

मंगल--मकर लग्नस्थ मंगल चतुर्थेश और लाभेश की स्थिति प्राप्त करता हुआ अकारक बन जाता है। इस प्रकार यह योग जातक को रोगी, अल्पायु तथा अल्प सन्तान वाला बनाता है।

बुध--मकर राशि की लग्न में बुध का होना इसे षष्ठेश और भाग्येश की स्थिति प्राप्त कराता तथा अकारकत्व से युक्त करता है। अन्य ग्रह की महादशा में यदि इसकी अन्तर्दशा आती है तो शुभ फल की प्राप्ति सम्भव नहीं होती। परन्तु उच्च राशिस्थ होने के कारण यह योग जातक स्वास्थ्य को उत्तम बनाता और उसे निरोग रखता है। इसीलिए जातक दीर्घजीवी होता है। इसका चित्त धार्मिक कार्यों में लगा रहने के कारण ज्ञान की वृद्धि होती है। इस प्रकार जातक बुद्धिजीवी तथा मेधावी होता है।

वृहस्पति--मकर लग्न वृहस्पति पराक्रमेश और व्ययेश की प्राप्त होकर पूर्ण रूप से अकारक ग्रह बन जाता है यह जातक के स्वभाव को चिड़चिड़ा बनाता और परिवारीजनों के साथ झगड़ा उत्पन्न करा देता है। धन-पक्ष में भी यह कुप्रभाव डालकर जातक को आर्थिक संकट में डाल देता है। उसके कारण जातक कपटी तथा सदा चिन्तातुर रहता है। उसे अपना देश या घर छोड़ कर बाहर जाने की इच्छा होती है। वह सन्तान सुख से वंचित रह सकता है।

शुक्र--मकर लग्नस्थ शुक्र पंचमेश और राज्येश की स्थिति प्राप्त करके पूर्ण रूप से कारक हो जाता है। वह जातक को अपने अनुकूल

प्रभाव से धनवान बना देता है। समाज में उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होती है और यशस्वी तथा नम्र स्वभाव का रहता है। उसकी मीठी बोली मित्रों की संख्या बढ़ाने में भी सहायक होती है। सन्तान-योग भी बनेगा।

शनि—मकर लग्न में शनि की स्थिति लग्नेश एवं धनेश के रूप में पूर्ण रूप से कारकत्व उत्पन्न करती है। इस लग्न में शनि स्वराशिस्थ होती है, इसलिए जातक को धनवान, रूपवान, विद्वान बना देता है। इसके प्रभाव से जातक को पिता की कृपा भी प्राप्त होती है।

राहु-केतु—मकर लग्नस्थ राहु अथवा केतु जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित करते और उसे रोगी बना देते हैं।

योग कारक स्थितियाँ—

मकर लग्न की जन्म कुण्डली के लग्न भाव में वृहस्पति, सप्तम भाव में शुक्र और अष्टम भाव में बुध की स्थिति हो तो यह योग जातक को दीर्घजीवी, किन्तु धन-रहित बनाता है।

यदि मकर लग्न की कुण्डली में लग्नस्थ मंगल हो तो यह योग विशेष हितकर माना गया है। ऐसा जातक धनादि से सम्पन्न होता है और उसकी माता दीर्घजीवन प्राप्त करती है, इसलिये उसे अच्छा मातृ-सुख प्राप्त रहता है।

यदि मकर लग्न वाली कुण्डली में शनि की स्थिति नवम भावस्थ हो तो जातक स्वयं तो कर्कश भाषी होता है, किन्तु पत्नी मृदुभाषिणी और दीर्घायु होती है।

यदि नवम भाव में वृहस्पति हो तो जातक धार्मिक विचार धारा का, तीर्थ यात्रा, दान-पुण्यादि करने वाला होता है।

यदि लग्न भाव में बुध और शुक्र, पंचम भाव में चन्द्रमा तथा नवम भाव में वृहस्पति हो तो जातक राज-पद प्राप्त करता अथवा उच्च राज-सम्मान का भागी होता है।

यदि मकर लग्न की कुण्डली के पंचम भाव में शुक्र हो तो हितकर रहेगा।

यदि मकर लग्न में जन्म लेने वाले जातक की कुण्डली में शुक्र की स्थिति नवम भावस्थ हो तो जातक के संचित धन को उसके पुत्र नष्ट कर डालते हैं।

यदि मकर लग्न की कुण्डली में बुध और शनि एक साथ कहीं बैठे हों तथा शनि और राहु उन्हें देखते हों तो जातक नौकरों के विश्वास-घात का शिकार होता है तथा यह योग जातक के बड़े भाई को अस्वस्थ और रोगी भी बनाता है।

यदि तृतीय भाव में बुध और शुक्र दोनों एक साथ हों तो यह योय जातक को वीर, साहसी और कुछ कर गुजरने वाला बनाता है। ऐसा जातक अधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

यदि मकर लग्न वृहस्पति और ग्यारहवें भाव में मंगल और शुक्र दोनों ही हों तो वृहस्पति की दशा अनुकूल रहती तथा भाईयों के द्वारा धन प्राप्त कराती है।

यदि तृतीय भाव में बुध और शुक्र दोनों एक साथ हों तथा चतुर्थ भाव में राहु हो तो यह योग जातक को राजनीति और कुटनीति में बहुत चतुर बना देता है।

यदि द्वादश भाव में वृहस्पति और राहु एक साथ बैठे हों तो राहु की दशा में अत्यन्त भाग्योदय का योग बनेगा।

११. कुम्भ राशि का फलित

यदि क्रम में यह ग्यारहवीं राशि है। इसे स्थिर राशि मानते हैं। जाति की पुरुष, स्वभाव में क्रूर एवं ह्रस्व राशि समझिये। यह वायु तत्व प्रधान है। यह राशि पश्चिम दिशा की अधीश्वरी है। इसे शीर्षोंदय तथा दिवावली राशियाँ हैं। यह राशि चैत्र मास में दग्ध (शून्य) अर्थात् शक्तिहीन रहती है।

इस राशि का पूर्वार्द्ध नर, लग्न में बलवान तथा मूल संज्ञक है। इसका वर्ण वैश्य और रंग चितकबरा होता है। इसका अधिपति शनि उच्च राशि तुला तथा नीच राशि मेष है। इसके फलित बिन्दु निम्न प्रकार होंगे—

सूर्य—सप्तमेश।

चन्द्रमा--षठेश।

मंगल—पराक्रमेश और राज्येश।

बुध—पंचमेश और अष्टमेश।

बृहस्पति—धनेश तथा लाभेश।

शुक्र—सुखेश एवं भाग्येश।

शनि—लग्नेश तथा व्ययेश।

कुम्भ राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—कुम्भ राशि का लग्न में स्थित सूर्य सप्तमेश होते हुए भी कारक ग्रह समझा जाता है। किन्तु सप्तमेश होने से सूर्य की स्थिति मारकेश की भी है। इसलिए यह जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रोगी बानना है। ऐसे जातक हृदय रोग या रक्त संपीडन प्रभृति रोगों के शिकार हो सकते हैं।

चन्द्रमा—कुम्भ लग्नस्थ चन्द्रमा कारक ग्रह समझा गया है। इसके प्रभाव से जातक कुरूप तथा अस्वस्थ रहता है। उसे कोई न कोई रोग परेशान करते ही रहते हैं। जब यह कारकत्व से युक्त होता है तब जातक के अनुकूल रहता है।

मंगल—कुम्भ राशि की लग्न में स्थित मंगल पराक्रमेश एवं राज्येश की अवस्था में रहता हुआ अकारक ग्रह बनता है। इसके प्रभाव से जातक अस्वस्थ, रोगी तथा अल्पायु होता है। जातक को सन्तान भी कम होती है।

बुध—कुम्भ राशिस्थ लग्न में बुध की स्थिति पंचमेश और अष्ट-मेश होने पर भी यह योग उसे अकारक बना देता है। इसका फल प्राय: अधिक हितकर नहीं होता। इस योग वाला जातक बुद्धि का मन्द और न्यून शिक्षित होना चाहिए।

वृहस्पति—कुम्भ राशि की लग्न में वृहस्पति की उपस्थिति धनेष और लाभेश के रूप में शुभ नहीं समझी जाती। यह योग ग्रह को अका-रकत्व देकर मारकत्व से भी युक्त करता है। सामान्यत: ऐसा जातक अपने परिवारी जनों से भी क्लेश करता और सन्तान सुख से वंचित रहता है। उसे चिन्ता व्यग्र किये रहती है। छल-कपट की प्रवृत्ति का उद्‌भव होता और जातक विदेश यात्रा के लिए उद्यत होता है।

शुक्र—कुम्भ लग्नस्थ शुक्र सुखेश और भाग्येश की स्थिति को प्राप्त होकर पूर्ण रूप से कारक बन जाता है। इसके प्रभाव से जातक में अत्यन्त विनम्रता और अविर्भाव होता है। ऐसे जातक के पास धन की कमी नहीं रहती और वह समाज में प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है।

शनि—कुम्भ राशि की लग्न में शनि की स्थिति लग्नेश और व्ययेश के रूप में कारकत्व युक्त होती है। स्वगृही होने के कारण शनि अत्यन्त शुभ स्थिति उत्पन्न करता है। वह जातक को धनवान, रूपवान और विद्वान बनाता है। समाज में उसकी अत्यन्त प्रतिष्ठा होती और जनता संकेत पर चलती है। ऐसा जातक पिता की कृपा से उपकृत तथा पूर्णतया सुखी-समृद्ध होता है।

राहु और केतु—कुम्भ लग्नस्थ राहु या केतु जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित करता और उसे रोगी बनाता है।

योगकारक स्थितियां—

कुम्भ राशि की जन्म लग्न वाली कुण्डली में लग्न भाव में सूर्य और शुक्र का एक साथ दशम भाव में राहु का अकेला रहना राहु और वृहस्पति की दशा को अत्यन्त शुभकारी बनाता है।

यदि कुम्भ राशि के लग्न भाव में वृहस्पति और द्वितीय भाव में शनि की स्थिति हो तो इस योग के कारण शनि की दशा शुभ और वृहस्पति की दशा सामान्य रहती है।

यदि कुम्भ लग्न की कुण्डली के चौथे भाव में चन्द्रमा विद्यमान हो तो जातक शान्त तथा उदार चित्त का होगा। वह अपने से द्वेष करने वालों से भी प्रेम करेगा।

यदि कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक की जन्म कुण्डली के नवम भाव में सूर्य हो तो अल्पायु की पत्नी प्राप्त होना बताता है।

यदि कुम्भ लग्न कुण्डली में शनि की स्थिति दशम भाव में हो तो जातक अत्यन्त धनाढ्य होता है।

यदि कुम्भ लग्न की कुण्डली सूर्य और मंगल दोनों को अष्टम भाव में रखती है तो यह धननाश करने वाली दशाएं होंगी।

यदि सप्तम भाव में सूर्य विद्यमान हो तो पत्नी कर्कश स्वभाव की सुदृढ़ विचार वाली, शक्तिमती और स्वस्थ मिलेगी।

यदि कुम्भ लग्न की कुण्डली के तीसरे भाव में सूर्य बुध और वृहस्पति तीनों एक साथ हों तो सूर्य की दशा शुभ होगी और पर्याप्त धन की प्राप्ति करायेगी।

कुम्भ लग्न की कुण्डली के तृतीय भाव में स्थित सूर्य उच्च पद प्राप्ति में सहायक होगा।

कुम्भ लग्न की कुण्डली के पंचम भाव में बुध और वृहस्पति दोनों एक साथ बैठे हों तथा शनि की स्थिति एकादश भाव में हो तो सन्तान सुख नहीं मिलता अथवा मिलता भी है तो अल्प सुख प्राप्त होना ही समझिये।

कुम्भ लग्न की कुण्डली में। बुध की स्थिति द्वितीय भाव में हो सन्तान की ओर से बहुत कष्ट मिलता तथा जातक को घर छोड़ कर कहीं अन्यत्र जाना होता है।

कुम्भ लग्न के बारहवें भाव में शुक्र की स्थिति धन के पक्ष में ठीक नहीं मानी जाती।

कुम्भ लग्न के द्वितीय भाव में वृहस्पति और एकादश भाव में शुक्र की स्थिति हो तो निर्धन परिवार में उत्पन्न हुआ जातक भी अत्यन्त धनाढय बन जाता है।

कुम्भ लग्न की कुण्डली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में हो तो जातक के भाई नहीं होते।

किन्तु, यदि मंगल तृतीय भाव में विद्यमान हो तो अनेक छोटे भाई होते हैं।

यदि कुम्भ लग्न की कुण्डली के आठवें भाव में बुध हो तो जातक का स्वास्थ्य ठीक रहता तथा वह दीर्घजीवी रहता है।

यदि कुम्भ लग्न की कुण्डली में वृहस्पति नवम भावस्थ हो तथा उसे शनि अपनी पूर्ण दृष्टि से देखता हो अत्यन्त धनवान होने का योग समझिये।

१२. मीन राशि का फलित

राशि क्रम की यह अन्तिम (बारहवीं) राशि सौम्य राशि मानी गई है। इसका वर्ण भूरा तत्व जल, लिंग स्त्री तथा संज्ञा ह्रस्व है। यह राशि वैशाख मास में दग्ध (शक्ति-रहित) रहती है।

इस राशि का रत्न पुखराज, धातु स्वर्ण स्वभाव द्विस्वभाव माना जाता है। इसे उभयोदय, दिवाबली तथा उत्तर दिशा की अधीश्वरी समझिये इसका स्वग्रह गुरु और केतु, उच्च राशि (वृहस्पति) की कर्क और नीच राशि मकर होती है। केतु की दृष्टि से उच्च राशि वृश्चिक और नीच राशि मिथुन होगी। सामान्यत: इसे सन्ध्या बली मानते हैं। विशेषत: शुक्र की उच्च राशि और बुध की नीच राशि समझिये। इसके फलित बिन्दु निम्न होंगे—

सूर्य—षष्टेश ।

चन्द्रमा—पंचमेश ।

मंगल—धनेश और भाग्येश ।

बुध—चतुर्थेश तथा सप्तमेश ।

बृहस्पति—लग्नेश एवं राज्येश ।

शुक्र—पराक्रमेश तथा अष्टमेश ।

शनि—लाभेश एवं व्ययेश ।

मीन राशि का ग्रहानुसार फलित—

सूर्य—मीन लग्न में सूर्य की स्थिति षष्ठेष होने पर भी कारकत्व युक्त होगी। ननसाल की स्थिति सामान्य होगी, वहाँ से किसी प्रकार के हित-साधन की आशा नगण्य रहेगी। जातक कुछ दब्बू प्रवृत्ति का होगा, यहाँ तक कि पत्नी से भी दबेगा और उसकी अटल-सेवा में लगा रहेगा।

चन्द्रमा—मीन लग्नस्थ चन्द्रमा पंचमेश रहने पर कारक ग्रह रहेगा यह योग जातक को अत्यन्त मेधावी, विद्वान् तथा धन सन्तान से युक्त बनायेगा। समाज में उसकी प्रतिष्ठा रहेगी और सभी लोग उसकी बात मानेंगे। परिवारीजनों से प्रेम-भाव रहेगा। मित्रों की भी सख्या बढ़ेगी।

मंगल—मीन लग्न में मंगल ग्रह की स्थिति धनेश एवं भाग्येश के रूप में रहकर भी कारक कारकत्व में बाधक रहेगी। इस कारण जातक उसके शुभ गुण का लाभ नहीं उठा सकेगा। फिर भी उसे किसी प्रकार की कोई विशेष परेशानी का सामना नहीं करना होगा।

बुध—मीन लग्नस्थ बुध चतुर्थेश तथा सप्तमेश की स्थिति को प्राप्त होता हुआ केन्द्र के स्वामित्व दोष का भागी रहता है। उस पर भी यह राशि बुध की नीच राशि है। इसलिए इसके शुभ गुण अपना प्रभाव व्यक्त करने में असमर्थ रहते हैं। कभी-कभी तो इसका प्रतिकूल फल

देख जाता है। जातक का स्वास्थ्य खराब रहता तथा विद्या की नगण्यता रहती है।

वृहस्पति—मीन लग्न की कुण्डली में वृहस्पति की स्थिति स्वगृही की है। इसलिए लग्नेश भी है और राज्येश भी। केन्द्र भाव का स्वामी होने के कारण केन्द्रस्वामित्व दोष लगना चाहिए था, किन्तु लग्नेशत्व उसके उस दोष को पूर्ण रूप से नष्ट कर देता है। इस प्रकार मीन लग्नस्थ वृहस्पति कारकत्व से सम्पन्न होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक विद्वान्, धनवान तथा पुत्रवान होता है। उसे राजपद या राज-सम्मान का भी अवसर प्राप्त होता है। विद्वनों के मत में यह योग सुख समृद्धि प्रदान करने वाला है।

शुक्र—मीन लग्नस्थ शुक्र पराक्रमेश और अष्टमेश होता हुआ अकारक ग्रह बनना चाहिए, क्योंकि उसे अष्टमत्व दोष रहता है। किन्तु लग्नस्थ रहने के कारण अष्टमत्व दोष का शमन हो जाता है। विशेष कर मीन शुक्र की उच्च राशि है, इसलिए जातक के स्वास्थ्य को ठीक रखने और दीर्घ जीवन प्रदान करने में सहायक होगी।

शनि—मीन लग्न की जन्म कुण्डली में शनि की स्थिति लाभेश और व्ययेश के रूप में होकर उसे अकारकत्व प्रदान करती है। इसके कारण जातक में द्वेष बुद्धि उत्पन्न होती है और वह स्वजनों से ही वैर करने लगता है।

राहु और केतु—मीन लग्नस्थ राहु जातक के स्वास्थ्य को प्रभावित रखता हुआ उसे रोगी बनाता है। किन्तु केतु मीन लग्नस्थ होने के कारण स्वराशिस्थ होता है, इसलिए जातक को सम्पन्न, सुखी तथा दयालु प्रकृति का एवं परोपकारी बनाता है।

योग कारक स्थितियाँ :-

मीन लग्न की जन्म कुण्डली में सूर्य की स्थिति द्वितीय भाव में हो तो जातक की ननसाल सम्पन्न सुखी एवं प्रतिष्ठित होती है। मामा का सम्मान सर्वत्र रहता है।

यदि मीन लग्न की कुण्डली में चन्द्रमा और शनि की स्थिति लग्न भाव में हो तथा शुक्र षष्ठ भाव में और मंगल एकादश भाव में हो तो शुभ योग समझिये। इसके प्रभाव से शुक्र की दशा में जातक का अत्यन्त भाग्योदय होकर अपार धन प्राप्त होता है।

यदि मीन लग्न में बृहस्पति, नवम भाव में मंगल और द्वादश भाव में शनि की स्थिति हो तो यह योग जातक को धनवान, यशवान और प्रतिष्ठित बनाता है।

यदि मीन लग्न की कुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में हो तो धन हानि का सूचक है।

यदि मीन लग्न में शुक्र लग्नस्थ हो तो यह योग स्वास्थ्य वर्द्धक और दीर्घजीवी बनाने वाला है।

यदि मीन लग्न की कुण्डली के दूसरे भाव में बुध हो तो जातक स्त्री के समक्ष दबा रहेगा।

यदि बुध की स्थिति मीनस्थ लग्न भाव में हो तो पितृसुख की प्राप्ति नहीं हो हो पाती।

यदि बुध सप्तम भाव में हो जातक का विवाह बाल्यावस्था में ही हो जाता है।

यदि बुध अष्टम भाव में है तो अशुभ समझिये। थोड़ी ही अवस्था में मारक बन जाता है।

मीन लग्न के पंचम भाव में मंगल की स्थिति जातक की सम्पन्नता को व्यक्त करती है, किन्तु उसके धन को नष्ट होना उसी की पत्नी तथा सालों के द्वारा होना संभावित है।

यदि मीन लग्न की कुण्डली में शनि द्वादश भाव में है तो धन-मान की प्राप्ति में सहायक होगा।

यदि मीन लग्न की कुण्डली में चन्द्रमा, मंगल और बुध तीनों एक साथ ग्यारहवें भाव में बैठे हों तो यह लक्षण स्थायी वाहन-सुख की प्राप्ति का होगा।

यदि मीन लग्न की कुण्डली के द्वितीय भाव में शनि की स्थिति हो तो जातक की कमाई का धन उसके छोटे भाई-बहिन उड़ा देते हैं।

यदि मीन लग्न की कुण्डली के अष्टम भाव में शुक्र हो तो यह दीर्घ जीवन का प्रतीक होगा।

यदि मीन लग्न की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय भाव में और मंगल पंचम भाव में हो तो मंगल की दशा श्रेष्ठ धन देने वाली होती तथा सुखी बनाती है।

— —

फलित के विभिन्न योग

स्वास्थ्य आरोग्यता

इसका अध्ययन प्रायः लग्न भाव या प्रथम भाव से किया जाता है। लग्न भाव का कारण ग्रह सूर्य, लग्न भाव और लग्नेश यदि बली एवं शुभ स्थिति में (शुभ युक्त, शुभ इष्ट हों तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा बना रहता और दीर्घ आयु की प्राप्ति होती है।

किन्तु शुभ राशि तथा शुभ ग्रह की स्थिति होते हुए भी यदि अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगी। ऐसा जातक अल्प आयु भी हो सकता है।

लग्नेश का केन्द्र या त्रिकोण में होना शुभ माना जाता है, किन्तु त्रिक में होना ठीक नहीं समझा जाता। यदि लग्न भाव का कारक ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो, किन्तु त्रिक में न हो तो यह स्वास्थ्य के विषय में बहुत हितकर योग रहेगा।

लग्नेश तथा लग्न भाव के कारक ग्रह का क्षीण बल होना विपरीत फल दिखाता है।

व्यापार, उद्योग

लग्नेश की स्थिति जिस राशि में होगी उस राशि के स्वामी ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं का क्रय-विक्रय अथवा निर्माणदि करता है तो जातक को उस व्यापार, उद्योग में आशाप्रद सफलता प्राप्त होती है। सामान्यतः वस्त्र-व्यापार सूर्य से सम्बन्धित, पेय पदार्थ, काँच आदि की वस्तुयें चन्द्रमा से, ओषधि, रंग, वनस्पति, खनिज तेल आदि मंगल से, तथा ऊन, दूध, दही, घृत मिठाई, नमकीन आदि बुध से सम्बन्धित है।

आयात्-निर्यात् दलाली, बुद्धि सम्बन्धी कार्य, आढ़त आदि के व्यापार, का सम्बन्ध वृहस्पति से, सजावट की वस्तुओं, फोटोग्राफी, संगीत, सिनेमा, क्लर्की आदि का सम्बन्ध शुक्र से तथा मशीनरी का कार्य, बीमा एजेण्टी, ठेकेदारी आदि का सम्बन्ध शनि से होता है। इस विषय में विस्तृत जानकारी पीछे दी जा चुकी है।

लग्न भाव में जो शुभ ग्रह बैठा हो या जो शुभ ग्रह लग्न भाव को देखता हो उससे सम्बन्धित व्यापार भी लाभदायक रहता है।

आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति का अध्ययन दूसरे भाव से किया जाता है। दूसरे भाव में बलवान शुभ ग्रह हों और वे शुभ युक्त तथा शुभ इष्ट हों तो एवं द्वितोयेश केन्द्रस्थ, त्रिकोणस्थ हो तो धन-सम्पत्ति की सम्पन्नता रहती है।

दूसरे भाव का कारक ग्रह वृहस्पति तथा स्वामी सूर्य है। यदि दूसरा भाव, उसका कारक गुरु और स्वामी सूर्य तीनों ही बलवान हों

तो यह योग जातक की आर्थिक स्थिति को अत्यन्त सुदृढ़ बना देता है। इस प्रकार के योग किसी प्रकार के आर्थिक कष्ट में फसने नहीं देते।

पारिवारिक सुख

यह भी द्वितीय भाव से ही सम्बन्धित विषय है। यदि दूसरे भाव में सूर्य की शुभ राशि हो, वृहस्पति भी स्थिर हो तथा द्वितीय भाव का स्वामी सूर्य उच्चस्थ हुआ केन्द्र में हो, साथ ही उसे मंगल अष्टम दृष्टि से देखता हो तो यह योग वहुत शुभ होगा। इसके प्रभाव से परिवार में वहुत सुख शान्ति बनी रहेगी और आर्थिक स्थिति भी वहुत अच्छी होगी।

विदेश यात्रा

विदेश यात्रा आदि का अध्ययन आधुनिक काल में तीसरे भाव से करते हैं, जबकि पुरा काल में नवें भाव से किया जाता था। तीसरे भाव का कारक ग्रह मंगल है, इसलिए मंगल का वलवान होना वहुत आवश्यक है। जब तीसरा भाव, उसका कारक ग्रह और तृतीयेश वृहस्पति तीनों ही प्रवल हों तब विदेश यात्रा का अच्छा अवसर आयेगा। अथवा तीसरे भाव को मंगल देखता हो तथा लग्नेश गुरु और मंगल की युति होकर मंगल लग्न भाव से सम्पर्क रख रहा हो एवं नवम भाव की स्थिति भी अधिक वलवान हो या नवमेश प्रवल हो तो विदेश यात्रा का श्रेष्ठ योग समझिये।

भ्रातृ-सुख

भाई-वहिन सम्बन्धी सुख का विचार भी तीसरे भाव से ही करते हैं। तीसरे भाव में धनु या मीन राशि का होना, वृहस्पति का तीसरे भाव को नवम दृष्टि से देखना, वृहस्पति का केन्द्र में उच्चस्थ होना तथा मंगल षष्ठ भाव में स्थित होना भ्रातृ-सुख का प्रवल योग होगा।

घर, भूमि, वाहन-सुख

जमीन, जायदाद, कृषि भूमि एवं वाहनादि से सम्बन्धित सुख का विचार चतुर्थ भाव से किया जाता है। चतुर्थ भाव में शुभ राशि का होना, चतुर्थेश का उच्चस्थ अथवा केन्द्र या त्रिकोण में होना तथा चन्द्रमा का और लग्न भाव का भी प्रबल होना घर, भूमि तथा खेत की प्राप्ति के लिए सुन्दर योग बनायेगा।

वाहन का अधिपति शुक्र है, इसलिए उक्त योग के साथ शुक्र भी प्रबल स्थिति में हो तो वाहन-प्राप्ति का भी अच्छा सुयोग रहेगा। यदि वृषभ या तुला राशि का चौथा भाव हो तथा उच्चस्थ हुआ चतुर्थेश त्रिकोणस्थ हो, चन्द्रमा स्वगृही रूप से लग्नस्थ हो तथा शुक्र भी उच्चस्थ रूप से त्रिकोण में स्थित हो तो यह योग जातक को जमीन, जायदाद कोठी, फार्म कार आदि से सम्पन्न बनाता है।

मातृ-सुख

माता से सम्बन्धित सुख का अध्ययन भी चौथे भाव से ही करते हैं। माता का कारक ग्रह चन्द्रमा है तथा वही चौथे भाव का कारक ग्रह भी है, वह यदि उच्चस्थ या त्रिकोणस्थ है और शनि के द्वारा दृष्ट नहीं है, चतुर्थ भाव भी शुभ युक्त या शुभ दृष्ट है तो जातक की माता दीर्घ जीवन प्राप्त करेगी और पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेगी। इस प्रकार जातक को माता का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

स्थानान्तरण

स्थानान्तरण के विषय में चौथा भाव तो देखते ही हैं, अन्य भाव भी देखने होते हैं, क्रमशः दशम, प्रथम, सप्तम और चतुर्थ चारों भाव अवलोकनीय हैं। चर राशियाँ मेष, कर्क, तुला और मकर का उक्त चारों केन्द्र में से किसी का भी होना नौकरी में बार-बार स्थानान्तरण का योग बनाता है।

किन्तु किसी भी स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक या कुम्भ) का उक्त केन्द्र भावों में रहना स्थायी रूप से वर्षों तक एक ही स्थान पर जातक को रखता है। उसे स्थानान्तरण की स्थिति का सामना प्रायः नहीं करना होता। यदि मिथुन, कन्या, धनु या मीन संज्ञक किसी भी द्विस्वभाव राशि की स्थिति उक्त भावों में हो तो पदोन्नति के कारण स्वयं ही स्थानान्तरण को स्वीकार कर लेता है।

शिक्षा

शिक्षा का विचार पंचम भाव से किया जाता है। शिक्षा का कारक ग्रह वृहस्पति है, इसलिए उसकी बलवान स्थिति बहुत आवश्यक है। यदि पंचम भाव शुभ ग्रह युक्त या शुभ ग्रह दृष्ट हो वृहस्पति अच्छी स्थिति में हो तथा पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो पूर्ण शिक्षा प्राप्ति का योग बनेगा।

सन्तान

सन्तान के विषय में भी पंचम भाव ही विचारणीय है। यदि पंचम भाव में पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल गुरु) प्रबल स्थिति में अर्थात् शुभ युक्त या शुभ दृष्ट हों तो पुत्र की प्राप्ति का योग बनेगा। यदि स्त्री ग्रह (चन्द्रमा, शुक्र) प्रबल हो तो कन्या का योग समझिये। नपुंसक ग्रह, पुरुष नपुंसक बुध या स्त्री नपुंसक शनि प्रबल हों तो क्रमश पुरुष नपुंसक या स्त्री नपुंसक सन्तान उत्पन्न होती है।

सन्तान का कारक ग्रह वृहस्पति है, यदि पंचम भाव में धनु या मीन राशि हो तथा पंचमेश और वृहस्पति केन्द्रस्थ हो और पंचम भाव पर मंगल की अष्टम दृष्टि हो तो पुत्र योग बनेगा।

आकस्मिक धन प्राप्ति

आकस्मिक धन प्राप्ति का योग बनाने में भी पंचम भाव महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही द्वितीय भाव और एकादश भाव (आय भाव) को

भी देखना आवश्यक होता है। इन तीनों भावों का शुभ ग्रह युक्त, शुभ ग्रह दृष्ट तथा तीनों भावेशों की प्रबल स्थिति आकस्मिक धन की (लाटरी आदि से) प्राप्ति का योग बनाती है।

यदि पंचमेश मंगल द्वितीय भाव में तथा गुरु पंचम भाव में, द्वितीयेश सूर्य केन्द्र भाव में, एकादशेश शुक्र भाग्य भाव में हो तथा एकादश भाव गुरु द्वारा दृष्ट हो तो किसी सम्बन्धी अथवा लाटरी या राज्य-पुरस्कार से धन की प्राप्ति सम्भव है।

मुकदमा

मुकदमा, झगड़ा, झंझट आदि के विषय में षष्ठ भाव का अध्ययन करना चाहिए। यदि षष्ठ भाव शुभ युक्त और शुभ दृष्ट हो, षष्ठेश भी सबल हो तथा षष्ठ भाव या लग्न भाव से मंगल का सम्बन्ध हो तो मुकदमे आदि में जीत होती है और शत्रु हारते हैं। किन्तु षष्ठ भाव षष्ठेश अथवा लग्न भाव से शनि का सम्बन्ध हो तो यह स्थिति मुकदमे में पराजय तथा शत्रुओं का प्रबल होना व्यक्त करती है।

रोग

रोग सम्बन्धी विचार करने के लिए भी षष्ठ भाव का अवलोकन करते हैं। इसके साथ ही प्रथम भाव को भी देखते हैं, क्योंकि उसका सम्बन्ध स्वास्थ्य से होता है।

यदि प्रथम भाव शुभ युक्तऔर शुभ दृष्ट हो तो तथा षष्ठ भाव भी इसी प्रकार बलवान हो तो जातक स्वस्थ और निरोग रहता है। इसके विपरीत प्रथम और षष्ठ भावों से शनि प्रभृति अशुभ ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जातक अस्वस्थ तथा रोगी होता है।

दाम्पत्य जीवन

दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा? इसका विचार सप्तम भाव से किया जाता है। यदि सप्तम भाव शुभ युक्त, शुभ दृष्ट हो तथा सप्तमेश केन्द्र या

त्रिकोण में हो, साथ ही सप्तम भाव का कारक ग्रह शुक्र भी प्रवल हो तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा।

इसके विपरीता सप्तम भाव का अशुभ युक्त या अशुभ दृष्ट होना अथवा सप्तम भाव, सप्तमेश तथा कारक शुक्र का शनि से सम्बन्ध पत्नी की अस्वस्थता व्यक्त करता है तथा वैवाहिक जीवन को दुःख पूर्ण बनाता है।

आयु-विचार

आयु का विचार करने के लिए अष्टम भाव का अवलोकन करते है। अष्टम भाव की सबलता जातक का दीर्घजीवी होना व्यक्त करती है। यदि शुभ राशि की लग्न हो या वह शुभ ग्रह युक्त और शु भग्रह दृष्ट हो तथा लग्नेश केन्द्र या त्रिकोस्थ हों एवं अष्टमेश प्रवल एवं शुभ हो और शनि उच्चस्थ या केन्द्र एवं त्रिकोणस्थ हो तो जातक दीर्घजीवी होगा। किन्तु इसके विपरीत अर्थात लग्न भाव और अष्टम भाव की निर्वलता को अल्पजीवी बनाता है।

धन-सम्पत्ति सम्बन्धी विचार

धन-सम्पत्ति के विषय में नवम भाव का अवलोकन किया जाता है। क्योंकि नवम भाव काग्य भाव भी और भाग्य का धन-सम्पत्ति से भी सीधा सम्वन्ध है। यदि नव भाव शुभ ग्रह युक्त व शुभ ग्रह दृष्ट हो तथा नवमेश केन्द्र-त्रिकोण में अथवा धन-भाव में हो या उच्चस्थ हो तो धन-सम्पत्ति की सम्पन्नता रहेगी।

राज-योग सम्बन्धी विचार

राज-योग अथवा राज्य में उच्च पद की प्राप्ति के उद्देश्य से दशम भाव का अवलोकन आवश्यक होता है, क्योंकि दशम भाव ही कर्म भाव है। राज्य-सम्मान की प्राप्ति भी विशेष रूप से इस भाव से देखना फलित की अधिक जानकारी प्राप्त करायेगा।

यदि दशम भाव शुभ राशि का, शुभ युक्त और शुभ दृष्ट हो तथा दशमेश भी उच्चस्थ रूप में केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो, साथ ही दशम भाव का कारक ग्रह सूर्य तथा लग्न भाव भी अच्छी स्थिति में शुभ हो तो इसे राज-पद प्राप्ति का श्रेष्ठ योग समझा जायगा।

यदि दशम भाव या नवम भाव में दशमेश-नवमेश की युति हो तो भी प्रबल राजयोग बनेगा। केन्द्र या त्रिकोण में स्थित दशमेश-नवमेश की युति भी ऐसा ही योग बनाती है।

पिता सम्बन्धी सुख-दुःख

पिता-सम्बन्धी सुख दुख का विचार करने के लिए भी दशम भाव देखा जाता है। यदि दशम भाव शुभ ग्रह युक्त, शुभ-दृष्ट तथा दशमेश केन्द्र-त्रिकोण हो तो पिता का सुख मिलेगा। उक्त योग के साथ पिता का कारक ग्रह सूर्य भी सबल तथा श्रेष्ठ स्थिति में हो तो पिता का अच्छा सुख मिलेगा।

किन्तु सूर्य और शनि की युति हो तो पिता के साथ मन मुटाव रहेगा। यदि दशम भाव, दषमेश और सूर्य से शनि का सम्बन्ध हो तो यह योग पिता का अल्प सुख प्राप्त कराता है। अति निर्बल योग पितृ-सुख से वंचित कराता है।

आय या धनागम के स्रोत

आय अथवा जीविका सम्बन्धी स्रोतों के विस्तार या संकोच के सम्बन्ध में ग्यारहवाँ भाव अवलोकनीय होता है। यदि ग्यारहवां भाव शुभ राशि का हो, शुभ गृह युक्त या शुभ ग्रह दृष्ट हो तो अच्छी आय रहती है। एकादश भाव के साथ लग्न भाव भी विचारणीय होता है। क्योंकि लग्न भाव भी आय के स्रोतों के विस्तार में सहयोग देता है। यदि लग्न भाव हर गुरु की पंचम दृष्टि हो, लग्नेश केन्द्रस्थ रहकर लग्न भाव को देखता हो, उच्च का बुध ग्यारहवें भाव में हो तथा उच्च का गृथु त्रिकोण में हो तो जातक को तगड़ी आय होनी चाहिए।

इसके विपरीत, यदि ग्यारहवें भाव, एकादशेश और लग्न भाव से शनि का सम्बध हो तो आय के साधन दुर्बल हो जाते और आर्थिक चिन्ता उत्पन्न करते हैं।

व्यय-विचार

व्यय के विषय में बारहवें भाव का अवलोकन करते हैं। यदि द्वादश भाव, द्वादशेश और लग्न भाव से शनि का सम्पर्क हो तो यह योग अपव्यय कराने वाला है। इससे धन हानि का होना व्यक्त होता है तथा जातक को ऋण लेने के जिए विवश होना पड़ सकता है। इस प्रकार के योग आय कम और व्यय अधिक का आभास कराते हैं।

किन्तु द्वादश भाव का शुभ होना अर्थात् उसमें शुभ ग्रहों की स्थिति हो तो उसे शुभ ग्रह देखते हों तथा प्रथम भाव भी शुभ युक्त या शुभ दृष्टि हो तो जातक अपव्यय एवं हानि से बना रहता तथा ऋण से भी मुक्त होता है। इस प्रकार योग व्यय कम और आय अधिक होना व्यक्त करते हुए शुभ होते हैं।

——

खोजपूर्ण ज्योतिष साहित्य

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली-२४३००३ (उ० प्र०)